सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य गुरुदेव आचार्य प्रवर श्री पद्मसागरजी म.सा.

वर्ष : 12 • अंक : 1 • 5 अप्रैल : 2015 • मूल्य : 20रु.

तेनम्पट्ट

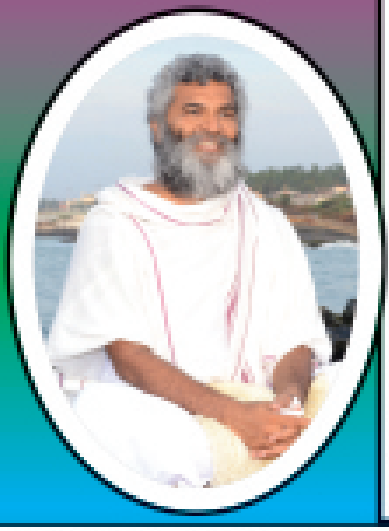

प्रतिष्ठा विशेषांक

सप्तम् पुण्यतिथि पर हार्दिक श्रद्धांजलि

21.9.1946
जन्म :

9.5.2008
स्वर्गवास :

श्री भंवरलालजी संकलेचा

सुपुत्र श्री धरमचन्दजी संकलेचा (रासोणी) मरूधर में पादरू

क्यूं आती हैं स्मृति तुम्हारी
जब मन होता है कुछ भावुक
लगता है बस तुम मिल जाओ
और सुनाऊं तुमको सब कुछ
पापा तुम याद आते हो।।

साथ बैठा कर दक्ष कराया
पढ़ा लिखा कर ज्ञान बढ़ाया था
आपने ही अपनी धड़कनों से लगा
हमारी धड़कनों को लोरियां सुनाई थी।

पापा आपके बिना तो मैं
सागर हो कर भी मरुस्थल हूँ।
सबके बीच स्वयं को भुलाकर भी
आपको नहीं भुला पाता पापा !

पापा तो सदा पापा ही रहते हैं ना
फिर आप 'पापा थे' कैसे हो गए?
हम आज भी आपके पुत्र है
लौट आओ न पापा !

जब जब आपकी याद आये
हर कोने मोरे पापा पुकारें
नयन निचोड़ूं के मन को भींचूं
यादों की आग जलाये।

पैरों पर मेरे पैर संभाले
दुनिया में चलना सिखाया था
सीने से लगा अपने पुत्रों को
हर चोट पे मरहम लगाया था।

सदाबहार के फूल सुगंध से
पापा आप अंतरस्थल में समाये हो
पापा पापा मन ये पुकारे
जहाँ भी छुपे हो आ जाओ ना।

श्रद्धानवत :

धर्मपत्नी मोहिनी देवी

भ्राता : जुगराज, नेमीचन्द, मोतीलाल, प्रवीणकुमार

बहन-बहनोई : नाजुबाई-मोहनलालजी खागरेचा,
कमलाबाई-भंवरलालजी तातेड़

पुत्र-पुत्रवधु : ललितकुमार-ललितादेवी,
राजकुमार-संगीतादेवी, कैलाशकुमार, गौतमचन्द-शिल्पादेवी

पौत्री-जंवाई : निकिताबाई-नवीनकुमारजी बाफना

पौत्र-पौत्री : मनीष, विशाल, रुचिका, काजोल, ईशीता

परदोहिता : प्रीत बाफना

फर्म :

नवनिधि इन्टरप्राईजेज
384, मिन्ट स्ट्रीट, ऑफिस नं. 29, दूसरा माला,
चैन्नई - 600079 फोन : 044-25291795

रूपम् कलेक्शन्स
15-8-485, गिलखाना, ओमश्री साई कॉम्पलेक्स,
हैदराबाद फोन : 040-24612258

।। श्री धर्मनाथाय नमः ।।

।। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-चन्द्र-कुशल-चन्द्र-गुरुभ्यो नमः ।।

धर्म नगरी चैन्नई महानगर के समदांगी बाजार मध्ये प. पू. विचक्षणश्रीजी म.सा. द्वारा संस्थापित

श्री जिनदत्तसूरि जैन मंडल द्वारा दादा श्री धर्मनाथ जिनालय का संपूर्ण जीर्णोद्धार नीचे मूल गंभारे में

श्री धर्मनाथ भगवान, गुरु गौतमस्वामी, दादा गुरुदेव की

अंजनशलाका प्रतिष्ठा

एवं

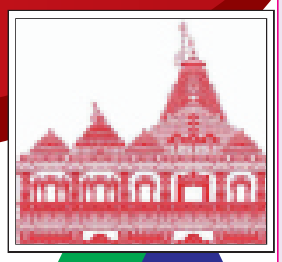

मुमुक्षु संयम सेठिया, मुमुक्षु श्रीमती जयादेवी सेठिया

की दीक्षा प्रसंगे

नवाह्निका महा महोत्सव

सकल श्रीसंघ को सादर आमंत्रण

आज्ञा एवं आशीर्वाद प्रदाता	प्रतिष्ठा पावन निश्रा	दिव्याशीष प्रदाता
परम पूज्य आचार्य	प. पू. उपाध्याय प्रवर	प. पू. प्रज्ञा पुरुष आचार्य
श्री कैलाशसागरसूरीश्वरजी म. सा.	श्री मणिप्रभसागरजी म. सा.	श्री कांतिसागरसूरीश्वरजी म. सा.
	एवं बिराजित सर्व साधु-साध्वी भगवंत	प. पू. प्र. श्री विचक्षणश्रीजी म. सा.

महोत्सव प्रारंभ 19.04.2015

महोत्सव सम्पन्न 27.04.2015

भव्य वरघोड़ा 24.04.2015

अद्भुत दीक्षा समारोह 25.04.2015

अभिनव प्रतिष्ठा दिवस 26.04.2015

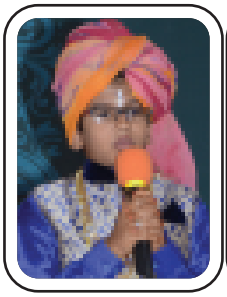

मुमुक्षु संयम सेठिया

मुमुक्षु श्रीमती जयादेवी सेठिया

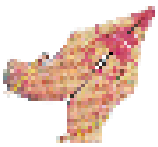

निमंत्रक

प्रतिष्ठा महामहोत्सव समिति - श्री जिनदत्तसूरि जैन मंडल

संपर्क :- संयोजक : 9444454062, मानद मंत्री : 9380832805

भगवान महावीर

जो उत्तमेहिं पहओ, मग्गो सो दुग्गमो न सेसाणं।

-बृहत्कल्पभाष्य 249

जो मार्ग महापुरुषों द्वारा चलकर प्रहत (सरल) बना दिया गया है, वह अन्य सामान्य जनों के लिये दुर्गम नहीं रहता।

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	05
2. गुरुदेव की कहानियाँ	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	07
3. प्रीत की रीत	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	08
4. कलयुग के कल्पवृक्ष: पुरुषादानीय पार्श्वनाथ	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	11
5. प्रभु पार्श्वनाथ की पावन गाथा	साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म.सा.	15
6. तेनम्पट्ट प्रतिष्ठा विशेष आलेख		17
7. विहार डायरी	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	36
8. जैन जगत में नवपद की महिमा अपरम्पार	जहाज मन्दिर परिवार	39
9. श्रमण-चिंतन	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	41
10. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	44
11. मेरे बारे में मेरी अनुभूति	साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.	46
12. छाजेड़ गौत्र का गौरवशाली इतिहास	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	48
13. शरदचंदजी कांकरिया का स्वर्गवास		50
14. अकल्पित दिवायी	साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.	52
15. तत्त्वावबोध	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	56
16. पंचांग	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	57
17. समाचार दर्शन	संकलन	58-66
19. जहाज मन्दिर वर्ग पहेली-108	मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.	67
18. जहाज मंदिर पहेली 106 का उत्तर		69
20. जटाशंकर	उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.	70

तिरुवन्नामलै में वीर तेरस मनाई गई

तमिलनाडु के सुप्रसिद्ध शैवधर्म के तीर्थ तिरुवन्नामलै में महावीर प्रभु का जन्म कल्याणक त. 2 अप्रेल को पूज्य गुरुदेव उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पू. मू. श्री विरक्तप्रभसागरजी म. एवं पू. साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म., विश्वज्योतिश्रीजी म., जिनज्योतिश्रीजी म. की पावन निश्रा में उल्लास व आनंद के साथ मनाया गया। प्रवचन सभा से पूर्व वरघोड़ा निकाला गया। पू. उपाध्यायश्री, पू. विरक्तप्रभसागरजी म., पू. विश्वज्योतिश्रीजी म., पू. जिनज्योतिश्रीजी म आदि ने परमात्मा महावीर के उपदेशों को अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा दी।

प्रवचन के बाद स्वामिवात्सल्य का अयोजन किया गया जिसका लाभ ब्यावर निवासी श्री शांतिलालजी सुशीलकुमारजी कांकरिया परिवार ने लिया। यह ज्ञातव्य है कि सन् 2010 के पूज्यश्री के ब्यावर चातुर्मास के दौरान संपूर्ण साधर्मिक भक्ति का लाभ आपने ही लिया था।

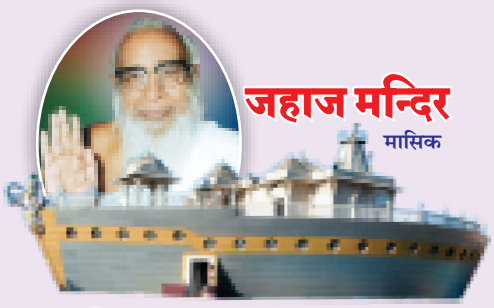

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

पू. गुरुदेव उपाध्याय प्रवर

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

वर्ष : 12 अंक : 1 5 अप्रेल 2015 मूल्य 20 रू.

अध्यक्ष : संघवी जीतमल दांतेवाड़िया

महामंत्री : डॉ. यू.सी. जैन

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	: 21,000 रूपये
मानद् संरक्षक	: 11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	: 2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	: 2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	: 1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	: 500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	: 200 रूपये

विज्ञापन सहयोग

अंतिम कवर पृष्ठ	: 15,000 रूपये
द्वितीय कवर पृष्ठ	: 11,000 रूपये
तृतीय कवर पृष्ठ	: 9,000 रूपये
अन्दर पूरा पृष्ठ रंगीन	: 7,000 रूपये
रंगीन अन्दर आधा पृष्ठ	: 3,500 रूपये
सामान्य पूरा पृष्ठ	: 3,000 रूपये
सामान्य आधा पृष्ठ	: 1,500 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि

ICICI की किसी भी शाखा में

SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST

BANK - ICICI JALORE

ACCOUNT NO. 065301000256

IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मन्दिर

माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)

फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451

E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

www.jahajmandir.com

www.jahajmandir.org

नवप्रभात

उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

जीवन में प्रतिक्षण घटनाएं घटती रहती हैं। हमारे चारों ओर हमसे संबंधित... असंबंधित... तरह तरह की अच्छी बुरी घटनाओं का जाल प्रतिक्षण फैलता जाता है।

अपनी आंखें देखती हैं। कान सुनते हैं। मन सोचता है। दिमाग प्रतिक्रिया करता है।

घटना कैसी है, यह महत्वपूर्ण नहीं है।

उस घटना को हमने किस नज़रिये से देखा, यह महत्वपूर्ण है।

हमसे किसी न किसी रूप में जुड़ी घटना को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता।

देखना तो होगा ही... उस पर विचार भी होंगे ही...!

घटना तो घट गई। उसे हम किसी भी कीमत पर 'अघटित' नहीं कर सकते।

चिंतन यह करना है कि मैं उसे किस रूप में लेता हूँ।

मैं किसी भी घटना को सकारात्मक दृष्टि से भी देख सकता हूँ... नकारात्मक दृष्टि से भी!

मैं उस घटना पर राग द्वेष करके कर्म बंधन भी कर सकता हूँ...

और समता भाव में रह कर बंधन से दूर भी रह सकता हूँ।

यह सब हमारी अपनी सोच पर निर्भर है।

मुझे अपनी दृष्टि में 'स्वार्थ' पैदा करना जरूरी है।

स्वार्थ अर्थात् अपना हित! अपनी आत्मा का हित!

मेरी आत्मा का हित किसमें है, यह विश्लेषण करना चाहिये।

आत्म-हित जिसमें हो, वैसा चिंतन मुझे हर घटना पर करना चाहिये।

घटना भले निंदनीय हो, पर निंदा करने से घटना अभिनंदनीय नहीं हो जायेगी।

हाँ... आत्मा का अहित जरूर होगा।

अपने प्रति जागरूकता का प्रतिक्षण विकास करना है।

कन्याकुमारी प्रतिष्ठा की झलकियाँ

फार्म - 4 (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशक स्थान	-	माण्डवला, जिला जालोर (राज.)
2. प्रकाशन अवधि	-	मासिक
3. मुद्रक का नाम	-	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	-	नहीं
पता	-	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
4. प्रकाशक का नाम	-	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	-	नहीं
पता	-	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
5. सम्पादक का नाम	-	डॉ. यू. सी. जैन
(क्या भारत का नागरिक है?)	-	हाँ
(यदि विदेशी है तो मूल देश)	-	नहीं
पता	-	जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर
6. उनके नाम व पते जो समाचार पत्रें के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के 1% से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।		श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला, जिला-जालौर (राज.)

मैं डॉ. यू. सी. जैन, जहाज मंदिर, माण्डवला, जिला-जालोर (राज.) द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

डॉ. यू. सी. जैन

दिनांक : 05-04-2015

प्रकाशक के हस्ताक्षर

गुरूदेव की कहानियाँ

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.

मंत्री के निर्लिप्त भाव

चीन पर राजा क्वांग का शासन था। उन्होंने सुन शु याओ को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त किया था।

एक बार अपने चापलूसों की बातों में आकर राजा ने निर्दोष याओ को पद से निलम्बित कर दिया। कुछ अर्से बाद याओ का अभाव खटका और राजा ने पुन: उसे प्रधानमंत्री बना दिया।

चार साल के अन्तराल में तीन बार ऐसा हुआ। राजा के मन में विचार उठा। जब जब उसने याओ को बर्खास्त या बहाल किया था, उस समय याओ का चेहरा निर्लिप्त था। कोई भाव नहीं था।

राजा ने एक रोज याओ को बुलाकर पूछा, 'जब मैंने तुम्हें पद से च्युत किया तब तुम नाराज नहीं हुए और जब मैंने वापिस पदासीन किया, तब तुम्हारे चेहरे पर प्रसन्नता के फूल नहीं खिले थे। क्या कारण है कि इन दोनों विपरीत परिस्थितियों में तुम शान्त निर्लिप्त रहे।'

प्रधानमंत्री सुन शु याओ ने गंभीर स्वर में कहा-'राजन्! मेरी निर्लिप्तता का कारण मेरा चिन्तन है। आपने जब हटाया तब मैंने सोचा; जिस स्थान पर मेरी आवश्यकता नहीं, वहाँ मैं रूककर क्यों बोझ बनूं?और जब वापिस स्थापित किया, तब मेरा विचार था, राष्ट्र को मेरी आवश्यकता है, तो मुझे मेरा कर्त्तव्य निभाना चाहिए।

साथ ही मेरे मस्तिष्क में और भी विचार आ रहे थे। मैंने पदच्युति व पदस्थापना को अपमान व सम्मान का कारण नहीं समझा। यह सम्मान अगर पद का है, तो मुझे क्या लेना-देना और यदि सम्मान मेरा है तो पद रहे या न रहे, क्या फर्क पड़ता है।

राजा क्वांग इस व्याख्या को अपने हृदय में उतारता जा रहा था।

पादरू में दादावाडी की वर्षगांठ

बाडमेर जिले के पादरू नगर में श्री शीतलनाथ जिन मंदिर एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी की प्रतिष्ठा की 27वीं वर्षगांठ ता. 28 मई 2015 को मनाई जायेगी।

28 वर्ष पूर्व इस जिनमंदिर दादावाडी की अंजनशलाका प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाधयाय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न हुई थी।

ता. 27 मई को अष्टप्रकारी पूजा के वार्षिक चढावे बोले जायेंगे।

ता. 28 मई को सतरह भेदी पूजा के साथ ध्वजा चढाई जायेगी। जिनमंदिर की ध्वजा लाभार्थी शा. रूपचंदजी घेवरचंदजी वंसराजजी संकलेचा परिवार, दादावाडी की ध्वजा शा. सांवलचंदजी हरकचंदजी संकलेचा परिवार द्वारा चढाई जायेगी। दोपहर में दादा गुरुदेव की पूजा पढाई जायेगी। आप अपने इष्ट मित्रों सहित अवश्य पधारें।

प्रेषक- दादावाडी समिति अध्यक्ष कैलाश बी. संकलेचा

प्रीत की रीत

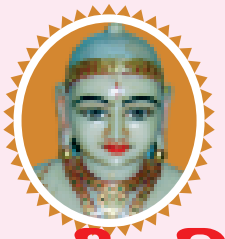

साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

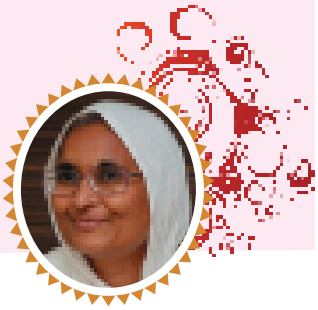

श्रीमद् देवचन्द्र रचित

श्री सुविधिनाथ स्तवन

दानादिक निज भाव, हता जे परवशा हो लाल।
ते निज सन्मुख भाव, ग्रही लही तुज दशा हो लाल।
प्रभु नो अद्‌भुत योग, सरूपतणी रसा हो लाल।
वासे भासे तास, जास गुण तुज जिसा हो लाल॥ ३॥

दानादिक निज भाव जो पुद्‌गलों के वशीभूत होकर पराधीन हो रहे थे, वे सारे आत्मोन्मुखी हो गये हैं। इसमें आप ही प्रभो! निमित्त बने हैं। आपके ज्ञान, दर्शन और चारित्र का योग अद्‌भुत है, यह ज्ञान भी उसी को होता है जिसमें इस प्रकार के अद्‌भुत गुण प्रकट हो गये हों।

श्रीमद्‌जी प्रस्तुत पद्य में प्रभु के सान्निध्य का चमत्कारी विश्लेषण प्रस्तुत कर रहे हैं। प्रभु के सान्निध्य में उपस्थित होने से पूर्व जीव की क्या दशा थी ? और अब प्रभु की सान्निध्यता को पाने के बाद कितना परिवर्तन हुआ है। दानादिक आत्म धर्म होते हुए भी अपना भान भूलकर पुद्‌गलों की आसक्ति से पराधीनता की बेड़ियों में जकड़े थे, परन्तु आपका दर्शन करते ही आत्मोन्मुखी बन गये हैं। वीतरागी दशा का यह अद्‌भुत चमत्कार! निश्चित ही परमात्मा का दर्शन, उनका वंदन अद्‌भुत शक्ति का स्त्रोत है।

आवश्यकता है कि हम परमात्मा का दर्शन तर्क और गणितीय आधार पर करने की अपेक्षा श्रद्धा और आस्था के साथ एकाग्र होकर करें। सत्य वैसे भी तर्क के आधार पर प्रकट नहीं होता। उसके लिये तो चाहिये दृढ़विश्वास! परमात्मा की संपदा भी अलौकिक है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र का जैसा योग उन्हें उपलब्ध हुआ है, वह अन्यत्र असंभव है। इसकी प्रतीति भी सामान्यजन नहीं कर सकता। इसे देख भी वही सकता है, जिसके भीतर में इसी प्रकार के गुण उत्पन्न हो गये हों। सामान्यजन को तो पदार्थों में ही सुख नजर आता है क्योंकि वे तत्काल परिणाम देते हैं। परंतु प्रभु के ज्ञान, दर्शन और चारित्र उन्हें ही आकर्षित करते हैं, जिन्होंने आँखें खोलकर संसार को देखने की अपेक्षा आँखें बंदकर दृष्टा को देखने का प्रयत्न प्रारंभ कर दिया है।

मोहादिक नी घूमी, अनादिनी उतरे हो लाल।
अमल अखंड अलिप्त, स्वभाव ज सांभरे हो लाल।
तत्व रमण शुचि ध्यान, भणी जे आदरे हो लाल।
ते समता रस धाम, स्वामी मुद्रा वरे हो लाल॥ ४॥

हे प्रभु! आपके दर्शन मात्र से अनादिकाल से आत्मा से चिपके मोहादि के परमाणु जब दूर हो जाते हैं, तब राग-द्वेष रहित अखंड अलिप्त स्वभावदशा का वास्तविक आनंद अनुभव में आता है। जो जीव ज्ञानादि अनंत गुणों में रमण करता है तथा निर्मल ध्यान द्वारा प्रभुता को प्राप्त चेतना का आदर करता है, वह समता रस के धाम परमात्मा की मुद्रा को प्राप्त कर लेता है।

श्रीमद्‌जी प्रस्तुत पद्य में प्रभु के दर्शन का परिणाम स्पष्ट करते हैं। आँखों ने आज तक जो मिला, उसे देखने का ही काम किया; पर ऐसा कभी नहीं देखा जिसे देखने के बाद देखने की लालसा ही न रहे।

हम विचार करना जानते हैं, कल्पना करना, मनन करना आदि सब कुछ जानते हैं परंतु देखना नहीं जानते। कुछ देखना ऐसा है जो आत्म पर आये कर्मों के आवरण को हटाने का काम करता है। पदार्थों से अगर हमारी आसक्ति है तो उस ओर जैसे ही हमारी आँखें देखेंगी, तुरंत आँखों के द्वारा वह

पदार्थ हमारी चेतना के साथ चिपक जायेगा। इस प्रकार का दर्शन आत्मा को और अधिक कर्मों के धुएं से मलीन बनाता है परंतु प्रभु का दर्शन उनकी वीतराग मुद्रा, उनकी स्वभाव दशा हमारी चेतना में प्रविष्ट होकर हमें भी राग द्वेष रहित समाधिमय जीवन जीने की प्रेरणा देता है। इसलिये प्रभु को देखना ही वास्तविक देखना है।

चेतना ने अनादिकाल से संस्कारवश माना है कि आनंद अंदर में नहीं, बाहर है। यह ऐसी ही बात है जैसे ग्रामीण व्यक्ति को एकमात्र गुडराब ही स्वादिष्ट लगती है। उसने कभी देखा ही नहीं, चखा ही नहीं कि संसार में गुडराब के अतिरिक्त भी कोई स्वाद होता है। तो वह कैसे मानेगा कि स्वाद अन्यत्र भी है। जिस जीव ने पदार्थ के अतिरिक्त ज्ञानमय, दर्शनमय, चारित्रमय आत्मा का अनुभव किया ही न हो, उसे क्या पता कि इसमें भी आनंद है। स्वभाव दशा को पाने के लिये अंतर में वैराग्य को जगाना होगा। वैराग्य को जगाये बिना, पदार्थ के प्रति आकर्षण समाप्त किये बिना ज्ञानमय, दर्शनमय चेतना में रमणता नहीं हो सकती और जब तक रमणता स्वयं की चेतना में प्रारंभ नहीं होगी, परमात्म मुद्रा उपलब्ध नहीं होगी।

वैराग्य का अभ्यास आवश्यक है। वैराग्य से समता स्वत: उतर आती है। समता का प्रवेश होते ही प्रसन्नता का अखंड साम्राज्य स्वत: छा जाता है। और तब हर पल ही परमात्मा की मुद्रा रोम-रोम में बस जाती है। मोह, ममत्व की कालिमा स्वत: दूर हो जाती है। अमृत का संयोग मिलते ही ज़हर दूर भाग जाता है। जीवन में रूपान्तरण हो जाता है। मोह की मलीनता चैतन्य के हर निर्णय, उसकी हर क्रिया को मलीन कर देती है। जबकि मलीनता हटते ही हृदय की पवित्रता उसकी प्रत्येक क्रिया को शुद्ध बना देती है।

प्रभु छो त्रिभुवन नाथ, दास हुँ ताहरो हो लाल।
करूणानिधि अभिलाष, अछे मुझ ए खरो हो लाल।
आतम वस्तु स्वभाव, सदा मुझ सांभरो हो लाल।
भासन वासन एह, चरण ध्याने धरो हो लाल।।५।।

हे परम प्रभु! आप तीनों भुवन के स्वामी हैं। मैं आपका सेवक हूँ। आप करूणा के अवतार हैं। मेरी हार्दिक यह अभिलाषा है कि मेरे अपने आत्मस्वरूप का भान मुझे निरंतर होता रहे। मेरी समस्त क्रियायें, भासन, वासन, रमण और ध्यान आदि चेतना से संबंधित ही रहें।

श्रीमद्‌जी प्रभु के प्रति पूर्ण अभिन्न थे। हृदय की गहराइयों से अभिन्नता का जब आविर्भाव होता है तब शिष्टाचार की समस्त सीमाओं का उल्लंघन हो जाता है। प्रभु तीन लोक के स्वामी हैं परंतु उनके प्रति एक वचन का संबोधन उनकी असीम उफनती भावनाओं का प्रतीक है। श्रीमद्‌जी परमात्मा से इतना ही मांगते हैं कि अपनी स्वभाव दशा के प्रति मैं जागरूक रहूं। जो स्वभाव दशा के प्रति जागरूक हो जाता है, वह नये कर्मों का बंध करेगा ही नहीं। आते हुए कर्मों को रोकेगा और पुराना जमा मैल भी धीरे धीरे निकालता रहेगा।

अनादिकाल की प्रवृत्तियों द्वारा हमारी चेतना ने मैल जमाने का काम किया है। खूब गाढ़ा, परत-दर-परत जमा हो चुका है मैल! प्रतिदिन नियमित जागरूक रहें कि कहीं नया मैल और न आ जाय। कोई पूछे कि कब तक जागरूक रहें; तो समाधान होगा- तब तक जागरूक रहना है, जब तक शुद्धता की मंजिल उपलब्ध न हो जाय। जब तक अंधेरा है, दीया जलाना ही होगा। हम अपने जीवन में अनेक क्रियाएं करते हैं, पर थकते नहीं। जैसे भूख रोज लगती है, प्यास भी लगती है और हम भी भूख-प्यास का समाधान रोज करते हैं। वैसे ही दुष्प्रवृत्तियों द्वारा प्रतिदिन मैल जमता है पर जागरूक रहना है कि वह गाढ़ा होकर चिपक न जाय। जिस स्थान, महल का प्रतिदिन कचरा निकाला जाता है, उसमें कभी कचरा नहीं जमता। मन को भी पूर्ण जागरूकता के साथ प्रतिदिन साफ रखना है। वातावरण में आंधी तूफान आते हैं। क्या हमारे मन में ईर्ष्या, कामवासना, अहंकार के तूफान नहीं आते?बल्कि यों कहे कि बाहर के तूफानों से भी ज्यादा खतरनाक तूफान हैं वे। उन्हें प्रतिदिन साफ करते रहना है।

(क्रमश:)

श्री तेनम्पट्टु नगरे पार्श्व कुशल तीर्थ धाम मध्ये

2000 वर्ष प्राचीन श्री पार्श्वनाथ परमात्मा, दादा श्री जिनकुशलसूरि

एवं पद्मावती देवी की भव्य-भावना से परिपूर्ण

अंजनशलाका प्रतिष्ठा की हार्दिक शुभकामना

पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

भगवान श्री पार्श्वनाथ

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.

पावन निश्रा- पू. उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य

पूज्य मुनिवर्य श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 3

सानिध्य - पू. विमलप्रभाश्री जी म.सा. की शिष्या

पू. साध्वी श्री मयूर प्रियाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3

शुभाकांक्षी

स्व. शन्तिलालजी की स्मृति में

पत्नि- विमलाबाई पुत्र-ललितकुमार- दमयन्ती, निहालचन्द- स्नेहलता,

नितेश, कुशल, हर्षित लल्वाणी परिवार

तिरूपात्तुर (मरूधर में फलोदी)

फर्म- Shanti Jewellers, Tirupattur

विशेष लेख

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

कलयुग के कल्पवृक्ष : पुरुषादानीय पार्श्वनाथ

परमात्मा पार्श्वनाथ धरती और अम्बर का वह पुण्यशाली नाम है जिनके हजारों तीर्थ आज हमारे मन के कालुष्य को धोने का काम कर रहे हैं ।

पुरूषादानीय पार्श्वनाथ चिन्तामणि बनकर अचिन्त्य फल प्रदान करते हैं तो कभी कल्पवृक्ष से भी अधिक कल्याणकारी सिद्ध होते हैं । कभी शंखेश्वर में मोहनिद्रा से बाहर आने का शंखनाद करते हैं तो कभी पारसमणि के रूप में लोहे से स्वर्ण बनने का वरदान देते हैं ।

भारत का एक भी कोना ऐसा नहीं, जहाँ पार्श्वनाथ मंत्र की गूंज सुनाई न दे, एक भी मंदिर ऐसा नहीं, जहाँ पार्श्वनाथ के दर्शन न हो । कहीं कृष्णवर्ण के बिराजमान हैं तो कहीं नील या श्वेत वर्ण के बिराजमान हैं । नागेश्वर में वे खड़े खड़े ही मुक्ति का वैभव बांट रहे हैं तो स्थान स्थान पर बैठे बैठे करूणा और कृपा का अमृत बरसा रहे हैं । कहीं सप्तफणा है तो कहीं शतफणा और सहस्रफणा है। कहीं चिन्तामणि तो कहीं सोम चिन्तामणि और विजय चिन्तामणि है। बिम्ब एक....प्रतिबिम्ब अनेक। रूप एक....प्रतिरूप अनेक !

निश्चित ही पार्श्वनाथ की महिमा ही अलौकिक है । पौष वदि दशमी को नागेश्वर हो या नाकोड़ा, सैंकड़ों तीर्थों पर सामूहिक अट्ठम तप के तपस्वी नजर आते हैं तो लोगों का रेला-मेला परमात्मा के दर्शन को तरसता हुआ दृष्टि पथ में आता है । शंखेश्वर में तो हर पूनम को हजारों भक्तजन आते हैं और श्रद्धा का अर्घ्य अर्पण कर आनंद का अनुभव

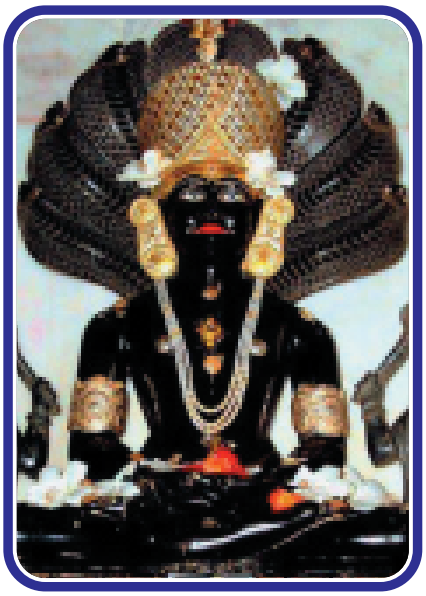

करते हैं ।

एक समय में पार्श्वनाथ के 108 तीर्थ इस धरा पर धर्म के धाम बने हुए थे, वह संख्या आज 1008 पार्श्वनाथ तक पहुँची है, इसमें पार्श्वनाथ की परम कृपा का ही प्रभाव है।

यह तो वह दर है, जहाँ लोग रोते रोते आते हैं और हँसते हँसते जाते हैं । यह तो वह दरबार है, जहाँ आता हर कोई है पर जाता कोई नहीं है । यह तो वह पावन स्मरण है जिसे जपने वाले के पास से पाप, ताप, सन्ताप और अभिशाप स्वयमेव पलायन कर जाते हैं ।

इस सकल भूमण्डल में सम्भवत: ऐसे कोई भगवान नहीं जो हजारों रूपों में पूजे जाते हो । इतने मंदिर, इतनी प्रतिमाएँ किसी और की नहीं। सर्वाधिक स्तोत्र और ग्रन्थ प्रकाशन भी पार्श्वनाथ पर ही हुए हैं । जिनहर्षसूरि कृत

श्री तेनम्पट्ट नगरे पार्श्व कुशल तीर्थ धाम मध्ये

2000 वर्ष प्राचीन श्री पार्श्वनाथ परमात्मा, दादा श्री जिनकुशलसूरि

एवं पद्मावती देवी की भव्य-भावना से परिपूर्ण

अंजनशलाका प्रतिष्ठा की हार्दिक शुभकामना

दादा गुरूदेव

भगवान श्री पार्श्वनाथ

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

पू. मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा.

साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म.सा.

निश्रा प्रदाता

पू. गुरूदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
के शिष्य मुनिप्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.,
पू. मुनिश्री समयप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनिश्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा.

शुभाकांक्षी

प.पू. महत्तरापद विभुषिता श्री चम्पाश्रीजी की शिष्या एवं साध्वी श्री जितेन्द्रश्रीज म.सा.
की चरणाश्रिता धवलयशस्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या
साध्वी मयूरप्रिया श्रीजी म.सा., तत्वज्ञलता श्रीजी म.सा., संयमलता श्रीजी म.सा., की पावन प्रेरणा से

गुरूभक्त परिवार तिरूपात्तुर

'अन्तरजामी सुन अलवेसर' एवं महामनीषी समयसुंदरोपाध्याय कृत **'आणी मन सुध आसता'** स्तवन तो जन-जन के हृदय का हार बना हुआ है । जय तिहुअण, उवसग्गहरं, नमिऊण, कल्याणमंदिर आदि स्तोत्रों की महिमा कण-कण में छाई हुई है ।

हर गच्छ-पंथ में पार्श्वनाथ का स्मरण-चिन्तन-मनन-वंदन होता रहा है । खरतरगच्छ में भी पार्श्वनाथ का अपना अपूर्व वैशिष्ट्य रहा है ।

काल का वह पावन खण्ड....विक्रम संवत् 1075 में अपने प्रखर आचार, विचार, व्यवहार के कारण प्रकट हुए खरतरगच्छ की आदि कहानी पार्श्व प्रभु से ही जुड़ी है ।

अणहिल्लपुरपत्तन [पाटण] के मण्डण स्वरूप श्री पंचासरा पार्श्वनाथ के पावन दरबार में ही प्रखर चारित्रज्ञ आचार्य श्री जिनेश्वरसूरि का यति सम्राट् सूराचार्य के साथ शास्त्रार्थ हुआ और सिद्धान्त में खरे उतरे आचार्य जिनेश्वरसूरि को पाटण नरेश दुर्लभ सम्राट् में 'खरे' अलंकरण से सम्मानित किया । कालान्तर में 'खरे' अलंकरण ने खरतरगच्छ की गौरवमयी परम्परा के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की ।

स्तंभन पार्श्वनाथ की कहानी भी अति सुहानी है जो कि खरतरगच्छ के ही नहीं, शासन के शृंगार नवांगी वृत्तिकार अभयदेव सूरि से संबद्ध है। निरन्तर आयम्बिल के तप से आचार्य अभयदेवसूरि जब कुष्ठ रोग से ग्रस्त हुए, अनशन लेने से पूर्व रात्रि में शासनदेवी ने खंभात की सेढी नदी के किनारे भूगर्भ में स्थित पार्श्वनाथ को प्रकट करने की बात की ।

नदी के तट पर पहुँचकर अमित प्रतिभा सम्पन्न आचार्यश्री ने 'जय तिहुअण वर कप्परुक्ख' के द्वारा पार्श्वनाथ की स्तुति करने की शुरू की । सतरहवीं गाथा का चौथा चरण **'जय पच्चक्ख जिणेस पास थंभणयपुरट्ठिय'** का उच्चारण किया, त्योंहि भूमि फटी और पार्श्वनाथ प्रभु प्रकट हुए । इसी प्रतिमा के अभिषेक जल से अभयदेवसूरि का कुष्ठ रोग विनष्ट हो गया । वह स्तोत्र आज **'जयतिहुअण'** के नाम से विश्रुत है ।

मारवाड़ का गौरव नाकोड़ा तीर्थ भी खरतरगच्छ की देन है । 15वीं सदी में आचार्य जिनोदयसूरि ने पुनर्प्रतिष्ठा करवायी । उसके बाद आक्रमणों में ध्वस्त हुए कीर्तिकलश को आकाश में चढ़ाने का काम किया-16वीं सदी में हुए आचार्य कीर्तिरत्नसूरि ने । एक तरह से यह तीर्थ उनका ही उपहार कहा जा सकता है । आचार्य श्री जिनकान्तिसागरसूरि ने इस भूमि पर चार बार विशालतम उपधान तप करवाये जिससे नाकोड़ा तीर्थ निखर कर भारत में ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व में छा गया ।

जोधपुर के निकट त्रिमंजिला स्वयंभू पार्श्व जिनेश्वर का कापरडा तीर्थ भी खरतरगच्छ की अनमोल भेंट रही है । इसका निर्माण खरतरगच्छ के यतिवर्य सुमतिधर्मजी की प्रेरणा से हुआ तो प्रतिष्ठा आचार्य श्री जिनचंद्रसूरि ने करवायी।

चिन्तामणि पार्श्वनाथ-जैसलमेर की जिनवर्धनसूरि ने, अमृतझरा पार्श्वनाथ- जामनगर की जिनराजसूरि ने, लौद्रवपुर पार्श्वनाथ की जिनराजसूरि द्वितीय ने,वाडी पार्श्वनाथ-पाटण की जिनचंद्रसूरि ने, करेडा पार्श्वनाथ की जिनसागरसूरि ने, जगवल्लभ पार्श्वनाथ- ब्रह्मसर की जिनमुक्तिसूरि ने, सहस्रफणा पार्श्वनाथ-सूरत की जिनलाभसूरि ने, रावण पार्श्वनाथ-अलवर की वाचक प्रवर श्री रंगकलश ने प्रतिष्ठा करवायी ।

सम्प्रति पू. गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की प्रेरणा एवं निर्देशन में अत्यन्त प्राचीन अवन्ति पार्श्वनाथ- उज्जैन तीर्थ का तीर्थोद्धार गतिमान है तो उनकी पावन निश्रा में पार्श्वमणि पार्श्वनाथ की पेद्दतुम्बलम् में ऐतिहासिक प्रतिष्ठा सम्पन्न हो चुकी है । इसी कड़ी में तेनम्पट्ट के 2000 वर्ष प्राचीन परमात्मा पार्श्वनाथ भी खरतरगच्छ की गौरवपूर्ण धरोहर कही जा सकती है, जिसके दर्शन करने के लिये दूर-दूर से श्रद्धालुओं का आगमन शुरू हो चुका है ।

श्री तेनम्पट्ट नगरे पार्श्व कुशल तीर्थ धाम मध्ये

2000 वर्ष प्राचीन श्री पार्श्वनाथ परमात्मा, दादा श्री जिनकुशलसूरि

एवं पद्मावती देवी की भव्य-भावना से परिपूर्ण

अंजनशलाका प्रतिष्ठा की हार्दिक शुभकामना

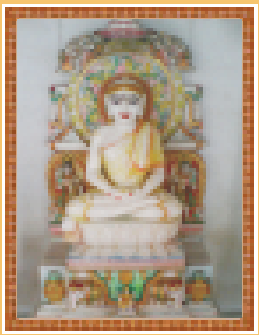

गुरूगौतम स्वामी

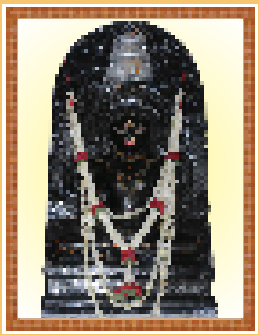

भगवान श्री पार्श्वनाथ

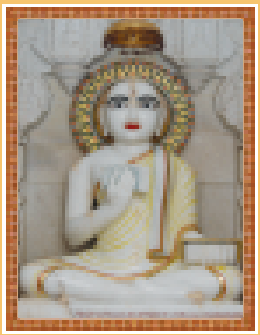

दादा गुरूदेव

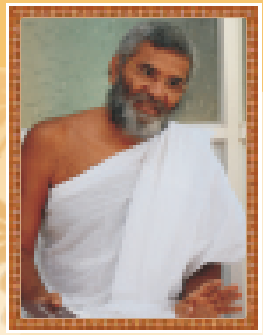

उपाध्यायश्री मणिप्रभसागरजी

माँ पद्मावती देवी

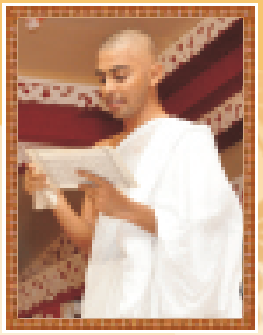

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.

शुभाकांक्षी

मिश्रीमलजी- सुन्दरबाई, पारसमल- श्रेयाबाई, विमलचंद- निर्मलाबाई

दिलीपकुमार- निर्मलाबाई, किशनलाल- शकुंतलाबाई, मनोहरलाल- अनिताबाई

ललितकुमार- संगीता, नितेशकुमार- ज्योतिबाला,

वंदना, विकास कुमार, भरतकुमार, उज्ज्वल, अर्चना, रूपेश, श्रेयांस,

चमन एवं समस्त मुथा परिवार, आम्बुर

विशेष

साध्वी मयूरप्रियाश्री

प्रभु पार्श्वनाथ की पावन गाथा

पुरूषादानी पार्श्वनाथ परमात्मा का जीवन अदभुत और अलौकिक था। परमात्मा का च्यवन चैत्र वदि चौथ को प्राणत देवलोक से अश्वसेन राजा की महारानी वामा माता की कुक्षि में हुआ। माँ ने मध्यरात्रि में अतिप्रिय मनमोहक महान् चौदह स्वप्न देखे। समय अपनी गति से आगे बढने लगा, वाराणसी नगरी के सुरम्य वातावरण में पौष वदि दशमी की मध्यरात्रि में परमात्मा का जन्म हुआ।

समस्त देवों ने उत्सव महोत्सव किया। प्रभात होते ही शुभ समाचार नगर वासियों को मिल गए, सम्पूर्ण नगरी हर्षोल्लास से भर गई! बालक का नाम पार्श्वकुमार रखा गया।

उन्होंने यौवन के प्रागंण में कदम रखा। एक बार पार्श्वकुमार झरोखे में बैठे हुए नगर के रम्य वातावरण को निहार रहे थे, तब जन-समूह सजधज कर नगर के बाहर जा रहा था। पार्श्वकुमार ने यह दृश्य देखा और पूछा-आप सभी लोग कहाँ जा रहे हो? तब किसी ने कहाँ-नगर के बाहर बहुत बड़ा तापस आया है जो पंचाग्नि तप करता है। हम उसकी पूजा करने जा रहे हैं। तब पार्श्वकुमार वहाँ पहुँचे और बताया कि यह तो हिंसामय तप है। इसमें तो पंचेन्द्रिय जीव की हत्या हो रही है। तापस ने कहाँ-रे बालक! तुम क्या जानो, तपस्या क्या होती है! तुम मेरे तप की मजाक कर रहे हो? कहाँ हिसा हो रही है? तब जलती हुई लकडी को बाहर निकाल उसे चिखा। उसमें एक नागयुगल जलता हुआ नजर आया। पार्श्वकुमार ने नवकार मन्त्र सुनाया और मन्त्र के प्रभाव से नाग युगल धरणेन्द्र देव और पद्मावती देवी बने! इस प्रकार परमात्मा ने अहिंसामय जीवन जीने का मार्ग बताया।

इसके बाद कुमार का प्रभावती के साथ लग्न हो गया। वैवाहिक जीवन जीने पर भी उन्हें संसार के विषय भोगों मे तनिक भी रस नहीं था। एक बार वे घूमते-घूमते एक गुफा में पहुँचे। सामने ही चित्र में उन्हें नेम-राजुल को बारात का दृश्य नजर आया! उसी पल भीतर मैं वैराग्य प्रस्फुटित हुआ। यह जीवन भोग विलास के लिए नहीं हैं, क्षणिक सुख पाने के लिए नहीं है, यह अनमोल जीवन तो कंकर से शंकर, जीव से शिव, आत्मा से परमात्मा बनने के लिए हैं, संसारी से सिद्ध होने के लिए है। विचारों में मन डुबकिया लगाने लगा और सोचा-संयम बिना जीवन का सार नहीं! तब नवलोकन्तिक देवों ने आकर प्रभु से निवेदन किया-प्रभु वर्षीदान देना प्रारम्भ करे! दान देकर प्रभु ने संसार के द्रव्य दारिद्र को दूर किया और पौष वदि 11 के दिन दीक्षा स्वीकार की। प्रभु पर मेघमाली के भयंकर उपसर्ग प्रभु चलित न हुए। अन्त में मेघवृष्टि से प्रभु को अथाह जल में डुबाने का उपसर्ग किया। तब धरणेन्द्र देव एवं पद्मावती देवी ने आकर प्रभु की सेवा की लेकिन परमात्मा की करूणा देखो उनके नयनों में न तो मेघमाली के प्रति द्वेष था और धरणेन्द्र व पद्मावती के प्रति राग था! दोनों में समान दृष्टि थी। अपनी ध्यान आराधना, साधना, तप जप से चैत्र वदि चौथ के दिन प्रभु को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ। चतुर्विध संघ की स्थापना हुई। प्रभु के प्रमुख शुभदत्त आदि 10 गणधर थे। 16 हजार साधु और 38 हजार साध्वीजी का समुदाय था। समस्त जगत को आत्म कल्याण का मार्ग बताते हुए श्रावण सुदि अष्टमी को सम्मेतशिखर पर निर्वाण के प्राप्त किया।

श्री तेनम्पट्ट नगरे पार्श्व कुशल तीर्थ धाम मध्ये

2000 वर्ष प्राचीन श्री पार्श्वनाथ परमात्मा, दादा श्री जिनकुशलसूरि

एवं पद्मावती देवी की भव्य-भावना से परिपूर्ण

अंजनशलाका प्रतिष्ठा की हार्दिक शुभकामना

गौतमस्वामी

भगवान पार्श्वनाथ

दादा जिनकुशलसूरि

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

आशीर्वाद

पू. गुरूदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

पावन निश्रा

पू. मुनिवर श्री मनितप्रसागरजी म.सा.

मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.

पावन सानिध्यता- पू. साध्वी श्री मयूर प्रियाश्रीजी म.सा.

स्व. मातुश्री रेशमीबाई स्व. श्री पन्नालालजी गुलाबबाई की पुण्य स्मृति में
गौतमचन्द, पारसमल, पुखराज, धरमचंद, अशोक, सुरेन्द्र, राजेश, आनन्द, पदम,
विनोद, ललित, मनीष, अजीत, एवं समस्त कवाड परिवार बेटा पोता
श्रीमान मोतीलालजी, खेतमलजी, सम्पतजी कवाड परिवार फलौदी हाल तिरूपातुर

SUMANGALI JEWELLERS Tirupattur- Bangalore- Salem- Chennai
GAUTAM JEWELLERS Tirupathur PARAS JEWELLERS Tirupathur

तेनम्पट्ट प्रतिष्ठा

ऐसा था प्रतिष्ठा का महोत्सव

तीर्थ का इतिहास

तमिलनाडु प्रान्त का वेल्लुर जिला, उसमें बसा एक गाँव-तेनम्पट्ट! जहाँ सुविधाओं का अभाव और जीवन का अबोध। उस नगर में खुदाई में मिली एक प्रतिमा। कृष्णवर्णीय, सुन्दर और आकर्षक! प्रतिमा पर किसी भी प्रकार का लंछन नहीं। इस प्रतिमा के साथ ही निकला-एक पाषाण खण्ड, जिस पर नागराज की सुन्दर आकृति उत्कीर्ण।

लगभग 100 वर्ष पूर्व प्राप्त इस प्रतिमा का यहाँ के तमिल लोग हर शुक्रवार को जल से अभिषेक करते, पुष्प चढ़ाते। इसके अतिरिक्त उन्हें पूजा के किसी भी विधान का बोध नहीं। वर्षों तक इसी प्रकार पूजन-विधान चलता रहा।

इस विशिष्ट प्रशमरस से छलकती प्रतिमा की चर्चा तिरूपात्तुर, अम्बूर के श्रावकों के कर्णपटलों से लगभग दस वर्ष पूर्व आ टकरायी। कोई प्रतिमा है जो जैन मुद्रा में है।

तिरूपात्तुर से गौतमचंदजी कवाड़, धर्मचंदजी, वानियमवाडी से पदमजी दुगड आदि श्रावक तेनम्पट्ट पहुँचे और प्रतिमा अर्पण करने का निवेदन किया। 70-80 वर्षों से पूजी जा रही प्रतिमा के प्रति लोगों का श्रद्धा भाव था। जब से ये भगवान हमारे गाँव में आये हैं, तब से हमारे गाँव का विकास हुआ है। मन की प्रसन्नता बढ़ी है। अत: ग्रामवासियों ने कहा- आप भगवान का मंदिर बनाओ, इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं है पर हम इतना जरूर कहेंगे कि परमात्मा इस गाँव से बाहर नहीं जायेंगे। मंदिर इसी गाँव में बनेगा। लोगों की बात जैन श्रावकों को जंची नहीं और वे वापस लौट गये।

इस बात को देखते-देखते दस बरस बीत गये। एक दिन राजकुमारी कोचर ने 'काकोसा' गौतमचंदजी को पूछा कि उस प्रतिमा का क्या हुआ, जो हम मांगने गये थे। फिर आज की रात मैंने एक अद्भुत स्वप्न भी देखा है कि

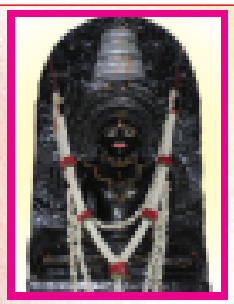

तमिलनाडु प्रान्त के वेल्लूर जिले में श्री तेनम्पट्ट नगर के
श्री पार्श्व कुशल अभिनव धाम में

2000 वर्ष प्राचीन पुरुषादानी श्री पार्श्वनाथ परमात्मा

दादा श्री जिनकुशलसूरि, श्री पद्मावती माता के मंदिर की
अंजनशलाका प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामना

आशीर्वाद
पू. गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
निश्रा- पू. मुनिवर्य मनितप्रभसागरजी म. सा.
पू. मुनिश्री समयप्रभसागरजी म. सा., पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. सा.

सानिध्यता
पू. साध्वी धवलयशस्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या
पू. साध्वी श्री मयूरप्रिया श्रीजी म. सा.
पू. तत्वज्ञलता श्रीजी म. सा., पू संयमलता श्रीजी म. सा.

वंदनकर्त्ता
धनराज, खुशालचंद, सुरेन्द्र पदम, विजय, प्रीतेश, मितेश, शंखेश, मानव
एवं समस्त गुलेच्छा परिवार (फलोदी)

फर्म
CELL WORLD Tirupattur PADMAVATI CLOTH CENTER Tirupattur

तमिलनाडु प्रान्त के वेल्लूर जिले में श्री तेनम्पट्ट नगर के
श्री पार्श्व कुशल अभिनव धाम में 2000 वर्ष प्राचीन पुरूषादानी श्री पार्श्वनाथ परमात्मा दादा श्री जिनकुशलसूरि,
श्री पद्मावती माता के मंदिर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामना

आणी मन सुध आसता,
देव जुहारू शाश्वता।
चिन्तामणि मोरी चिन्ताचूर,
पार्श्वनाथ मन वांछितपूर।।

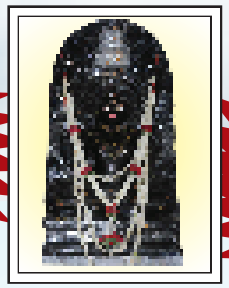

आशीर्वाद-
पू. गुरूदेव उपाध्याय प्रवर
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
निश्रा- पू. मुनिवर्य श्री मनितप्रभ
सागरजी म.सा. आदि ठाणा

सानिध्यता
पू. धवलयशस्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या
पू. मयूरप्रिया श्रीजी म.सा. आदि ठाणा

शुभेच्छुक
श्री गणेशमल, श्रीपाल, आनंद, भरत, पवन, राहुल
एवं समस्त बाफना परिवार (फलोदी-तिरूपात्तुर)
फर्म- **BKB jewellers Tirupattur**

नागदेवता मुझ पर और परमात्मा पार्श्वनाथ पर वासक्षेप डाल रहे हैं। कुछ दिन बाद गौतमजी कवाड को स्वप्न आया कि उनकी दुकान पर कोई दूसरा आकर बैठ गया है। गौतमजी ने हटने को कहा, पर वह आदमी हटा नहीं। अचानक देखा कि दुकान के दो द्वार बन गये हैं। गौतमजी समझ गये कि आज तक हमारे तिरूपात्तुर हृदय सिंहासन पर मनमोहन पार्श्वनाथ ही बिराजमान थे, अब से तेनम्पट्ट के पार्श्वनाथ भी बिराज गये हैं।

तिरूपात्तुर से गौतमचंदजी और धरमचंदजी कवाड तेनम्पट्ट पहुँचे और सहमति पूर्वक वहीं मंदिर बनाने का निर्णय कर लिया। 60 हजार स्क्वायर फीट प्रमाण जगह भी खरीद ली। अब शीघ्र ही मंदिर निर्माण का कार्य शुरू होना था। यहाँ के अधिष्ठायक भक्त देव की पूर्ण कृपा रही, अत: भूमि क्रय आदि हर कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

प्रतिष्ठा का निवेदन

इसे भाग्य और पुण्य के उदय का संयोग ही समझें कि पूज्य गुरूदेव, प्रतिष्ठा शिरोमणि उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. इचलकरंजी का स्वर्णिम चातुर्मास सम्पन्न करके हुबली, बल्लारी में मंदिर दादावाड़ी प्रतिष्ठा-दीक्षा करवाते हुए बेंगलोर पधारे। 1 जनवरी 2015 को संघवी श्री विजयराजजी डोसी की ओर से महामांगलिक का अभिनव कार्यक्रम था। भक्तों के हृदय की कलियाँ खिल उठी कि प्रतिष्ठा पूज्य गुरूदेव की शुभ निश्रा में सम्पन्न हो जायेगी।

तिरूपात्तुर के श्रावक पूज्यश्री की पावन निश्रा में बैंगलोर पहुँचे और प्रतिमा की तस्वीर पूज्यश्री के सम्मुख रखते हुए प्रतिष्ठा में निश्रा प्रदान करने की विनंती की।

पूज्यश्री ने कहा- प्रतिमा चमत्कारी है, शीघ्र ही मंदिर का निर्माण हो जाये तो उत्तम रहेगा। पर मेरे तो सारे कार्यक्रम निर्धारित हैं। मेरा आना संभव नहीं होगा।

ललित कवाड ने कहा- पूज्यश्री! आप पधारो, यह हमारी कामना है पर संभव नहीं है तो आप अपने शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. की निश्रा का आदेश फरमाओ।

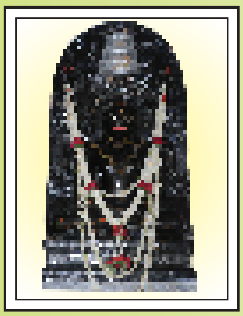

तमिलनाडु प्रान्त के वेल्लूर जिले में श्री तेनम्पट्ट नगर के
श्री पार्श्व कुशल अभिनव धाम में

2000 वर्ष प्राचीन पुरुषादानी श्री पार्श्वनाथ परमात्मा

दादा श्री जिनकुशलसूरि, श्री पद्मावती माता के मंदिर की
अंजनशलाका प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामना

आशीर्वाद

पू. गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
निश्रा– पू. मुनिवर्य मनितप्रभसागरजी म. सा.
पू. मुनिश्री समयप्रभसागरजी म. सा., पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. सा.

सानिध्यता

पू. साध्वी धवलयशस्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या
पू. साध्वी श्री मयूरप्रिया श्रीजी म. सा.
पू. तत्वज्ञलता श्रीजी म. सा., पू संयमलता श्रीजी म. सा.

शुभेच्छुक

पूनमचंद, प्रकाशचंद बैद

V.I.P. Tiles, Tirupattur

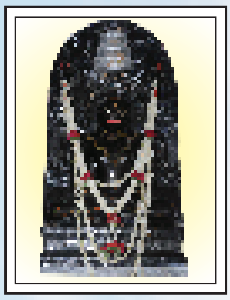

तमिलनाडु प्रान्त के वेल्लूर जिले में श्री तेनम्पट्ट नगर के
श्री पार्श्व कुशल अभिनव धाम में

2000 वर्ष प्राचीन पुरुषादानी श्री पार्श्वनाथ परमात्मा

दादा श्री जिनकुशलसूरि, श्री पद्मावती माता के मंदिर की
अंजनशलाका प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामना

आशीर्वाद

पू. गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.
निश्रा– पू. मुनिवर्य मनितप्रभसागरजी म. सा.
पू. मुनिश्री समयप्रभसागरजी म. सा., पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. सा.

सानिध्यता

पू. साध्वी धवलयशस्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या
पू. साध्वी श्री मयूरप्रिया श्रीजी म. सा.
पू. तत्वज्ञलता श्रीजी म. सा., पू संयमलता श्रीजी म. सा.

अभिनंदनकर्ता

श्रीचंद, प्रवीणकुमार, नवीनकुमार बैद–हुडिया (फलोदी–तिरूपात्तुर)

फर्म Jain stores, Tirupattur

अब बात मुनि मनितप्रभजी पर आकर टिक गयी। उनसे विनंती की पर उनकी भावना पूज्यश्री की निश्रा में विहार करने की थी।

इधर मात्र प्रतिष्ठा की ही नहीं, संपूर्ण तिरूपात्तुर संघ की विनंती है कि आप हमारे क्षेत्र में पधारो और हमारे जीवन के पथ को प्रशस्त करो। ललित कवाड और सम्पूर्ण तिरूपात्तुर संघ के श्रावक चार-पाँच दिन विनंती के लिये आते-जाते रहे। लक्ष्मण कवाड एण्ड ग्रुप की भी विनंती अत्यन्त प्रबल थी। आखिर भावभीनी विनंती को देखकर मुनिश्री ने गुर्वाज्ञा को शिरोधार्य कर लिया। तिरूपात्तुर वाले आनंद में थे पर मुनिश्री के मन में पूज्यश्री से जुदाई का दर्द था।

प्रतिष्ठा का मंगल मुहूर्त्त

पूज्य उपाध्याय श्री ने सबसे पहले तेनम्पट्ट स्थित नूतन तीर्थ परिसर का नाम उद्घोषित किया- 'श्री पार्श्व कुशल तीर्थ धाम।' सकल परिसर पार्श्वनाथ के जयकारों से गूंज उठा।

अब मुहूर्त्त देखना था। पूज्यश्री ज्योतिष विद्या में अत्यन्त निपुण हैं। जब जयपुर में वर्षों पूर्व पूज्य श्री उदयसागरजी म.सा. और पूज्य मुनि श्री कान्तिसागरजी म.सा. की आचार्य पदवी का कार्यक्रम था, तब पूज्यश्री के मुहूर्त्त पर अनेक ज्योतिषियों ने अंगुली उठाई थी, परन्तु पूज्यश्री ने उनसे चर्चा की तथा उन्होंने मुहूर्त्त को सही माना।

12 मार्च, 2015, चैत्र वदि छठ के मंगल मुहूर्त्त की उद्घोषणा पूज्यश्री के मुख से श्रवण कर सभी श्रद्धालु प्रसन्नता से नाच उठे। इसके साथ शिलान्यास और खातमुहूर्त्त का मुहूर्त्त प्रदान किया- माघ सुदि 10, 29 जनवरी 2015 का। शिलान्यास और प्रतिष्ठा के मध्य में मात्र पैंतालीस दिनों का अन्तराल था। इतने कम समय में 'मंदिर कैसे बनेगा' यह प्रश्न नहीं था, बस! परमात्मा की प्रतिष्ठा भव्योत्सव के साथ होनी चाहिये, ये भावनाएँ मन-सागर में तरंगों की भाँति नाच रही थीं। इसके बाद पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म., मुनि श्री समयप्रभसागरजी म., मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. का तिरूपात्तुर की तरफ विहार हो गया। लगभग पाँच सप्ताह

श्री पार्श्व कुशल अभिनव धाम में तमिलनाडु प्रान्त के वेल्लूर जिले में श्री तेनम्पट्ट नगर के

2000 वर्ष प्राचीन पुरूषादानी श्री पार्श्वनाथ परमात्मा

दादा श्री जिनकुशलसूरि, श्री पद्मावती माता के मंदिर की

अंजनशलाका प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामना

प्रभु पारस तेरा नाम है,
इसे जपना सुबह शाम है।
और किससे मुझे काम है,
लाये भक्ति का पैगाम है।

आशीर्वाद

पू. गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

निश्रा

पू. मुनिवर्य श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा-3

सानिध्यता

पू. धवलयशस्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या

पू. मयूरप्रिया श्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3

शुभेच्छुक

प्रेमचंद, गजेन्द्र, जितेश एवं समस्त भंसाली परिवार (फलोदी- तिरूपात्तुर)

फर्म **GAJENDRA JEWELLERS Tirupattur**

तमिलनाडु प्रान्त के वेल्लूर जिले में श्री तेनम्पट्ट नगर के

श्री पार्श्व कुशल अभिनव धाम में

2000 वर्ष प्राचीन पुरूषादानी श्री पार्श्वनाथ परमात्मा

दादा श्री जिनकुशलसूरि, श्री पद्मावती माता के मंदिर की

अंजनशलाका प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर हार्दिक शुभकामना

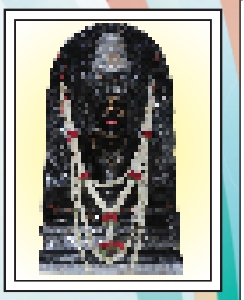

आशीर्वाद

पू. पाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

निश्रा

पू. मुनिवर्य श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.,

पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा.

पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा

सानिध्यता

पू. चम्पा जितेन्द्र ज्योति

विमलप्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या

पू. मयूरप्रिया श्रीजी म.सा,

पू. तत्वज्ञलता श्रीजी म.सा.,

पू. संयमलता श्रीजी म.सा.

शुभ कामनाकर्ता

तिलोकचंद, महावीरचंद, कमलचंद, विमलचंद, सुरेश, धनराज, विनोद

एवं समस्त गुलेच्छा परिवार (फलोदी- तिरूपात्तुर)

फर्म **DEEPAM JEWELLERS, Tirupattur**

मुनिश्री तिरूपात्तुर बिराजे और ज्ञान की गंगा बहाते रहे। पत्रिका आदि अनेक कार्यों की जिम्मेदारी प्रज्ञावान् ललित कवाड पर थी, तो गौतमचंदजी कवाड, निहालचंदजी ललवाणी भी अपना तन-मन-धन से सक्रिय योगदान अर्पित कर रहे थे।

महोत्सव का प्रारंभ

मार्च माह का पहला सप्ताह पूर्णता के कगार पर था। प्रतिष्ठा की तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही थीं। छोटे से गाँव में किसी भी प्रकार की सुविधा नहीं। एक कील लेने के लिये भी वानियमवाडी या आम्बूर जाना पड़ता था। समय और परिश्रम के योग से 45 दिन में उपाश्रय एवं दो कक्ष बन चुके थे। मंदिर निर्माण का कार्य तीव्र गति से चल रहा था। सभी का उस पर ही ध्यान केन्द्रित था। गाँव वालों का सम्पूर्ण सहयोग और परिसर के लाभार्थी परिवारों का पूरा श्रम एवं समय लग रहा था।

मंदिर आदि निर्माण का लाभ चार परिवारों ने अपनी चंचला लक्ष्मी को लगाकर पुण्यानुबंधी पुण्य के संचय का कार्य किया था- श्रीमती विमलादेवी शांतिलालजी, निहालजी, ललितजी ललवाणी-तिरूपात्तुर, मिश्रीलालजी, पारसचंदजी, विमलचंदजी, दिलीपकुमारजी मुथा-आम्बूर, श्री पन्नालालजी, गौतमचंदजी, पारसचंदजी, पुखराजजी कवाड-तिरूपात्तुर और साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म. की सत्प्रेरणा से एक प्रभु भक्त परिवार।

साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म. ने तिरूपात्तुर में अभी-अभी भव्य चौमासा किया। जप, तप, आराधना का ठाठ और बाद में पद यात्रा संघ का भव्य आयोजन। इतिहास के पन्नों पर उनका नाम संघ के लिये अंकित हो गया।

10 मार्च 2015 को मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 3 तथा साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म. ठाणा-3 का प्रवेश अत्यन्त सादगी के साथ तेनम्पट्ट में हुआ।

परमात्मा के सामने बैठे तो उठने का मन न हो। बस निहारते रहे, तृप्त होते रहे और आनंद को पाते रहे। ऐसी दिव्य प्रतिमा।

मंदिर के चारों ओर लहलहाते ऊँचे ऊँचे नारियल के

प. गणनायक सुखसागर सद्गुरूभ्यों नमः श्री पार्श्वमणि पार्श्वनाथ नमः प. पू. श्री जिनकान्तिसागर सूरिभ्यों नमः

आन्ध्रप्रदेश की धन्य धरा पर स्थित श्री पार्श्वमणितीर्थ (पेद्दतुम्बलम) मध्ये

अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति द्वारा

आयोजित अष्ट दिवसीय आवासीय

JAIN SUMMER CAMP (शिविर) तथा

कुशल साधर्मिक योजना एवं अनुकम्पादान

का भव्य आयोजन प्रसंगे

सकल संघ को भावभरा आमंत्रण

शिविर
23.4.2015
गुरूवार
से 30.4.2015
गुरूवार

पावन निश्रा
प.पू. पार्श्वमणितीर्थ
प्रेरिका गुरूवर्या
श्री सुलोचना श्रीजी म. सा.

साधर्मिक योजना
29.4.2015 से
30.4.2015
गुरूवार

एवं प.पू. तपोरत्ना सुलक्षणा श्रीजी म. सा. की सुशिष्या

प.पू. साध्वीरत्ना डॉ. प्रियश्रद्धांजजना श्रीजी म.सा आदि ठाणा-3

शिविर तथा कार्यक्रम स्थल
श्री पार्श्वमणितीर्थ
पेद्दतुम्बलमृ,
वाया आदोनी, जिला कर्नुल (A.P.)
08512-257432, 257434
(डायालालजी सा आदोनी

निवेदक
श्री पार्श्वमणि जैन तीर्थ ट्रस्ट मंडल
की आज्ञा से
अखिल भारतीय सदा कुशल सेवा समिति
सुरेश कोषरी, रायचूर-94480 23865,
ललित मेहता, चेन्नई -72000 57533,

वृक्ष, और प्रकृति ने ओढी हरियाली की चादर मन और ज्यादा आनंदित बना रही थी।

एक ग्रामीण महिला ने बताया कि मेरी उम्र 65 वर्ष की है, तब से भगवान पार्श्वनाथ को इस वृक्ष के नीचे बिराजमान देख रही हूँ। इसका अर्थ यही होता है कि परमात्मा को प्रकट हुए लगभग आठ या नौ दशक परिपूर्ण हो चुके हैं।

चतुर्विध संघ ने परमात्मा का चैत्यवंदन कर स्वयं को धन्य माना। गोचरी आदि की सम्पन्नता के साथ ही प्रख्यात विधिकारक श्री आश्विन भाई भी आ चुके थे।

अश्विन भाई की अपनी एक कला है। उनका मधुर कण्ठ, स्पष्ट उच्चारण और उसमें सुर मिलाता संगीत! यह धर्म का ही दिव्य परिणाम था कि ब्लड कैंसर होने के बाद डॉक्टर्स ने उन्हें पन्द्रह दिन की अन्तिम जीवन अवधि बतायी थी, पर यह अद्‌भुत चमत्कार धर्मनिष्ठा और प्रभुकृपा से ही घटित हुआ कि आज पूर्ण स्वस्थता के साथ वे हमारे समक्ष हैं। यह धर्म क्रिया, भक्ति भावना और मंत्र-विधान का ही सुपरिणाम है।

पूजन-विधान के शुरू करने का समय प्रातः 9 बजे का था क्योंकि आज अनेकानेक विधान होने थे। व्यवस्था करते हुए विधिवत् विधानों का प्रारंभ 12.39 पर हो पाया।

कुंभ स्थापना, दीप स्थापना, पाटला पूजन, नवग्रह पूजन, दशदिक्‌पाल पूजन, नवपद पूजन, भैरव पूजन, चौंसठ योगिनी पूजन होने के साथ अत्यन्त प्रभावशाली विशिष्ट नंद्यावर्त पूजन भी सम्पन्न हुआ।

इस मांगलिक पूजन की विशिष्टता है कि यह विधान अंजनशलाका में ही होता है, इसके साथ प्रतिष्ठाचार्य के द्वारा ही सम्पन्न होता है।

पूज्य मुनिवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. के कण्ठ से मधुर मंत्रोच्चारणों का जो उच्चारण हो रहा था, ऐसा लग रहा था, जैसे उनके गुरूदेव उनमें बिराजमान होकर पूजन करवा रहे हों।

शाम को शुभ चौघड़िये में पार्श्वनाथ परमात्मा की प्रतिमा का उत्थापन विधान सम्पन्न हुआ। वातावरण जैसे

श्री व्यापारीलालजी
गोदावरीदेवी
अंजुदेवी-रतनलाल,
कान्तादेवी-विनोदकुमार,
मंजुदेवी-गौतमकुमार,
मीनादेवी-पारसमल,
कंचनदेवी-सुरेशकुमार (पुत्र-पुत्रवधु),
मौनादेवी-हितेशकुमार, रुपलदेवी-सुशीलकुमार
(पौत्र-पौत्रवधु), हिम्मतकुमार, विवेक,
वंदन, विपुल, रौनक (पौत्र),
भव्या, तनिषा (पौत्री),
कमलादेवी-सरदारमलजी चौपड़ा
(बहिन)
प्रतिष्ठान
रतनलाल गौतमकुमार
बोहरा ब्रदर्स
403, 603, Safal Flora,
Godha caup Road, Shahibag,
Ahmedabad - 380004
(R) 079-22680300, 22680460
(M) 09327002606, 09924477723
श्रीमती गोदावरीदेवी व्यापारीलालजी बोहरा (हालावाला) परिवार
रतनलाल व्यापारीलालजी बोहरा
8, शाहीकुटीर, शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004.
टेली. : (079) 22869300

भक्ति की सुगंध से महक रहा था। अब तो घड़ी की खिसकती सुई के साथ माहौल भी आनंद से भरता जा रहा था।

पंच कल्याणक एवं वरघोड़ा

समय कम था और काम ज्यादा। प्रतिष्ठा में अब केवल एक दिन ही अवशिष्ट था। प्रात: की ठण्डी बयार तन और मन, दोनों को प्रसन्नता से भर रही थी। लगभग 6 बजकर 30 मिनट पर च्यवन विधान का प्रारंभ हो गया। पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. उनके जीवन में पहली बार अंजनशलाका करवा रहे थे। वे सहजत: आनंद से परिपूर्ण थे। सौम्यता उनकी आँखों से ही नहीं, रोम-रोम से टपक रही थी। उनकी चाल में गंभीरता के दर्शन हो रहे थे।

इन्द्र इन्द्राणी बने थे अम्बूर निवासी दम्पत्ति युगल मूथा दिलीपजी सौ. निर्मलादेवी एवं माता-पिता बने थे तिरूपात्तुर निवासी दम्पति युगल आनंदजी एवं सौ. मीनादेवी कवाड। उनके भी चेहरे आज प्रसन्नता से पुलक रहे थे क्योंकि त्रिभुवनपति पार्श्वनाथ के जीवन से जुड़कर धन्य होने का सुअवसर जो हाथ लगा था।

इन्द्र इन्द्राणी, माता-पिता की स्थापना के बाद स्वर्ण शृंखला से गुरू पूजन किया गया। यह इस बात का द्योतक था कि गुरूदेव! आपके चरणों की सेवा से बढ़कर न सोना है, न चांदी है। धर्माचार्य विधिकारक के रूप में श्री आश्विन भाई की स्थापना की गयी।

समधुर उच्च स्वर से च्यवन कल्याणक के मूल मंत्रोच्चारण के समय तो जैसे वक्त ही थम गया था। जैन श्रावक ही नहीं, ग्रामवासी तमिलवासी भी अत्यन्त उत्सुकता से इस सारे उत्सव को श्रद्धा की आँखों से निहार रहे थे।

ज्योंहि च्यवन की उद्घोषणा हुई कि पूरे वातावरण में भक्ति की मस्ती छा गयी। क्या माता-पिता और इन्द्र-इन्द्राणी, क्या जैन और क्या जैनेतर, सभी के पाँवों में नृत्य के घुंघरू बंध गये। लम्बी भक्ति के बाद तुरन्त जन्म कल्याणक का विधान शुरू हो गया। ऐसा ही लग रहा था जैसे वास्तव में तेनम्पट्ट वासी काशी के राजकुमार पार्श्व कुंवर का जन्म महोत्सव मना रहे हों। पूज्य मुनि श्री ने बताया

कि कल्याणक के समय नारकी जीव ही नहीं, निगोद के जीव भी सुख का अहसास करते हैं।

जन्म कल्याणक की गरिमा भी परमात्मा की महिमा के अनुरूप थी। उल्लास से भरकर आबाल-वृद्ध, सभी ने जन्म की बधाई दी और ली। तत्पश्चात् छप्पन दिक्कुमारी महोत्सव, इन्द्रासन कंपन, मेरू पर्वत पर अभिषेक सम्पन्न हुआ। यद्यपि मंच का कार्यक्रम नहीं था, फिर भी आनंद की बहार में कहीं कोई न्यूनता नहीं थी।

ठीक 10.30 पर वरघोडे का प्रारंभ हुआ। आज बाहर से अनेक स्थानों से संघ एवं मेहमान उपस्थित थे। गर्मी भी अपने चरम पर थी। समय पर वरघोडा भी पार्श्व कुशल तीर्थ धाम परिसर में पहुँचा और धर्म सभा में परिवर्तित हो गया। इस धर्म सभा में चार मुमुक्षु भी उपस्थित थे। चैन्नई निवासी माँ-बेटे मुमुक्षु जयादेवी एवं संयम सेठिया, ममता बरडिया एवं सिंधनूर निवासी शिल्पा नाहर।

कार्यक्रम का संचालन ललित कवाड कर रहा था। इस पूरे परिसर में सर्वाधिक श्रम और समय देकर तमिलवासियों को जैन धर्म का बोध देने वाले श्री गौतमचंदजी कवाड का हार्दिक उद्‌बोधन हुआ। तदुपरान्त तमिल महिलाओं ने नवकार मंत्र प्रस्तुत किया। उनके मुख से इरियावही, तस्स उत्तरी आदि सुस्पष्ट उच्चारण से धर्म मण्डप में बिराजमान श्रावक-श्राविका ही नहीं साधु-साध्वी भी आश्चर्य मिश्रित आनंद से भर उठे। खचाखच भरा पाण्डाल जयकारों एवं तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। ईनाम की झड़ी लग गयी। सोने में सुहागा स्वरुप प्रतिष्ठा की निर्विघ्न पूर्णाहूति के लिये ग्रामवासी अजैनों ने 31000 नवकार मंत्र का जाप किया था।

इसके बाद पूज्य मुनि श्री का अत्यन्त मार्मिक प्रवचन हुआ। इतिहास के पृष्ठों को खोलने के साथ उन्होंने पार्श्वनाथ के नाम की महिमा का वर्णन किया। एक पारस के हजार धाम। जहाँ देखो, वहाँ पारसधाम! पारसमणि से बढ़कर पारसनाथ, जिसे छूकर सोना ही नहीं, परमात्मा भी बन सकते हैं। संयम जीवन का भावभीना गुणगान करने के पश्चात् तमिल भाषा में आशीवर्चन फरमाये, जिसे सुनकर श्रोता

आनंद से गद्‌गद् हो गये तथा पाण्डाल जयकारों से गूंज उठा। 11,000 रु. साधारण खाते में अर्पण करने की घोषणा होने पर दानदाताओं की होड़ लग गयी। मात्र चौबीस घण्टों में 300 नाम आ गये। आश्विन भाई, शांतिलालजी गुलेच्छा एवं मनोजजी गुलेच्छा के भी उद्‌बोधन हुए।

चारों दीक्षार्थियों, जिसमें विशेष रूप से संयम सेठिया को सुनकर सभा अनुमोदना से भर गयी। चारों का बहुमान सम्पन्न हुआ। अब दोपहर का एक बज चुका था। सभा में मंदिर परिसर निर्माता चारों परिवारों की उदारता का गुणगान करते हुए ललित कवाड ने हार्दिक अभिनंदना एवं अनुमोदना की।

आज सुबह से शाम-रात तक पूर्ण व्यस्तता थी। धर्मसभा के विसर्जन के बाद अठारह अभिषेक एवं देव-देवी पूजन सम्पन्न होते होते शाम के चार बज रहे थे। अभी भी विधान बाकी थे। कोशिश करते-करते लगभग 4.30 बजे परमात्मा के कल्याणकों का मंत्र विधान शुरू हो पाया। नामकरण का विवेचन करते हुए पूज्यवर्य ने कहा कि परमात्मा का नाम जन्म राशि के अनुसार नहीं, गुण-निष्पन्नता के आधार पर होता है। आदिनाथ, शांतिनाथ, परमात्मा महावीर के नाम की विवेचना करते हुए उन्होंने पार्श्वकुंवर नामकरण का कारण बताया। विधि-विधान मण्डप के आगे लोग कुर्सियाँ लगाकर परमात्म-भक्ति का आनंद उठा रहे थे। संगीतकार कमलजी के पुत्र सुनीलजी सुमधुर कण्ठ से गीतों की गंगा बहा रहे थे। वातावरण स्वयं जैसे उल्लास की सुवास से भर गया था। लग रहा था- काश! घड़ी की सुई यहीं रूक जाये और यूं ही भक्ति के सरोवर में डुबकी लगाते रहें।

पाठशाला गमन, विवाह, राज्याभिषेक, नवलोकान्तिक देवों द्वारा दीक्षा का निवेदन, इतना विधान होते-होते 5.30 बज चुके थे। अब सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दीक्षा कल्याणक का विधान होना था।

पूज्यश्री ने बताया- पाँच कल्याणकों के ठीक मध्य में स्थित दीक्षा कल्याणक के कारण ही च्यवन और जन्म कल्याणकों की बधाई है और दीक्षा के कारण ही केवलज्ञान तथा निर्वाण कल्याणक की परिणति है।

वस्त्र परित्याग, केशलुंचन, करेमि (भंते) के द्वारा प्रतिज्ञा, मन:पर्यवज्ञान की प्राप्ति, देवदुष्य वस्त्र का अर्पण, परमात्मा का पहला-पहला विहार....! ऐसा लग रहा था- सचमुच हमारे भगवान दीक्षा ले रहे हैं। मन में संयम के प्रति श्रद्धा की वीणा बज उठी। जा संयम पंथे दीक्षार्थी.... रूडा राज महल ने त्यागी.... संयम धर्म ने नमो नम:.... ऐसे गीत-संगीतमय वातावरण में संयम की मीठी मीठी महक आ रही थी। इतने में कृष्णगिरि पीठाधिपति यतिवर्य श्री वसंतविजयजी म. भी पधार गये।

रात्रि में भक्ति भावना के साथ यति श्री वसंतविजयजी म. का तमिल भाषा में प्रभावशाली उद्‌बोधन हुआ। मंदिर क्यों-कैसे-कब जाना?आदि अनेक विषयों के साथ मंदिर-प्रतिमा का महिमा गान भी किया।

रात को शुभ मुहूर्त्त में परमात्मा का मंदिर में प्रवेश सम्पन्न हुआ। प्रतिमा का कोई कम नहीं, 1500 किलोग्राम वजन होने से पर भी अल्प श्रम से ही कार्य सध गया। यह परमात्मा का अमृतमय अनुग्रह था।

अंजनशलाका

घड़ी सुबह के 3.45 बजा रही थी। वातावरण शांत था फिर भी उसमें खुशी की मंद-मंद फुहारें बरस रही थीं। मंदिर में पूजा के वस्त्रों में 70 से 80 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति थी। मुनिवर एवं साध्वी मण्डल भी उपस्थित था। पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. के द्वारा पहली अंजनशलाका को निहारने का आनंद और उत्सुकता सभी की आँखों से टपक रही थी।

ठीक चार बजे अंजनशलाका, अधिवासना के प्रारम्भिक विधान स्वरूप मंत्र-न्यास, मुद्रा, देववंदन आदि सम्पन्न हुए।

अंजनशलाका के मूल विधान का मुहूर्त्त निकट आते ही साध्वीजी भगवंत एवं श्रावक संघों को बाहर जाकर नवकार मंत्र के जाप का निर्देश दिया गया। गुप्तरूप से अनेकविध मंत्रोच्चारणों, आह्वानों, मुद्राओं के साथ पूज्य गुरूदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. द्वारा प्रदत्त शुभ मुहूर्त्त में उनके शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभजी द्वारा

अंजनशलाका विधान संपन्न किया गया।

विधान-सम्पन्नता के बाद श्रावक संघ सम्मुख उपस्थित था। परन्तु परमात्मा के गर्भगृह का द्वार बंद था। अंजनशलाका के बाद पहला दर्शन करवाने की कोई बोली तो थी नहीं। क्योंकि ध्वजा, कलश, बिराजमान आदि का संपूर्ण लाभ तीर्थ निर्माता चार परिवारों को मिला था, अत: बोलियों का कार्यक्रम न था।

मुनि श्री ने आश्विन भाई को कहा- बोली पैसों में न सही, पर आराधना के विधानों से करावें। परमात्मा के प्रथम दर्शन का लाभ राजकुमारी कोचर-तिरूपात्तुर ने 5555 नवकारवाली में, प्रभुजी को पोखने का लाभ सौ. स्नेहलताजी ललवाणी-तिरूपात्तुर ने 1111 सामायिक में, समवसरण में चामर ढुलाने का लाभ लक्ष्मण कवाड-तिरूपात्तुर ने 151 स्नात्र पूजा में तथा पुष्प वृष्टि का लाभ दीपक बालगोता-वेल्लूर ने 161 स्नात्र पूजा में लिया! इन सारी बोलियों की समयावधि एक वर्ष की रखी गयी।

ॐ पुण्याहम्.... के उच्चारण से परमात्म-दर्शन करके जैसे खाली नेत्रों में आनंद का अंजन हो गया। परमात्मा की पहली देशना पूज्यश्री के मुखारविंद से सुनी। निर्वाण कल्याणक रूप परमात्मा के 250 अभिषेक सम्पन्न हुए। तत्पश्चात् सामरण पर चैत्यपुरूष की प्रतिष्ठा आदि विधान हुए। इतने में घड़ी की सुई आठ बजा रही थी। अंजनशलाका करवाने वाले को अंजन विधान के दिन आयंबिल-नीवी का प्रत्याख्यान अनिवार्य होता है, तदनुरूप मुनिश्री के आज नीवी की तपाराधना थी। लगातार भक्तजन उन्हें प्रथम अंजनशलाका की बधाईयाँ दे रहे थे, वे प्रेम से स्वीकार भी कर रहे थे। अब प्रतिष्ठा का मुहूर्त्त निकट ही था। 9.30 बजे मुनि श्री एवं अश्विन भाई मंदिर में पधार गये। समय कम था और काम ज्यादा। कुछेक बोलियाँ सम्पन्न हुई। दादा गुरूदेव का गुप्त भण्डार भरने का लाभ धनराजजी खुशालचंदजी गुलेच्छा-तिरूपात्तुर ने, दादा गुरुदेव की आरती, पद्मावती देवी की आरती और पद्मावती माता के गुप्त भण्डार भरने का लाभ किशनलालजी विकासजी मुथा-आम्बूर ने, भगवान की आरती, कुंकुम थापा एवं अष्ट प्रकारी पूजा का लाभ

लूणकरणजी हीराचंदजी रांका-गुडियातम ने, माणक स्तंभ और तोरण बांधने का लाभ प्रेमचंदजी, गजेन्द्रजी भंसाली-तिरूपात्तुर ने, भगवान के मंगल दीपक का लाभ पन्नालालजी मेहता-आम्बूर ने, दादा गुरुदेव के मंगल दीपक का गौतमजी बालगोता-वेल्लूर ने, तथा प्रतिष्ठा की झालर बजाने का लाभ शोभाजी शांतिलालजी कोटडिया-त्रिची ने लिया।

मुनि मण्डल, साध्वी मण्डल के साथ यति श्री वसंतविजयजी म. भी उपस्थित थे। कुछ मिनटों में मंदिर का ही नहीं, पूरा तीर्थ परिसर भी जैन श्रद्धालुजनों से खचाखच भर चुका था। आज तो भारत के विविध स्थानों से श्रद्धालुजन पधारे थे। तमिलवासी भी भारी तादाद में इस अंजनशलाका-प्रतिष्ठा उत्सव को निहारने के लिये उपस्थित थे।

तोरण-स्थापना आदि के बाद मंत्रोच्चारण का विधान शुरू हो चुका था। ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्ताम् प्रीयन्ताम्, ॐ कूर्म निज पृष्ठे...., शांतिकरा भवन्तु.... आदि मंत्रों की ऊर्जा से हवा, पानी, जमीन, आकाश ही नहीं जैसे पूरा वातावरण अभिमंत्रित, सुगंधित और पवित्र हो रहा था। प्रतिष्ठाकर्ता को अपने-अपने स्थान पर जागरुकता से उपस्थित रहने की हितशिक्षा दी जा चुकी थी। पूरी प्रकृति जैसे आनंद से नाच रही थी। और मुनि श्री ने देखा कि प्रतिष्ठा के पावन क्षण आ चुके हैं।

तत्क्षण स्थापना मुद्रा के साथ उन्होंने ज्योंहि सातवीं बार 'ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा' मंत्र का उच्चारण करके इधर परमात्मा पर वासचूर्ण डाला, और उधर प्रतिष्ठा की मधुर झालर बज उठी। संगीत से प्रकृति थिरक उठी! क्या बच्चे, क्या बूढ़े, क्या जवान, सभी के पाँव प्रभु प्रतिष्ठा की खुशी से नाच उठे। मन की शहनाई गूंज उठी। तीर्थ निर्माता ललवाणी, मुथा, कवाड और गुप्त प्रभु भक्त इन चार परिवारों के हृदय की कली-कली खिल गयी। परमात्मा के साथ-साथ दादा जिनकुशलसूरि एवं पद्मावती की प्रतिष्ठा सम्पन्न हो गयी। मंदिर पर ध्वजा लहराने लगी।

इसके बाद कुंकुम थापे से मंदिर लाल-लाल हो गया।

अष्ट प्रकारी पूजा के कर्णप्रिय मंत्रोच्चारणों को संगीत के रस में भिगोकर जब आश्विन भाई ने परोसा तब तो जैसे वातावरण में भक्ति का गुलाल उड़ने लगा। जहाँ देखो, वहाँ खुशी की लहर चल पड़ी! मंदिर में पग रखने की जगह नहीं पर लोगों में दर्शन करने की भारी उत्सुकता। मुनि श्री ने निर्देश दिया- चैत्यवंदन के बाद पंक्तिबद्ध दर्शन का अवसर दिया जायेगा। इस व्यवस्था में श्री नवकार मित्र मण्डल वेल्लुर का पूरा योगदान मिल रहा था।

इसके बाद चैत्यवंदन किया गया। मुनिश्री ने जैसे स्तवनों के साथ भावों की झड़ी लगा दी। **'अमर बना दो देवाधिदेवा'** के बाद **'कृपा करो कृपा करो'** स्तवन पर श्रद्धालुजन थिरक उठे। **'मेवा मले के ना मले'** के बाद उनका ही नहीं, जन जन का प्रिय स्तवन **'मारा व्हाला प्रभु, क्यारे मलशो मने'** के साथ सारा वातावरण भक्ति सुधारस से भीग गया। **'तूंने पकड़ा मेरा हाथ है, फिर डरने की क्या बात है'** इन पंक्तियों ने तो जैसे भक्ति में जान डाल दी। एक बार म.सा. गावें, पीछे पीछे भक्ति से प्रभावित भक्त। सुमधुर कंठ, कर्णप्रिय भजन और प्रतिष्ठा का उत्सव। त्रिवेणी संगम से तेनम्पट्ट स्थित श्री पार्श्व कुशल तीर्थ धाम का यह परिसर गौरव से नाच उठा। बीच बीच में संसार की असारता और प्रभु भक्ति के सार की कॉमेन्ट्री लोगों को विशेष खुशी से भर रही थी। एक घण्टे तक भक्ति का अद्‌भुत समां चला। मुनिश्री के केन्द्र में परमात्मा थे और लोगों के आँखों के केन्द्र में मुनिश्री। मन कर रहा था कि यहीं बैठे रहे, यूं ही गाते रहे, पल बीतते रहे और आनंद-प्रवाह में डूबते रहें, पर समय के साथ चलना था। चैत्यवंदन के बाद धर्म सभा का आयोजन हुआ।

मुनिश्री के निर्देश से कामली की जगह गुरू पूजन का विधान चार लाभार्थी परिवारों द्वारा सम्पन्न हुआ। आयंबिल-नीवी की प्रेरणा दी गयी। छोटे से ख्याल-ख्वाब की साकारता, प्रभु-अनुग्रह और गुरू कृपा का व्याख्यान मुनि श्री ने किया।

यति श्री वसंतविजयजी म. ने मुनिश्री को कृष्णगिरि पधारने का निवेदन करते हुए कहा कि आप इतनी

अंजनशलाकाएँ करवाएँ कि आपके हाथ अंजनमय हो जायें। उन्होंने बताया कि संभवत: पूरे तमिलनाडु प्रदेश में सर्वाधिक प्राचीन प्रतिमा तेनम्पट्ट की ही है।

पू. साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्या साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. के चातुर्मास की विनंती वेल्लूर, कडलूर संघ ने की। वेल्लूर संघ ने मुनिश्री से चैत्री ओली करवाने की विनंती की। आवश्यक बहुमान किये गये। आज तो जैसे श्री पार्श्वकुशल तीर्थधाम परिसर में मेला नजर आ रहा था। तिरूपात्तुर, आम्बूर, गुडियातम, वेल्लूर, कडलूर, ईरोड, तिरूपुर, सेलम, चैन्नई, वानियमवाडी, विरंजीपुरम, कृष्णगिरि, पेरनामपेट, अहमदाबाद, सोलापुर, केवीकुप्पम, आदि अनेक संघों की एवं उनके प्रतिनिधियों की उपस्थिति थी।

सभी के होठों पर एक ही बात ही थी-आज हमने छोटे मणिप्रभसागरजी म. के दर्शन किये। उनकी वाणी, प्रवचन, शैली हर एक में उपाध्याय श्री के दर्शन होते हैं। आनंद ही आनंद आ गया।

कार्यक्रम की सफलता में भोजन का अपना महत्त्व होता है। भोजन व्यवस्था में सुरेन्द्रजी कवाड, कमलजी गुलेच्छा, निहालजी ललवाणी, दिलीपजी गुलेच्छा और सुरेन्द्रजी गुलेच्छा की टीम का योगदान रहा। वेयावच्च में लक्ष्मण कवाड, हर्षित ललवाणी एवं उनके साथीगणों का योगदान रहा। संचालन से लगाकर टेन्ट, विधिकारक, संगीतकार आदि का निर्धारण, वरघोडा व्यवस्था, रंगोली आदि में ऑल राउंडर ललित कवाड का योगदान रहा। परिसर निर्माण में गौतमजी कवाड, निहालजी ललवानी आदि का पूर्ण सहयोग रहा। लगभग दो बजे कार्यक्रम का परिसमापन हुआ।

दोपहर में शांतिस्नात्र महापूजन सम्पन्न होने के साथ ही सामूहिक वर्षीतप के लक्ष्य से तिरूपात्तुर की ओर विहार हो गया।

13 मार्च, 2015 को शुभ वेला में पार्श्वनाथ के जयकारों के साथ सैकड़ों जैन-जैनेतर श्रद्धालुओं ने मंदिर का द्वारोद्घाटन कर दर्शन-वंदन का लाभ प्राप्त किया। 10 बजे दादा गुरुदेव की पूजा पढ़ाई गयी।

एक तरह से यह अंजनशलाका-प्रतिष्ठा महोत्सव इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया।

प्रतिष्ठा के बाद सप्ताह में 3-4 बार कर्मठ कार्यकर्ता श्री गौतमचन्दजी कवाड तिरूपात्तुर तेनम्पट्ट जाते हैं एवं वहाँ के तमिलवासियों को जैन धर्म का बोध देते हुए चैत्यवंदन विधान, आरती, अष्टप्रकारी पूजा, नवांगी पूजा आदि का ज्ञान देकर के जैन बना रहे हैं। उनके इस पुण्यकारी कार्य में लक्ष्मण कवाड़, अभिषेक कवाड़, प्रियंका कवाड़, दीपिका कवाड़, हर्षित ललवाणी का सक्रिय योगदान मिल रहा है। अजैन लोग अत्यन्त उत्साह, श्रद्धा और आनन्द के साथ इन आत्मोत्थानकारी क्रियाओं को जीवन में अपना रहे हैं। नवांगी पूजा, आरती आदि विधान वे स्वयं कर रहे हैं। शासन की प्रभावना हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

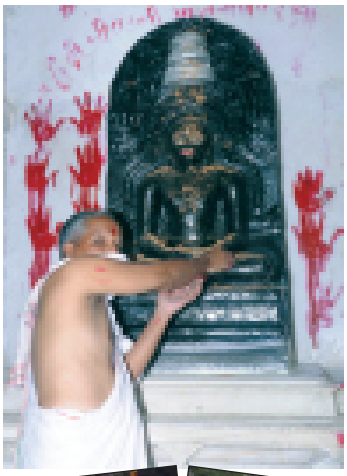

116
विहार डायरी

पालीताना चातुर्मास से जुड़े अनुभवों का लेखन हो रहा है। खरतरवसही उर्फ चौमुखजी का पाटिया लगने के साथ सेठ आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी के साथ चल रहा विवाद समाप्त हो गया था। पर इस प्रकरण ने गच्छ को जागृत करने में बहुत भूमिका निभाई थी। यह अलग बात है कि जितना जोश प्रारंभ में दिखाई देता था, समय के बहाव के साथ बहुत जल्दी ठण्डा पड़ गया था, ऐसा बाद के इतिवृत्त से पता चलता है।

खरतरगच्छ समिति, जिसका गठन गच्छ की एकता, विकास आदि के लक्ष्य से पूज्य आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरिजी म.सा. की निश्रा में किया गया था, दो तीन वर्षों के बाद वह समिति कागजों तक सीमित रह गई। समिति के द्वारा विशेष कार्य नहीं हो पाया। आज अनुमान लगाया जा सकता है कि यदि वह समिति आज तक सक्रिय रहती तो गच्छ की स्थिति आज कुछ अलग ही होती।

इस बात का उल्लेख गच्छ के वरिष्ठ श्रावक श्री कपूरचंदजी श्रीमाल, जो अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के संस्थापक अध्यक्ष रहे, ने श्री हरखचंदजी नाहटा को लिखे पत्र में किया है। उन्होंने गच्छ के संगठन का इतिहास इस पत्र में छापा है।

उनका अक्षरश: पत्र इस प्रकार है–

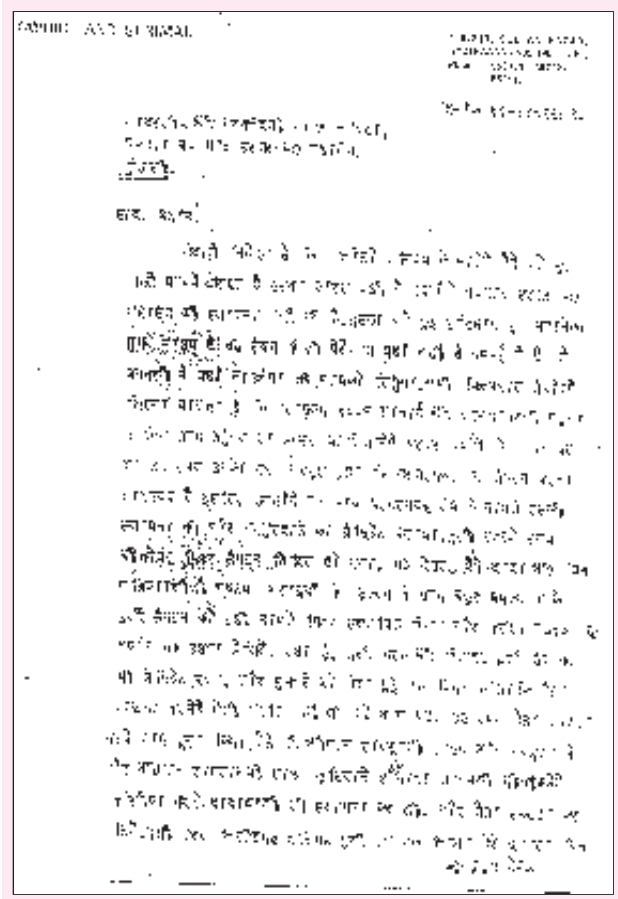

ता. ११.११.१९९२

आदरणीय श्री हरकचंदजी साहब नाहटा,

अध्यक्ष अ.भा. खरतरगच्छ महासंघ

दिल्ली

सादर प्रणाम,

सेवा में निवेदन है कि फोटो परिचय के बारे में मैंने जो कुछ पहले लिखा है, उसका कारण यही है कि मैंने अ.भा. खरतरगच्छ महासंघ की स्थापना नहीं की है, इसका जो कुछ इतिहास उस जमाने का मुझे मालुम है, वह संवत मिती मेरे पास यहाँ नहीं है, बम्बई में है। मैं जनवरी में वहाँ जाऊँगा, तब आपको लिखूंगा।

अभी फिलहाल संक्षेप में लिखना चाहता हूँ कि परम पूज्य १००८ आचार्य श्री हरिसागरजी म.सा. ने जिस समय शत्रुंजय का प्रकरण पालीताने में खरतरवसही के बाबत चलाया था, उस समय उनको यह महसूस हुआ कि खरतरगच्छ का संघटन करना आवश्यक है, इसलिये उन्होंने अ.भा. खरतरगच्छ संघ

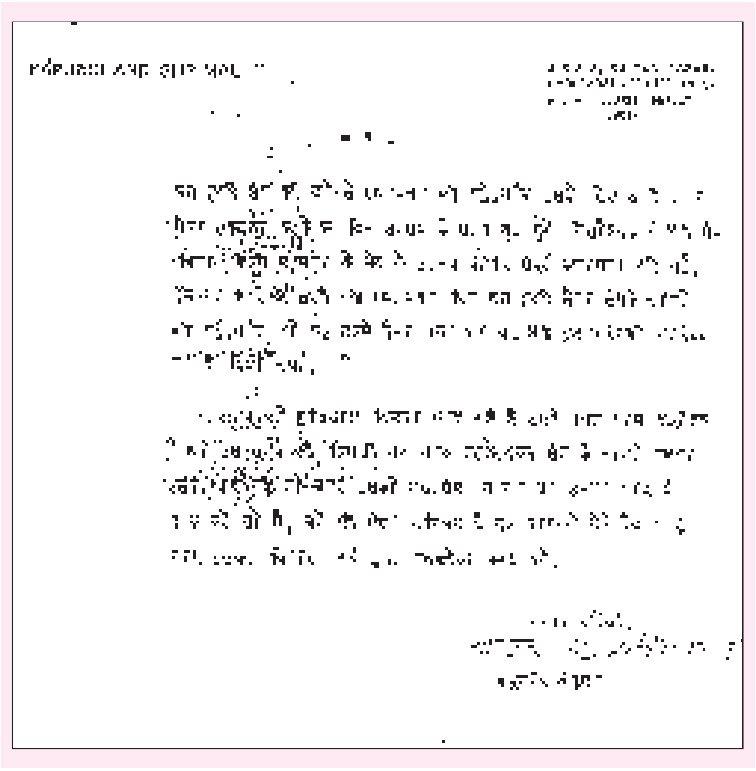

(समिति) के नाम से उसकी स्थापना की और जयपुर वाले को प्रेसिडेंट बनाया। समय बीतने पर फिर संघटन शिथिल हो गया, यह देखकर मैंने दादा श्री जिन मणिधारीजी अष्टम शताब्दी के उत्सव के समय बहुत प्रयत्न करके इसी संघटन को इसी नाम से फिर स्थापित किया और करीब ८-१० वर्ष तक उसका प्रेसिडेंट रहा हूँ।

इसी तरह श्री जिनदत्तसूरि संघ का भी प्रेसिडेंट रहा, और मुझसे जो सेवा हुई, वह किया। हाँलाकि पैसा एकट्ठा करने में मेरी नीति नहीं थी, जो काम पड़ा, उस समय पैसा इकट्ठा करके कार्य पूरा किया। जैसे भी श्रीमान राजरूपजी साहब टांक, जयपुर वाले और श्रीमान रामलालजी साहब लूणिया ने चौथा दादा साहब की बिलाडे में कोशिश करके दादावाड़ी की स्थापना कर दी और पैसा एकट्ठा कर लिये।

इसी तरह चितौडगढ़ हरिभद्रसूरि स्मारक, जिसकी मेरे द्वारा जिनदत्तसूरि संघ की ओर से स्थापना की गई। और इसके लिये उसी समय पैसा एकट्ठा करके ८ दिन उत्सव के साथ वह पूरे चित्तौडगढ़ के श्री संघ बिना किसी आमना के भेद के उत्सव आदि संपूर्ण स्थापना की गई। जिसका हरिभद्रसूरि की स्थापना जिनदत्तसूरि सेवा संघ के नाम से की गई। और जो कुछ उसमें पैसा बचा था वह श्री गुलाबचंदजी गोलेच्छा को दे दिया गया।

आप जो इतिहास लिखना चाह रहे हैं, उसमें अगर आप जहाँ तक मैं था, उस समय की स्थिति अ.भा. खरतरगच्छ संघ के नाम से किया, उसके बाद की जो आप उसको महासंघ बनाया था, उसका बाद में जिक्र करें तो मैं, जो भी मेरा परिचय है, वह आपको देने तैयार हूँ। आप इस पर विचार करके मुझे लिखने का कष्ट करें।

आपका स्नेही,

कपूरचंद श्रीमाल

इस पत्र से काफी ऐतिहासिक जानकारी मिलती है। कितना अच्छा होता, इस टूंक की व्यवस्था खरतरगच्छ संघ के हाथों में होती। गिरिराज की समस्त टूंकों की व्यवस्था सेठ आणंदजी कल्याणजी पेढ़ी के पास नहीं है। नरशी केशवजी की टूंक, सेठ मोती शा टूंक आदि कई टूंकों की व्यवस्था स्वंतत्र रूप से अलग ट्रस्ट कर रहे हैं।

अभी पेढ़ी द्वारा खरतरवसही में काफी देहरियों का जीर्णोद्धार कराया जा रहा है। परिणाम स्वरूप पूरा इतिहास परिवर्तित हो रहा है।

इस संबंध में हमने पेढ़ी को पत्र दिया था कि जीर्णोद्धार होना चाहिये, पर इतिहास को सुरक्षित रखने के लिये उसकी पुनः प्रतिष्ठा खरतरगच्छ के ही साधुओं द्वारा होनी चाहिये। इस पत्र का कोई उत्तर नहीं आया।

खरतरगच्छ की इस संबंध में जागरूकता भी नहीं है। खरतरवसही में अन्य गच्छीय आचार्यों द्वारा पुनः प्रतिष्ठा कराये जाने के शिलालेख प्रवेश द्वार की भित्ति पर लगे देखे जा सकते हैं। (क्रमशः)

।। श्री संभवनाथाय नमः ।। ।। श्री शीतलनाथाय नमः ।।

।। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी-जिनचन्द्र-जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ।।

।। पू. गणनायक श्री सुखसागर-जिनहरि-जिनकवीन्द्र-जिनकान्तिसागरसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ।।

श्री पादरू नगर (राजस्थान)

की पावन धरा पर

श्री शीतलनाथ जिन मन्दिर एवं

श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी प्रतिष्ठा की

27 वीं वर्षगांठ-ध्वजारोहण सह

रत्नत्रयी महोत्सव प्रसंगे

सकल श्री संघ को सादर आमन्त्रण

आशीर्वाद

पूज्य गुरुदेव मरूधर मणि उपाध्याय प्रवर

श्री मणिप्रभसागरजी म.सा

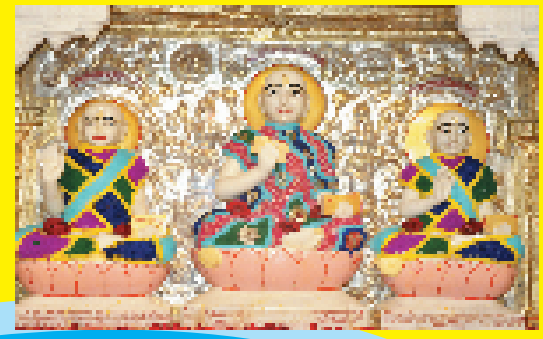

ध्वजारोहण दिवस

ज्येष्ठ सुदि 10 गुरुवार

दिनांक 28.5.2015 प्रातः 8.00 बजे

अध्यक्ष

बी. कैलाश संकलेचा- 094447 11097

सचिव

एच. नेमीचंद कटारिया- 098410 85511

कोषाध्यक्ष

एच. मोहनलाल गुलेच्छा- 092473 35577

निवेदक : **श्री शीतलनाथ भगवान एवं श्री जिनकुशल सूरि दादावाड़ी ट्रस्ट**

मैन रोड, पादरू-344801, जिला बाड़मेर, राजस्थान

जैन जगत में नवपद की महिमा अपरम्पार है!

प्रस्तुति : जहाज मन्दिर परिवार

नवपद: 1.अरिहंत 2.सिद्ध 3.आचार्य 4.उपाध्याय 5. साधु 6.दर्शन 7.ज्ञान 8.चारित्र 9.तप!!

यह आराधना वर्ष में दो बार आयंबिल तप के द्वारा की जाती है!

1. चैत्र सुदी 7 से 15 (पूनम)
2. आसोज सुदी 7 से 15 तक!

नवपद ओली आराधना का प्रारंभ आसोज माह से किया जाता है, एवं कुल 9 ओली अर्थात् चाढे चार वर्ष तक कुल 81 आयंबिल के साथ यह तप पूर्ण होता है! नवपद आराधना में आज प्रथम पद में अरिहंत पद की आराधना की जाती है

अरि यानि शत्रु

हंत यानि नाश करने वाले.....

शत्रुओं का नाश करने वाले अरिहंत कहलाते हैं.....

अरिहन्त अपने कर्म रूपी शत्रु का नाश करते हैं.....

अगर अरिहंत नहीं होते तो करूंणा का इतना प्रचार नहीं होता। धर्म का ज्ञान नहीं होता।। शासन की स्थापना नहीं होती।।

अरिहंत परमात्मा के बारह गुण

1. अशोक वृक्ष- जो परमात्मा के शरीर से 12 गुना बड़ा होता है।।
2. सुर पुष्प वृष्टि- परमात्मा के विचरण क्षेत्र में देवता विविध फूलों की बरसात करते हैं।।
3. दिव्य ध्वनि- विविध वाद्य यंत्रों को बजाकर देवता दिव्य नाद करते हैं।।
4. चामर युगल- अरिहंत प्रभु के दोनों तरफ देवता खड़े खड़े चामर से प्रभु की सेवा करते है।।
5. स्वर्ण सिंहासन- प्रभु के बैठने के लिए दिव्य

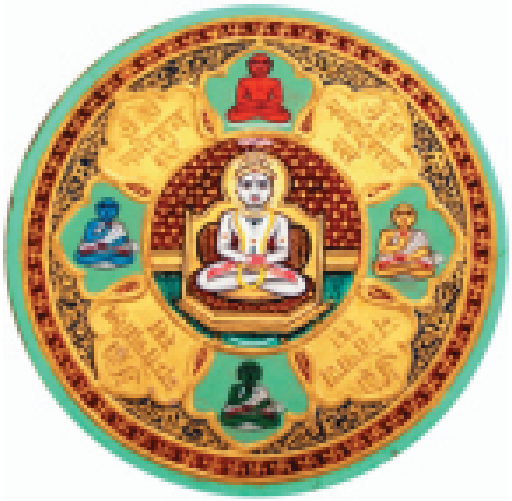

सिंहासन की रचना देवता करते हैं।।

6. भामंडल- प्रभु के मस्तक के पीछे सूर्य के समान जो आभामंडल होता हैं, जिसे भामडंल कहते है।।

इस भामंडल के द्वारा ही हम अरिहंत प्रभु मुख को निहार सकते हैं।

7. देव दुंदुभि- से दिव्य नाद देवता सभी दिशाओ में प्रभु की जय जयकार करते है।।
8. छत्र- प्रभु के सर के ऊपर 3 छत्र की रचना देवता करते है।

कर्मक्षय से प्रकट होने वाले गुण 1. ज्ञानातिशय 2. पूजातिशय 3. वचनातिशय 4. अपायापगमातिशय।।

ऐसे गुण संपत्ति वाले देव देवेंद्रो से पूजित, तीन लोक के आधार अरिहंत परमात्मा को मैं नमस्कार करता हूँ। जगत में पूजनीय वंदनीय सेवनीय और तारने वाले ये एक ही उत्तम आत्मा है।।

ऐसे सोचकर नवकार के प्रथम पद से हमे अरिहंत परमात्मा को भाव पूर्वक वंदन करना चाहिए।

With best compliments from

संघवी अशोक एम. भंसाली

M.A.ENTERPRISES

Mfrs. of Stainless Steel Sheet (Patta-Patti)

FACT. & ADMINISTRATIVE OFFICE :
508, G.I.D.C. Industrial Estate,
Mehdabad Highway Road,
Phase IV, VATVA,
AHMEDABAD - 382 445
Tel. : 91-79-25831384, 25831385
Fax : 91-79-25832261
Email : maenterprisesadi@gmail.com
enquiry@ma-enterprises.com
Website : www.ma-enterprises.com

29
श्रमण चिंतन

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

तप की युक्ति, भव से मुक्ति

सर्वेषामपि पापानां, प्रवज्या शुद्धिकारिका।
जिनोदिता ततः सैव, कर्त्तव्या शुद्धिमिच्छता।।

प्रव्रज्या समस्त पापों की शुद्धि करने वाली है, अतः जिनेश्वरों के द्वारा उपदिष्ट प्रव्रज्या उनके लिये अंगीकार करने योग्य है, जो आत्म-शुद्धि के अभिलाषी हैं।

दशवैकालिक सूत्र की प्रथम चूलिका के अठारह पदों में से अन्तिम पद की व्याख्या करते हुए कहते हैं-**'पावाणं च खलु भो! कडाणं कम्माणं पुव्वि दुच्चिन्नाणं दुप्पडिक्कंताणं वइत्ता मुक्खो नत्थि अवेइत्ता तवसा वा झोसइत्ता।'**

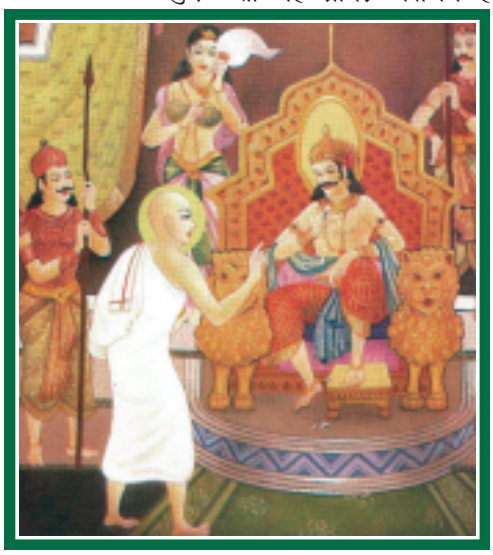

अर्थात्-पूर्वकृत पाप कर्मों का यदि क्षय करना है तो दो ही विकल्प हैं-

1. समाधि पूर्वक कर्मों को भोगना।
2. तप की उत्तम साधना करना।

देख! मुनि। ये दोनों ही विकल्प गृहस्थ के लिये सुलभ नहीं है क्योंकि वहाँ समाधि देने वाले गुरूजनों, चिन्तन देने वाले शास्त्रों और समता देने वाले विचारों का अभाव होता है।

गृहवास में तपाराधना भी दुष्कर ही है। वहाँ प्रतिक्षण भोगों की वासना सताती है, व्यापार की चिन्ता उद्विग्न बनाती है और परिवार की अव्यवस्था विघ्न उत्पन्न करती है।

माना कि पूर्वोपार्जित पाप कर्म के कारण तेरे शरीर में शाता नहीं है, शुद्ध गौचरी सुलभ न हो पाने के कारण क्षुधा-तृषा परीषह सह पाना तेरे लिये दुष्कर हो रहा है, शीतोष्ण परीषहों की पीडा भी तुझे आकुल और व्याकुल कर रही है पर वे कर्म तूंने बाधे हैं तो भोगने भी तुझे ही होगे पर तूं यदि ऐसा सोचता है कि संसार में जाकर मैं सुखी बन जाऊँगा तो यह प्रायः असंभव ही है क्योंकि **'कडाण कम्माण मोक्खो नत्थि'** कृत कर्मों को भोगे बिना छुटकारा नहीं है।

वत्स! कर्म कर्त्ता का अनुगमन करते हैं। कोई व्यक्ति चाहे गुफा में छिप जाये या जंगल में भाग जाये पर कर्म स्वतः उसके पास चले आते हैं। अतः मुनि! मेरी हिदायत तो यही है कि तूं संयम धर्म का परित्याग मत कर क्योंकि तप-जप, ज्ञान-ध्यान और त्याग-वैराग में वीर्य और शक्ति प्रयोग करके कर्मों का जो क्षय यहाँ हो सकता है, वह गृहस्थावस्था में संभव नहीं है।

वहाँ निर्जरा और संवर की आराधना तो क्या होगी अपितु नये कर्म न बंधे तो भी बहुत बडी बात होगी।

तेरी अशाता और कष्टों के विष को समाधि तथा शान्ति के अमृत में रूपान्तरित करने वाले गुरू का वरदहस्त जब तेरे माथे पर है, तब तुझे किसी भी प्रकार से चिन्तित और

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं पूजनीया साध्वी श्री विराग-विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा 3 कन्याकुमारी प्रतिष्ठा के पश्चात् विहार कर नागरकोइल, तिरूनेलवेली होते हुए ता. 14 मार्च 2015 को मदुराई पधारे। श्री नया सुमतिनाथ संघ द्वारा पूज्यश्री का सामैया किया गया। पूज्यश्री के प्रभावशाली प्रवचन के पश्चात् प्रभावना दी गई।

ता. 15 मार्च को आराधना भवन में प्रवचन हुआ। ता. 16 को तेरापंथ भवन में प्रवचन आयोजित किया गया। ता. 16 की शाम को विहार कर ता. 22 मार्च को पूज्यश्री तिरूच्चिरापल्ली पधारे। ता. 22 को शहर मंदिर में बिराजे। उनकी पावन निश्रा में श्री संघ द्वारा श्री नाकोडा भैरव महापूजन पढाया गया। इस अवसर पर श्री ताराचंदजी खेतमलजी राखेचा परिवार द्वारा पूज्यश्री की निश्रा में मूलनायक परमात्मा को असली हीरों से स्वर्ण में निर्मित तिलक अर्पण किया गया।

ता. 23 को विहार कर श्रीमती शोभाजी श्रीपालजी कोटडिया के गृहांगण में पगले करते हुए दादावाडी प्रवेश किया। दादावाडी संघ द्वारा सकल संघ हेतु अल्पाहार की व्यवस्था की गई। प्रवचन के पश्चात् दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई तथा स्वामिवात्सल्य का आयोजन किया गया। लाभार्थी परिवारों द्वारा परमात्मा मुनिसुव्रतस्वामी, परमात्मा पार्श्वनाथ, आदिनाथ एवं दादावाडी में दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि, मणिधारी जिनचन्द्रसूरि, जिनकुशलसूरि तथा शांति गुरु मंदिर में योगीराज श्री शांतिसूरिजी म. की चौमुख प्रतिमाजी को शुद्ध स्वर्ण मयी कपाल पट्टिका, बाजुबंध आदि अर्पण करने का विधान किया गया।

शाम को पूज्यश्री विहार कर श्री पारसमलजी पन्नालालजी घनश्यामजी देवराजजी नवीनजी गिडिया परिवार के घर पधारे। परिवार द्वारा सकल श्री संघ हेतु अल्पाहार का आयोजन किया गया। रात्रि प्रवास पूज्यश्री का श्री पारसमलजी सिरेमलजी गिडिया परिवार के घर पर हुआ। गिडिया परिवार पूजनीया खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. का सांसारिक संबंधी परिवार है। दीक्षा ग्रहण के बाद पूजनीया साध्वी श्री विश्वज्योतिश्रीजी म. प्रथम बाद उनके घर पर पधारे।

ता. 24 मार्च को तिरूच्चिरापल्ली से विहार कर ता. 30 मार्च को तिरूकोविलूर पधारे। जहाँ पूज्यश्री के प्रवचन का आयोजन किया गया। वहाँ से विहार कर ता. 1 अप्रेल को तिरूवन्नामल्लै नगर में प्रवेश हुआ। ता. 2 को परमात्मा महावीर जन्म कल्याणक समारोह के पश्चात् पूज्यश्री ने विहार किया। ता. 5 को टिण्डीवनम् पधारेंगे। वहाँ से ता. 10 या 11 को वडपलनी चेन्नई पधारेंगे। धर्मनाथ जिन मंदिर प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह निमित्त ता. 15 अप्रेल 2015 को धर्मनाथ मंदिर में प्रवेश होगा।

संपर्क : पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

द्वारा कैलाश बी. संखलेचा

नवनिधि एण्टरप्राइजेज

384, मिन्ट स्ट्रीट, ऑफिस 29, दूसरा माला, चेन्नई- 600079 (तमिलनाडु)

संपर्क- कैलाश- 094447 11097 / मुकेश- 09784326130 / 96264 44066

विचलित होने की भला क्या जरूरत है?

संयम का मंत्र ही ऐसा है कि जिससे सारे उपसर्ग स्वयमेव अमृततुल्य सुख प्रदायक बन जाते हैं। फिर कर्मों को भोग कर मुक्त होने के दोनों ही उपाय संयम जीवन में सुलभ हैं। तप ऐसा अमोघ शस्त्र है, जो कर्म-कवच को भेद डालता है। तीव्र तप की साधना ने अनेक भारीकर्मी आत्माओं को मोक्ष की लघुता प्रदान की है।

卐 प्रतिदिन सात पंचेन्द्रिय प्राणियों की हिंसा करने वाला अर्जुनमाली छह माह तक उग्र तप में तपकर शुद्ध बना।

卐 ब्राह्मण, गाय आदि पर दृढ प्रहार करके महाकर्म बांधने वाला दृढप्रहारी की मुक्ति में भी तप ही उपकारी तत्त्व था।

卐 वर्षों तक संसार के भोग भोगने वाले अरणिक मुनि भी तपाराधना के कारण वांछित फल को प्राप्त कर सके।

卐 तप के कारण सुन्दरी को दीक्षा की अनुमति मिली तप से ही ढंढण और धन्ना अणगार यशस्वी बने।

पर ! तूं यदि घर पर जायेगा तो तप कैसे कर पायेगा?

व्यवसाय से थका हारा तूं तप की निधि गंवा बैठेगा। भोगों में अपनी शक्ति का अपव्यय करके पुनः शक्ति प्राप्त करने के लिये अभक्ष्य भक्षण, रात्रि भोजन आदि अनेकानेक दोषों से लबालब भरा तेरा जीवन होगा, तब तूं छोटे से नवकारसी तप की बात स्वप्न में भी नहीं सोच सकेगा।

मेरा कहा मान, मत छोड तपोमय जीवन का अमूल्य रतन। क्योंकि तपाग्नि में निबिड, कठोर और घोर कर्मों को ग्रन्थियाँ भी अतिशीघ्र भस्मीभूत हो जाती हैं। जितना तुझे समझा सकता था, उतना मैंने समझा दिया। अब जानबुझकर तूं कुएँ में कूदेगा या विषधर के मुंह में डालेगा तो तुझे भगवान भी नहीं बचा पायेगा।

37
संस्मरण

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

ऐसे थे मेरे गुरूदेव

पूज्य गुरुदेव श्री के हृदय में दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी म.सा. के प्रति अपार श्रद्धा थी। दादा गुरुदेव उनके रोम रोम में समाये हुए थे। एक मात्र वे ही इष्ट देव थे। पूज्यश्री ने उनके अतिरिक्त और किसी भी देवी देवता की कोई साधना नहीं की।

पूज्यश्री कहीं पर भी होते, यदि वहाँ दादावाड़ी होती या किसी मंदिर में दादा गुरुदेव की प्रतिमा या चरण होते तो वहाँ दर्शन किये बिना पच्चक्खाण नहीं पारते।

गुरुदेवश्री ने एक बार मेरे सामने मद्रास चातुर्मास का वर्णन किया था। वि.सं. 2014 अर्थात् सन् 1957 का उनका चातुर्मास मद्रास में हुआ था। दो मुनि थे। पूज्यश्री एवं उनके शिष्य सम गुरुभ्राता पूज्यश्री दर्शनसागरजी म.!

मद्रास में जूना मंदिर में चातुर्मास हुआ था। पूज्यश्री बताते थे कि जूना मंदिर से दादावाड़ी की दूरी लगभग 2 कोस थी। दो कोस अर्थात् चार माइल-छह किलोमीटर लगभग। प्रतिदिन दादावाड़ी जाना संभव नहीं था। पर हर सोमवार को दादावाड़ी दर्शन करना उनका नियम था।

सुबह सूर्योदय के समय प्रस्थान करते। वापस आकर नवकारसी करके प्रवचन फरमाया करते थे। एक सोमवार भी पूज्यश्री का खंडित नहीं हुआ। प्रारंभिक सोमवारों में तो 5-7 लोग ही साथ चलते थे। पर धीरे धीरे जब लोगों को पता चलने लगा तो साथ चल कर दर्शन

करने वालों की संख्या लगातार बढ़ती गई। पर्युषण के बाद के सोमवारों को 50 से अधिक लोग पूज्यश्री के साथ पैदल चल कर दर्शन करते।

और ऐसा नहीं कि पूज्यश्री 5-7 मिनट में वापस रवाना हो जाते। गुरुदेव की भक्ति में कम से कम आधा घंटा तो लगता ही था।

जब मेरा चातुर्मास चैन्नई हुआ तो कई बुजुर्ग लोग इस घटना का वर्णन करते थे, जो स्वयं साक्षी थे। यह सब दादा गुरुदेव की कृपा का ही परिणाम था कि वे लगातार सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते गये। उनके जीवन में जो भी चमत्कार घटित होते, पूज्यश्री उन सभी के लिये दादा गुरुदेव की प्रत्यक्ष / परोक्ष कृपावत्सलता को ही कारण मानते थे।

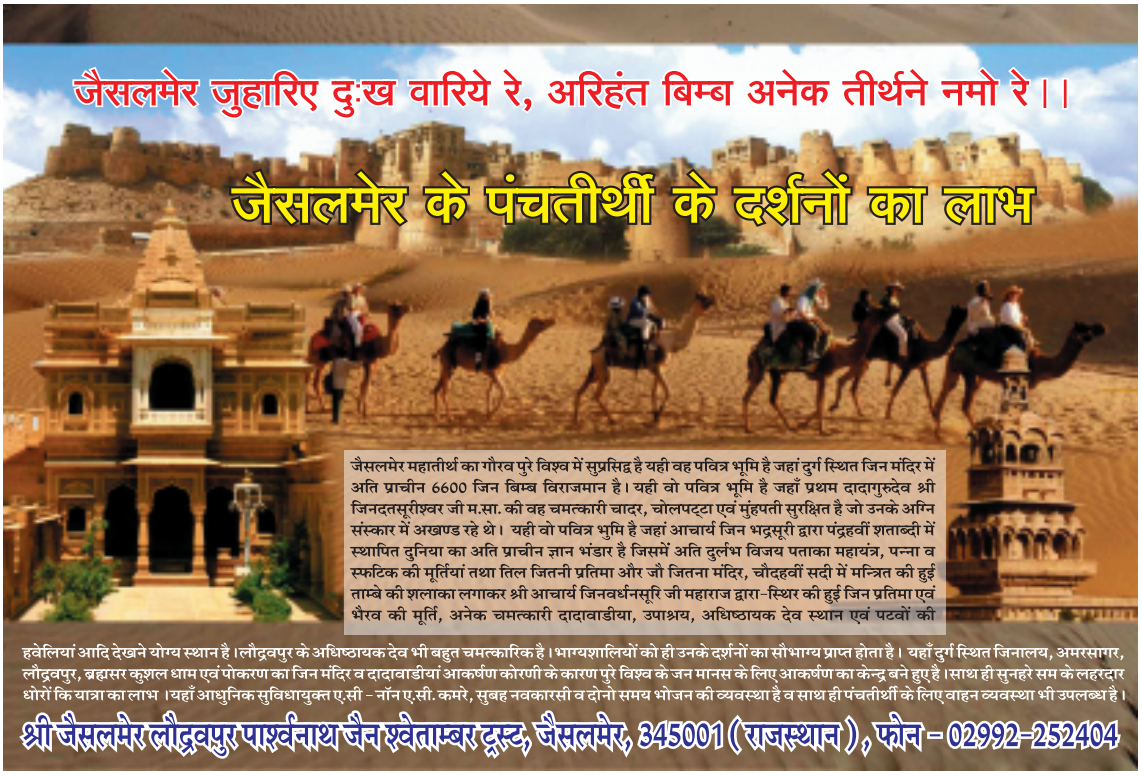

मधुर संस्मरण

साध्वी
डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा.

मेरे बारे में मेरी अनुभूति

जिस क्षेत्र का नाम वर्षों से सुन रहे थे, आज हम उस क्षेत्र की सीमाओं में पहुँच रहे थे। इस वर्ष लम्बे समय से चल रही विनंती को विराम देते हुए पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. ने छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर को चातुर्मास की स्वीकृति दी थी। मेरा चातुर्मास नंदुरबार था। उपाध्याय श्री ने मुझे दक्षिण की ओर विहार करने से रोकते हुए कहा-दक्षिण आकर रायपुर पहुँचने की अपेक्षा तुम्हें नंदुरबार से ही रायपुर पहुँच जाना चाहिये।

आज्ञा पालन करते हुए मैं मालेगाँव पहुँची। मालेगाँव में बाड़मेर ग्रुप को पाकर भावजगत पुलकित हो उठा। यद्यपि बाड़मेर मेरी जन्मभूमि नहीं है, फिर भी बाड़मेर के प्रति विशेष लगाव रहा है क्योंकि मेरी गुरूवर्या श्री का स्वर्गवास बाड़मेर में हुआ था। फिर कुशल वाटिका का निर्माण बाड़मेर में होने के बाद तो बाड़मेर और भी अपना हो गया।

दादावाडी ट्रस्ट, बाड़मेर संघ, मालेगाँव अत्यंत श्रद्धा भक्ति से हमारे साथ जुड़ा। सप्ताह भर का प्रवास करके हम जलगाँव, धुलिया, आकोला, अमरावती, भद्रावती होते हुए क्रमशः फरवरी के तीसरे सप्ताह में राजनांदगाँव पहुँचे।

राजनांदगाँव आते ही एक नाम स्मृति पटल पर उभर आया। आज से 16/17 वर्ष पूर्व जब मैं दिल्ली प्रवास कर रही थी, उस समय राजनांदगाँव के श्री इन्द्रचंदजी वैद मेरे परिचय में आये थे। लम्बा कद.... छरहरी काया.... अत्यंत सादगी भरा पहनावा.....। वे नेताजी के नाम से ज्यादा प्रसिद्ध थे।

आज भी मेरी स्मृति में है, जब वे मेरे पास पधारे थे। विधिवत् वंदन करने के बाद कहा- आपके श्रीमद् देवचंद्रजी के स्तवनों पर लिखे अनुवाद का मैं अभी स्वाध्याय कर रहा हूँ। यह पूर्वार्ध है। मेरा निवेदन है इसका उत्तरार्ध जब भी प्रकाशित हो, मुझे अवश्य याद करें।

चूंकि वे राष्ट्रीय कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य थे, अतः दिल्ली में उनका प्रवास होता रहता था। एक ओर वे राष्ट्रीय स्तर की समिति के सदस्य, दूसरी ओर उनकी इतनी गहरी स्वाध्याय रूचि। मुझे उनकी स्वाध्याय रूचि से आनंद तो हुआ, पर साथ ही आश्चर्य भी हुआ। धीरे-धीरे परिचय बढ़ा।

परिचय बढ़ने पर मुझे पता चला वे कहीं भी रहें, चाहे दिल्ली अथवा जन्मभूमि में, जब तक पाँच सामायिक नहीं कर लेते, तब तक मुँह में पानी भी नहीं डालते। मैं सोचने लगी- कहाँ चारों ओर अनेक-अनेक प्रकार के बहाने खोजकर एक सामायिक से भी बचने की मानसिकता और कहाँ यह पापभीरू श्रावक कि आने वाले सारे बंधनों को अपने संकल्प से काटकर एक दो नहीं, बल्कि एक साथ पाँच सामायिक की प्रतिज्ञा।

मैंने देखा था- नेताजी अपना आवश्यक कार्य संपन्न हुआ कि सामायिक लेकर स्वाध्याय शुरू कर देते। सामायिक की समता उस समय तो उनके चेहरे पर छितरायी हुई होती ही थी, पर उसके बाद भी उसका तेज... उसका आनंद..... उनके स्वभाव में स्पष्टतः परिलक्षित होता था।

राजनांदगाँव पहुँचने पर नेताजी की चर्चा तो होनी ही

थी। स्थानीय लोगों ने बताया- उनकी प्रशंसा में हम जितने भी शब्द कहेंगे, वे सारे उनके व्यक्तित्व के समक्ष फीके ही लगेंगे। वे पंथ की अपेक्षा से स्थानकवासी थे पर उन्होंने कभी मंदिर, स्थानक का भेद नहीं किया। सामायिक वे स्थानक परम्परा की लेते, पर घण्टों परमात्मा पार्श्वनाथ के दरबार में भक्ति करते थे।

राजनांदगाँव में कोई भी सामाजिक कार्यक्रम हो, उनका सदैव यही कथन रहता- आप समाज से फंड एकत्र करें और व्यवस्था में जितना भी कम पड़े, सारी राशि मेरे से ले लें। उनकी उदारता जितनी अनुमोदनीय थी, उतना ही तरीका भी श्रेष्ठ था। वे गुप्तदान पसंद करते थे।

साधु वैयावच्च में तो उनकी कोई तुलना ही न थी। गाँव में या वे जहाँ भी जाते, अगर वहाँ किसी भी संप्रदाय के कोई गुरू भगवंत होते तो वे दर्शन अवश्य ही करते थे।

यहाँ तक कि जब उनके स्वास्थ्य में प्रतिकूलता हुई और उन्हें हॉस्पिटल ले जाया गया, तब उन्होंने परिवार के सामने नाराजगी प्रकट करते हुए कहा कि उन्हें बिना गुरू भगवंत की मांगलिक सुनाये यहाँ क्यों लाया गया?

यद्यपि वे शरीर की अपेक्षा आज संसार में उपस्थित नहीं हैं, पर छत्तीसगढ़ के लोगों में उनकी सज्जनता, उदारता और परोपकार वृत्ति कायम रहेगी। उन्हें मात्र जैन समाज या हिन्दु समाज ही याद करे, ऐसा नहीं है बल्कि उन्हें मुस्लिम समाज भी अत्यंत सम्मान और अपनत्व से याद करता है।

उनके परिचित ने मुझे बताया था कि हम क्या चर्चा करें, वे हमारे संघ के नहीं बल्कि पूरे क्षेत्र के अनमोल रत्न समान थे। वे हिन्दू समाज के लिये तो अपनी उदारता का रास्ता खोलते ही थे पर मुस्लिम समाज के लिये वे उतने ही सहयोगी थे। वे एक ही बात करते थे, आप मेरा पूरा उपयोग करें। बस निवेदन इतना ही है कि उसमें सात्विक सामग्री का उपयोग हो। भोजनादि सर्वथा निरामिष हो।

निसंदेह उनकी अनुपस्थिति ने छत्तीसगढ़ में एक शून्यता.... एक रिक्तता भरी है। मानवता के ऐसे उत्कृष्ट और जीवंत उदाहरण इस अर्थ प्रधान युग में प्राप्त होना सौभाग्य का सूचक है।

मेरी उस प्रभु महावीर के आज्ञानिष्ठ उच्चकोटि के श्रावक रत्न श्री नेताजी की आत्मा के प्रति हार्दिक मंगलकामना है कि वे जहाँ भी हों, प्रभु के शासन का पूर्णतः लाभ लेते हुए शीघ्र ही सिद्धत्व को प्राप्त करें।

क्रमशः

पू. साध्वी गुरूवर्या श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से निर्मित

श्री मुनिसुव्रतस्वामी मंदिर दादावाडी तीर्थ से सुशोभित

श्री जिनकुशल हेम विहारधाम

जोधपुर-जालोर मुख्य मार्ग पर, जोधपुर से 90 कि.मी., जालोर से 50 कि.मी.।
आवास भोजन की सुन्दर व्यवस्था। दर्शन, पूजा हेतु अवश्य पधारें।

निवेदक- शा. केवलचन्दजी छोगालालजी संकलेचा परिवार

संपर्क- 099784 02271, 099505 22754

छाजेड गोत्र का गौरवशाली इतिहास

उपा. श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

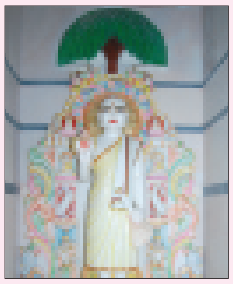

वि. सं. 1215 की यह घटना है। सवियाणा गढ जो वर्तमान में गढ़सिवाना के नाम से प्रसिद्ध है, में राठौड वंश के काजलसिंह रहते थे। वे रामदेवसिंह के पुत्र थे।

प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि के शिष्य मणिधारी दादा श्री जिनचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. विहार करते हुए सवियाणा में पधारे। उनके त्याग, तप, विद्वत्ता, साधना की महिमा श्रवण कर काजलसिंह का मन उनके प्रति आकृष्ट हो गया। उनका धर्मोपदेश श्रवण करने के लिये वह प्रतिदिन उपाश्रय में जाने लगा। किसी जैन मुनि के प्रवचन श्रवण करने का यह उसका प्रथम अवसर था। उसका मन धर्म में अनुरक्त हो गया।

उसने एक बार गुरुदेवश्री के प्रवचन में स्वर्णसिद्धि की बात सुनी। इस पर उसे विश्वास नहीं हुआ।

उसने गुरुदेव से पूछा- क्या स्वर्णसिद्धि हो सकती है!

गुरुदेव ने कहा- साधना से सब कुछ हो सकता है। चित्त की एकाग्रता के साथ यदि ध्यान साधना की जाये तो सब कुछ संभव है।

उसने कहा- गुरुदेव! मैं चमत्कार देखना चाहता हूँ। आप तो महान् साधक हैं। कोई चमत्कार बताईये।

गुरुदेव ने कहा- हम जैन साधु है। हमने सावद्य क्रिया का त्याग किया है। हम चमत्कार नहीं दिखा सकते।

काजलसिंह ने कहा- गुरुदेव! मुझे तो चमत्कार देखना ही है। आपको चमत्कार दिखाना ही पडेगा। गुरुदेव! यदि आपने कोई चमत्कार दिखाया तो मैं अपने परिवार और मित्रों के साथ आपका अनुयायी हो जाउँगा। मैं जैन बन जाउँगा।

मणिधारी दादा गुरुदेव ने सोचा- यदि यह व्यक्ति वीतराग परमात्मा का अनुयायी बनता है, तो यह शासन की बहुत बडी प्रभावना होगी। क्योंकि यह प्रभावशाली व्यक्ति है। इसके साथ हजारों लोग जैन बनेंगे। मांस मदिरा का त्याग करके अहिंसक बन जायेंगे।

मणिधारी गुरुदेव ने कहा- अच्छा! दीपावली की रात्रि में मेरे पास आना।

दीपावली की मध्य रात्रि में काजलसिंह को अभिमंत्रित वासचूर्ण देने हुए कहा- सूर्योदय से पूर्व इस वासचूर्ण को जहाँ जहाँ डालोगे, वह सब स्वर्ण हो जायेगा।

काजलसिंह ने वह वासचूर्ण उपाश्रय, जैन मंदिर व अपनी कुल देवी भुवाल माता के मंदिर के छज्जों पर डाला।

सुबह उठकर जब मंदिर गया तो यह देखकर चकित रह गया कि जिन छज्जों पर वासचूर्ण डाला था, वे सारे छज्जे सोने के हो गये थे। उन मंदिरों के आगे भारी भीड खडी थी। सब आपस में पूछ रहे थे- ये छज्जे रातोंरात सोने के कैसे हो गये! किसने सोने के छज्जे भगवान को और माताजी को चढाये।

गुरुदेव की साधना के इस प्रत्यक्ष प्रमाण को देखकर काजलसिंह अत्यन्त प्रभावित हुआ। उसने उसी समय परिवार सहित जैन धर्म अंगीकार कर लिया। गुरुदेव ने उसके सिर पर वासचूर्ण डालते हुए सोने के छज्जों को महत्वपूर्ण निमित्त मानते हुए 'छाजेड' गोत्र प्रदान किया।

इस प्रकार वि.सं. 1215 में इस गोत्र की रचना हुई। इस छाजेड गोत्र में उद्धरण नामक श्रेष्ठि हुआ जिसकी दानवीरता की गौरव गाथा इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों से अंकित है।

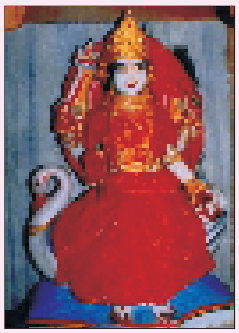

वि. सं. 1245 में उस समय की भाषा में लिखी यह गाथा इतिहास में प्रसिद्ध है-

बारसए पणयाले विक्कम संवच्छराउ वइक्कंते।

उद्धरण केन्द्र पमुहो, छाजहडा खरतरा जाया।।

यह ज्ञातव्य है कि छाजेड गोत्र की स्थापना जिन आचार्य भगवंत ने की, उन्होंने मात्र छह वर्ष की उम्र में प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि के पास दीक्षा ग्रहण की थी। पूर्वजन्म की साधना के परिणाम स्वरूप मात्र आठ वर्ष की उम्र में उन्हें आचार्य पद से विभूषित करके आचार्य जिनचन्द्रसूरि नाम दिया गया। ब्रह्मचर्य की अनूठी साधना के परिणाम स्वरूप उनके मस्तिष्क में मणि का अवतरण हुआ था। इसी कारण वे मणिधारी के नाम से प्रसिद्ध हुए। दिल्ली के महरौली में उनकी चमत्कारिक दादावाडी भक्तों की मनोकामनाऐं पूर्ण करती है।

वि. सं. 1324 में जन्मे आचार्य जिनचन्द्रसूरि इसी गोत्र के थे। दिल्ली सम्राट् कुतुबुद्दीन आदि अनेक राजा आपके परम भक्त थे। आपको कलिकाल केवली का बिरूद प्राप्त था।

वि. सं. 1337 में इसी गोत्र में जन्मे कलिकाल कल्पतरू तीसरे दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि ने कई गोत्रों की रचना करके जिनशासन की अनूठी प्रभावना की। आप युग प्रधान पद से विभूषित हुए। वर्तमान में आपकी प्रतिमा या चरण प्राय: सर्वत्र बिराजमान है।

छाजेड गोत्र में जन्मे आचार्य श्री जिनपद्मसूरि चौदहवीं शताब्दी के अनूठे रत्न थे। उनकी विद्वत्ता के कारण वे सरस्वती पुत्र कहलाते थे। समस्त गच्छों व संप्रदायों में सुप्रसिद्ध अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिता की रचना आपने ही की थी।

चौदहवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में हुए आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरि इसी गोत्र के रत्न थे।

छाजेड गोत्र के आचार्य श्री जिनभद्रसूरि का नाम इतिहास के पन्नों पर स्वर्णाक्षरों में लिखा गया है। क्योंकि इन्होंने ही जैसलमेर, पाटण, खंभात, लिम्बडी आदि नगरों में ज्ञान भंडारों की स्थापना करके परमात्मा महावीर की वाणी को अजर अमर सुरक्षित संरक्षित करने का भगीरथ पुरूषार्थ किया था।

इसी प्रकार पन्द्रहवीं शताब्दी में खरतरगच्छ की बेगड शाखा के प्रथम आचार्य श्री जिनेश्वरसूरि इसी छाजेड गोत्र के थे। इस शाखा में यह नियम था कि आचार्य वही बन सकता है जो छाजेड गोत्र का हो। इस कारण इस शाखा के सभी आचार्य भगवंत छाजेड गोत्रीय ही थे।

सोलहवीं शताब्दी के आचार्य जिनगुणप्रभसूरि छाजेड गोत्रीय थे जो चमत्कारी एवं प्रभावक आचार्य थे।

छाजेड गोत्र के इतिहास में एक और स्वर्ण पदक जुडा है- श्री नाकोडा तीर्थ के जीर्णोद्धार का! बेगड शाखा के आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरि के शिष्य आचार्य श्री जिनसमुद्रसूरि जिनका मुनि पद में महिमा समुद्र नाम था और जो स्वयं छाजेड गोत्रीय थे, उन्होंने महेवा नगर की महिमा में एक स्तवन लिखा है। उस स्तवन में उन्होंने लिखा है कि वि. सं. 1564 वैशाख वदि 8 शनिवार को ओसवाल छाजेड गोत्र के शेठ जूठिल के प्रपौत्र शेठ सदारंग ने श्री नाकोडा तीर्थ का जीर्णोद्धार करवाकर प्रतिष्ठा करवाई थी। यह रचना 17वीं शताब्दी की है-

संवत पनरह चोसट्ठइ, अष्टमी वदि वैशाख। शनिवार दिवस प्रतिष्ठिय खरच्यो धन केई लाख, मोरी.

ओसवाल वंसइ अतिभलो छाजहड गोत्र छत्राल। जूठिलसुत नयणो ज कइ, सुत सींहा सुविलास।

सींहा सुतन समधर, सदभु तसु सुतन साह सदारंग। भावसों तेण भरावीया, आणंद अति उछरंग।।

प्राचीन शिलालेखों के आधार पर छाजेड गोत्रीय श्रेष्ठिजनों ने स्वद्रव्य से कितने ही जिन मंदिर बनवाये, दादावाडियाँ बनवाई, प्रतिमाऐं भरवाई तथा शासन प्रभावना के अनेक कार्य किये।

मुनिश्री प्रतापसागरजी म. मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म., साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी, साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म.सा. आदि साधु-साध्वी छाजेड गोत्रीय हैं। जो जिनशासन की महत्ति सेवा कर संयम की आराधना कर रहे हैं। छाजेड गोत्र की कुल देवी भुवाल माता मानी जाती है। यह स्थान जोधपुर के पास बिरामी में है। जहाँ छाजेड परिवार आराधना करता है।

शरदचंदजी कांकरिया का स्वर्गवास

चैत्र कृष्णा नवमी ता. 15-03-2014 को ब्यावर निवासी गुरूभक्त समाजसेवी श्री शरदकुमार जी कांकरिया का जयपुर हॉस्पिटल में स्वर्गवास हो गया।

ज्योंहि यह सूचना पू. उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. को प्राप्त हुई, वे सहसा विश्वास भी नहीं कर पाये! उन्होंने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा- शरदभाई का अचानक जाना हमारे संघ एवं समाज के लिये बहुत बड़ी क्षति है। यद्यपि वे प.पू. गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के परम भक्त श्रावक थे। उनका आना जाना भी होता रहता था परन्तु ब्यावर चातुर्मास के बाद तो उनकी भक्ति... उनका अपनत्व अत्यन्त गहरा हो गया था।

उपाध्याय श्री ने आगे कहा-उन्होंने चातुर्मास की अवधि में वैयावच्च भी भरपूर की! जब भी देखो, वे संघ के लिये हाजिर थे। आज उनका जाना हमें भी तकलीफ दे रहा है।

परिवार को आश्वासन देते हुए पूज्य श्री ने कहा- जीवन में आज की घड़ी आपके लिये बहुत कष्टदायक है, जिसे अपना समझकर प्रतिक्षण अपने सामने रखा था, आज बिना सूचना एवं अनुमति के वे सदा के लिये अलग हो गये हैं। माँ ने बेटा, पत्नी ने पति, बहिनों ने भाई एवं पुत्र-पुत्री ने पिता तो पोते पोती ने दादा नाना खोया है। एक व्यक्ति से पूरा परिवार तृप्त था। सभी को शांत एवं आनंददायक शीतलता मिली हुई थी।

उन्हें खोकर सभी उदास हैं। प्रकृति भी उन जैसे सज्जन और सरल व्यक्ति को खोकर जैसे रो रही है। आप सभी इस परीक्षा की घड़ी में परमात्मा की वाणी का स्मरण कर धीरज रखें और प्रार्थना करें कि वह आत्मा जल्दी से जल्दी कर्ममुक्त बने!

अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए परम पूज्या बहिन म. साध्वी श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ने कहा- शरदभाई के स्वर्गवास की सूचना ने मुझे हतप्रभ कर दिया है। हमने उन्हें सबसे पहले आज से लगभग पाँच साल पूर्व ब्यावर में देखा था। यद्यपि पू. भाई म.सा. की सेवा में आना जाना होता था, पर ब्यावर से पूर्व मैंने उन्हें कभी नहीं देखा था। जिस दिन से वे हमारे संपर्क में आये थे, वे सपरिवार हमसे हृदय की अटूट गहराइयों से जुड़ गये थे।

उनसे जुड़े हुए अनेकं संस्मरण मेरे जेहन से टकरा रहे हैं। मेरे प्रति उनका ऋणानुबंध शायद बहुत गहरा था और इसी कारण हजार शारीरिक कष्टों को सहन करके भी वे मेरे यहाँ जरूर आ जाते थे। ज्योंहि उनको सूचना मिलती कि मैं ब्यावर से 100/50 कि.मी. के घेरे में हूँ, आधा घन्टा ही रूकते पर लाख मना करने पर भी आ जाते।

गुरू भक्ति उनकी अटूट थी। यद्यपि शुगर आदि की वजह से वे परिश्रम नहीं कर पाते थे पर जब हमने ब्यावर से विहार किया तो काफी कि.मी. वे हमें पहुँचाने आये थे। उनके परिवार के सभी लोग बोले- महाराज श्री! आपने शायद कल्पना भी नहीं की होगी कि आपके विहार के बाद पिताजी कैसे रहेंगे?

अगाध अनुराग भरी भक्ति थी उनकी। अभी गतवर्ष इन्हीं दिनों में वे जहाज मंदिर पधारे थे और कहा- हमें अपने

पूर्वजों द्वारा निर्मित मंदिर का जीर्णोद्धार एवं उसी से लगी विशाल जमीन का समाजोपयोगी कार्य करवाना है। आप छत्तीसगढ़ की क्षेत्र स्पर्शना करके पधार जाओ, फिर मुझे आप दोनों भाई बहिन म. का चातुर्मास भी कराना है। वे जहाज मंदिर से अंजनशलाका की हुई प्रतिमाजी ले गये थे और उसे उचित स्थान पर बिराजमान किया था।

नि:संदेह उनके हृदय में स्नेह.... सद्भाव से भरी खूब-खूब भावनाएं थीं। आज उनके स्वर्गवास से उनके स्वजनों ने तो अपनी छत खोयी ही है, मैंने भी अपना अपनत्व भरा संवेदनशील श्रावक खोया है।

ब्यावर चातुर्मास की उनसे जुड़ी स्मृतियाँ आज चलचित्र की तरह मेरे मानस पटल पर आ जा रही हैं।

परिवार को इस समय मात्र प्रभु की वाणी से ही आश्वासन मिल सकता है। संसार की नश्वरता का चिंतन करते हुए सभी धैर्य के साथ मृत्यु की सच्चाई को स्वीकार करें एवं उनकी आत्मा सीमंधर प्रभु की निश्रा में जल्दी से जल्दी संयम स्वीकार करके कर्मक्षय द्वारा केवलज्ञान को प्राप्त करे, यही प्रार्थना हैं।

जहाज मंदिर परिवार दिवंगत आत्मा को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पण करता है।

तिरुपात्तुर में सामूहिक वर्षीतप का प्रारंभ

प.पू. गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य मुनिवर्य श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म.सा., पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म.सा. एवं चम्पाजितेन्द्र ज्योति विमलप्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या पू. मयूरप्रिया श्रीजी म.सा., पू. तत्वज्ञलता श्रीजी म.सा., पू. संयमलता श्रीजी म.सा. की निश्रा में तिरूपात्तुर नगर में सामूहिक वर्षीतप आराधना प्रारम्भ हुई।

तेनम्पट्ट की भव्य प्रतिष्ठा सम्पन्न करवाकर साधु साध्वी भगवंत उग्र विहार करके चैत्र वदि अष्टमी तदनुसार 14 मार्च, 2015 को तिरूपात्तुर पधारे। 9 बजे नंदीविधि प्रारम्भ हुई। वर्षीतप प्रारम्भ करने वालों को 18 स्तुति से देववंदन करवाए गए। उन्हें उपवास का पच्चक्खाण दिया गया। तपस्वियों ने परमात्मा की तीन प्रदक्षिणा देकर अपने श्रद्धा भाव व्यक्त किए।

पू. मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा. ने फरमाया कि तप दो प्रकार के होते हैं। एक औपदेशिक तप, दूसरा आचरित तप, जो परमात्मा ने स्वयं ने किया, वह आचरित तप है और जो परमात्मा ने अपनी देशना में फरमाया, वह औपदेशिक तप है। वर्षीतप परमात्मा ने किया, अत: वह आचरित तप है।

तप एक ऐसी आराधना है, जिसमें चार धर्मों की आराधना है- दान, शील, तप, भाव। इस आराधना को करके हम शीघ्र ही सिद्ध बुद्ध निरंजन निराकार बनें। उसके पश्चात् पू. वर्षीतप प्रेरणादात्री पू. साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म. ने कहा कि अनादि काल से हमारी आत्मा इस संसार में परिभ्रमण कर रही है, उसका मुख्य कारण संज्ञा की पराधीनता है, अनादिकाल से जीव चार संज्ञाओं के पीछे लगा हुआ है। ये संज्ञाएं संसार के अनंत परिभ्रमण के कारणरूप हैं। इसे जीतने के लिए हमें तप की आराधना करनी चाहिए। तप के द्वारा ही हम आहार संज्ञा को जीत कर अणाहारी पद को प्राप्त कर सकते हैं।

पू. साध्वी मयूरप्रिया श्रीजी की प्रेरणा से एक प्रभु भक्ति परिवार ने अत्यन्त उदारता के साथ सम्पूर्ण वर्षीतप की आराधना का लाभ लिया है। तपस्वियों के दोनों समय के पारणे का लाभ लिया है। ऐसे गुप्त परिवार के उदार दिल की जितनी अनुमोदना करें, कम है। लगभग 30 श्रद्धालु वर्षीतप की साधना करके कर्मों को काटने का प्रशंस्य पुरुषार्थ कर रहे हैं। सम्पूर्ण संघ व्यवस्था में सहयोग कर रहा है।

अकल्पित विदायी

साध्वी डॉ. नीलांजना श्री जी म.सा.

आज जब मैं संध्याकाल में प्रतिक्रमण करने के लिये बैठ ही रही थी कि अचानक पू. गुरूवर्या श्री बहिन म. सा. से समाचार मिले, 'एक अकल्पित दुर्घटना हो गयी।' चूंकि यह संदेश उन्होंने विहार से दिया था, अत: सुनते ही मैं सकते में आ गयी। मैंने किसी अनहोनी की कल्पना से आशंकित हो, कांपते शब्दों से पूछा- क्या हुआ म.सा.?

समाचार मिले कि ब्यावर शरद भाई का स्वर्गवास हो गया। सुनते ही हृदय में गहरा सन्नाटा छा गया। शरदभाई का स्वर्गवास..... ओह। काल की लीला भी न्यारी है।

अभी तो परम विशुद्ध आराधक सेवाभावी श्रावक-रत्न संघवी श्री पुखराजजी छाजेड़ (भाया) की अकस्मात चिर विदायी की शून्यता से उबर ही नहीं पाये थे कि यह दूसरा झटका.....।

नि:स्वार्थ एवं निश्छल भाव से असीम स्नेह बरसाने वाले, शरीर कई व्याधियों से घिरा होने पर भी प्रतिपल मुस्कुराने वाले, ललाट पर वृद्धत्व की छाया होने पर भी धवल-उज्ज्वल विचारों से शरद पूर्णिमा की भांति चमकने वाले, उम्रदराज होने पर भी छोटे-छोटे साधु-साध्वी भगवंतों के प्रति हार्दिक अहोभाव और आस्था का अमृत उंडेलने वाले, ब्यावर के रत्न शरदभाई कांकरिया 15 मार्च को इस दुनिया से सदा के लिये विदा हो गये।

श्री शरदभाई की अकस्मात विदायी से पीड़ित हुआ मन पलभर में ही उन मधुर पलों में खो गया, जब शरदभाई को मैंने एक समर्पित श्रावकरत्न के साथ-साथ विविध रूपों में देखा था।

यद्यपि दिल्ली, जयपुर-चातुर्मास अथवा मालपुरा गुरूदेव के दर्शन के लक्ष्य से ब्यावर तो हमारा कई बार चलते विहार में आना-जाना हुआ था, परन्तु न कभी वहाँ रूकना हुआ, न स्थानीय लोगों से अधिक परिचय!

परम सेवाभावी शरदभाई से घनिष्ठता पूज्य गुरूदेव उपाध्याय भगवंत एवं पूजनीया बहिन म.सा. के 2010 के ब्यावर चातुर्मास से हुई। प्रतिष्ठित एवं सम्पन्न परिवार में जन्मे शरदभाई यद्यपि स्वास्थ्य की अपेक्षा क्षीण हो रहे थे परन्तु पूज्य गुरूदेव के इस चातुर्मास में वे सक्रिय कार्यकर्ता और परम वैयावच्च कर्त्ता के रूप में दौड़धूप कर रहे थे। व्यवस्था के सन्दर्भ में वे जब बहिन म.सा. के पास पहली बार आये तो जैसे जन्म जन्मान्तरों के कोई ऋणानुबंध ही प्रकट हो गये!

पल भर का सान्निध्य मिला और अज्ञात संबंध परिचय में तथा परिचय कब आत्मीय संबंधों में बदल गया, इस का पता भी न चला।

हालांकि अनजाने से अपने बनने तक के उन पलों की साक्षी मैं नहीं बन पायी थी, क्योंकि मुझे दिल्ली चातुर्मास हेतु अलग भेजा गया था; पर शरदभाई का नाम मैंने बहिन म.सा. से कई बार सुना था।

साथ ही पू. बहिन म.सा. हृदय से अतिसंवदेनशील हैं, परन्तु साथ ही गुणग्राहक दृष्टि से भी संपन्न हैं। उन्होंने शरदभाई की भक्ति, वैयावच्च और नि:स्वार्थ प्रेम को देखा तो वे जैसे गद्‌गद् हो उठे। शरदभाई को तो जैसे खुशियों का खजाना ही मिल गया था। चारों ही माह साधु-साध्वी भगवंतों की श्रद्धा एवं प्रेम से भरकर भक्ति करना उनका अहम् कार्य था।

शरदभाई को धर्म के संस्कार यद्यपि विरासत में ही मिले थे, परन्तु यह भी उनका परम सौभाग्य था कि उनका घर भी शांतिनाथ परमात्मा के मंदिर के एकदम सम्मुख ही था। इस कारण देवदर्शन हेतु पधारने वाले सभी साधु-साध्वी भगवंत के परिचय एवं सुपात्रदान का लाभ भी उन्हें सहजता से ही उपलब्ध हो जाता था।

शरदभाई के भावों को समझने वाली उनकी जीवन-संगिनी भी गृहलक्ष्मी बनकर आयी थी। अत: परिवार के संस्कारों को उसने आसानी से ही हृदयंगम कर लिया। मातुश्री के साथ-साथ धर्मपत्नी प्रेमलताजी के आत्मीय सहयोग ने शरदभाई को सभी संयमी आत्माओं का कृपापात्र बना दिया था। इसी कृपा का परिणाम था कि शरदभाई के पुत्र-पुत्रियाँ अतुल, अनिला, दीपिका के साथ-साथ इकलौती पुत्रवधु समता भी धार्मिक संस्कारी सेवाभावी और संपूर्ण परिवार को स्नेह की खुश्बू से सुगंधित करने वाली मिली थी।

पूज्या बहिन म. के प्रति तो शरदभाई का स्नेह, समर्पण, श्रद्धा व अपनत्व भाव इतना अनूठा था कि किसी भी कार्य के लिये उन्हें मात्र एक संकेत मिलना ही पर्याप्त होता था। पूज्याश्री उन्हें शरदभाई के स्निग्ध संबोधन से जब-जब पुकारते, वे बाग-बाग हो जाते। उनका रोम-रोम आनंद से खिल जाता।

अभी स्वर्गवास होने से मात्र 2/3 दिन पूर्व की ही बात है- कैवल्यधाम पूज्या श्री मणिप्रभाश्रीजी म.सा. पूज्या श्री मंजुला श्रीजी म.सा. एवं हम सभी साध्वीजी एक साथ एक ही मांडली में गोचरी करते थे। दोपहर की गोचरी हेतु जा ही रहे थे कि अचानक साध्वीजी श्री सौम्यगुणा श्रीजी म. के वहाँ से फोन आया कि ब्यावर में किसी श्रावक को आप विहार व्यवस्था हेतु समाचार दें। पू. बहिन म. ने तत्काल शरदभाई को फोन करवाया कि आप 5/7 कि.मी. की दूरी पर साध्वीजी को संभालें। शरदभाई ने अस्वस्थ होने से न जा सकने की स्थिति होने पर भी अविलंब अपने सेवाभावी सुपुत्र अतुल को आदेश दिया कि जाओ! तुम साध्वीजी की व्यवस्था करो। अतुलभाई उसी क्षण अनुकूलता न होने पर भी 15 मिनट के अंदर साध्वीजी म. के पास पहुँच गये। यह थी उनकी आदेश पालन में तत्परता। उनके जीवन से जुड़े ऐसे अनेक प्रसंग हैं, जब शरदभाई ने मात्र 3/4 वर्ष की अत्यंत अल्पावधि में तन-मन-धन की सेवाएं प्रदान करते हुए अपने आपको परम समर्पित चेतना के रूप में उजागर किया।

भक्त रत्न श्री शरदभाई का शाब्दिक परिचय तो गुरूवर्या श्री से मिल ही गया था, पर रूबरू होने का मौका तो मुझे केसरियाजी प्रतिष्ठा के अवसर पर ही मिला!

श्यामवर्णीय, किन्तु सम्मोहक व्यक्तित्व के धनी शरदभाई दिखने में अत्यंत सहज, सरल और सादगीपूर्ण थे; परन्तु उनके भाव इतने विनम्र मधुर और विशिष्ट थे कि गुरूवर्या श्री द्वारा दिया शाब्दिक परिचय उन्हें आंकने में बौना ही प्रतीत हुआ था। वे मुझसे यूँ मुखातिब हो रहे थे, जैसे चिरपरिचित हों। उनके अपनत्व और स्नेह की धार में मेरा संकोच भाव पलभर में ही काफूर हो गया। मैं उनकी अल्पकालीन किन्तु सघन श्रद्धाशीलता को निहार कर मुग्ध हो गयी!

2011 में पू. गुरूदेव उपाध्याय श्री का चातुर्मास नंदुरबार, बहिन म.सा. का सूरत था, जबकि मुझे विजयनगर भेज दिया गया था। एकदम अपरिचित क्षेत्र में जाने को मेरा मन एक प्रतिशत भी तैयार न था, पर वारंट निकल चुका था। मैंने कई बहाने भी गढ़ लिये थे कि जहाजमंदिर से विजयनगर तक का रास्ता देखा-परखा नहीं है। कौन विहार व्यवस्था करेगा?कौन संभालेगा?

यह जिनशासन की अनूठी व्यवस्था है कि कितने ही अपरिचित और किसी भी पंथ के पंचमहाव्रतधारी क्यों न हो, किसी गाँव में अगर 1/2 घर भी जैंनो के हैं तो वे उतनी ही भक्ति और सेवाभाव से उनकी संयम आराधना में सहयोगी बनते हैं। साधु का तो समूचा जीवन ही संघ के भरोसे चलता है, पर जिस संघ में वैयावच्चकारक, सेवाभावी श्रावक हों तो निश्चित ही वह संघ ऐसे रत्नों को पाकर धन्य हो जाता है।

पू. गुरूवर्या श्री के आगे मेरा कोई बहाना न चला और मुझे जहाज मंदिर से पाली, सोजत, ब्यावर होते हुए विजयनगर जाना ही पड़ा। उस दौरान पाली से रायपुर पहुँचते ही शरदभाई अपनी धर्मपत्नी के साथ विहार व्यवस्था हेतु पधार गये! कितना ही मना करने पर भी शाम को जब तक हम विश्राम स्थल पर नहीं पहुँचते, तब तक वे हमारे साथ ही चलते। हमें निश्चित स्थान पर पहुँचाकर अपेक्षित सारी व्यवस्थाएँ जुटाने के बाद ही पुनः घर लौटते। सवेरा हुआ, नवकारसी आयी कि शरदभाई भावभक्ति की मुद्रा में तैयार। उस समय अगाध प्रेम भरी निःस्वार्थ सेवाएं देखकर मेरा हृदय सहजतया नतमस्तक हो जाता उस भक्त श्रावक के प्रति और उनकी अनुमोदना-अभिवंदना के भावों में आँखों के किनारे कब भीग जाते, पता ही न चलता।

विजयनगर की सीमाओं में प्रवेश करने से पूर्व तक उन्होंने और उनके पूरे परिवार ने विहार की जो व्यवस्थाएं की, मैंने गुरूवर्या श्री की पैनी पारखी नजरों को बार-बार प्रणाम किया। वहीं यह हीरा उनके ही ताज में होने के लिये अनेकशः बधाईयां भी दीं।

शरदभाई एक आदेश की पूर्णाहुति होते ही दूसरे आदेश के इंतजार में रहते। आदेश भी आ गया था कि नंदुरबार पूज्य उपाध्याय श्री के प्रवेश पर आपको पधारना है। उन दिनों उनकी शुगर थोड़ी बढ़ गयी थी। परिवार वाले सभी चिंतित थे पर शरदभाई तो दृढ़ संकल्प के धनी और गुरूदेव के आशीर्वाद में भरोसा रखने वाले थे। यद्यपि उम्र 6 दशक पार न थी, पर अस्वस्थता अधिक थी। फिर भी एक ही बात जुबान पर थी, 'बहिन म. ने बुलाया और मैं न जाऊं?असंभव है।' खुद की गाड़ी से लगभग एक हजार कि.मी. की यात्रा करते हुए निश्चित् तारीख को वे नंदुरबार प्रवेश पर पहुँच गये।

प्रवेश सम्पन्न करवाकर सूरत बहिन म.सा. के दर्शन करने पधारे। पू. बहिन म.सा. मुझे लेकर कुछ चिंतित थे। संकेत पाकर शरदभाई सूरत से सीधे विजयनगर रवाना हो गये। यहाँ तक कि बीच में भीलवाड़ा बेटी अनिलाजी का ससुराल होने पर भी नहीं रूकते हुए छवदैजवच शाम होते-होते विजयनगर पहुँच गये।

उन्हें देखते ही जैसे एक प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी। पू. गुरूवर्या श्री के सारे समाचार दिये। सारी व्यवस्थाओं के संदर्भ में भी पूछताछ कर जब संपूर्ण आश्वस्त हो गये तो फिर ब्यावर यह कह कर पधारे गये, कि 'कोई भी काम हो, एक सूचना देना। घंटे भर में ही आपके पास हाजिर हो जाऊंगा।' उनका यह अपनापन और वात्सल्य निश्चित ही हमारे जीवन की बहुत बड़ी निधि है।

विजयनगर चातुर्मास समाप्ति के बाद मालपुरा दर्शन करके पुनः हमें श्री पार्श्वनाथ नाकोड़ा भैरव ट्रस्ट, विजयनगर के अन्तर्गत निर्मित होने वाले जिनमंदिर के शिलान्यास हेतु आना हुआ। पर आशाता के उदय से अचानक एक दिन पूर्व ही स्लिप होने से मेरे पांव में थ्तमबजनतम हो गया। मुझे शल्य चिकित्सा हेतु तत्काल भीलवाड़ा एडमिट किया गया। पू. बहिन म.सा. को मेरे समाचार मिले। चिंता तो स्वाभाविक ही है। इधर भीलवाड़ा में सुमित दुनीवाल के सिवाय कोई

परिचित भी नहीं था। कुछ परिचित लोग थे, पर वे बाड़मेर शादियों में व्यस्त थे। हॉस्पिटल और स्थानीय संघ की दूरी 5/6 कि.मी. की होने से आहार पानी आदि की व्यवस्था भी थोड़ी मुश्किल से ही हो रही थी, हालांकि बाद में पता लगने पर स्थानीय संघ के कई श्रावकों ने बहुत ही श्रद्धा से संभाला था। परन्तु जिस समय हम भीलवाड़ा पहुँचे, उससे पहले ही बहिन म.सा. के आदेश से शरदभाई ने तत्काल अपनी बेटी अनिला सुराणा को फोन करके न केवल आहार-पानी व मेहमानों के लिये भोजनादि की व्यवस्था करवाई, बल्कि 2/4 घंटे बाद में स्वयं भी गाड़ी लेकर भीलवाड़ा पधार गये। यह थी उनकी स्फूर्ति, जो अच्छे-अच्छे युवाओं को भी मात कर देती थी।

प्रेमसभर शरदभाई जैसा व्यक्तित्व अपने जीवन के संध्याकाल में हमसे मिल रहा है, ऐसा तो हमने कभी नहीं सोचा था। अभी तो उन्होंने कितने-कितने सपने, कितने-कितने अरमान संजोकर रखे थे। पू. गुरूदेव और पू. बहिन म.सा. जब छत्तीसगढ़ आदि में विचरण करके पुनः राजस्थान में पधारेंगे, तब मैं ब्यावर में अपनी ओर से ठाठबाट से संपूर्ण चातुर्मास करवाऊंगा। पूज्य गुरूदेव एवं बहिन म.सा. की प्रेरणा से स्वद्रव्य से जिनमंदिर का जीर्णोद्धार करवाऊंगा; पर सारे सपने धूलिसात हो गये, सारे अरमान खण्डहर की भांति बिखर गये।

अस्वस्थता के कारण संपूर्ण रेस्ट होने पर भी रायपुर प्रवेश पर आने के लिये पूरे परिवार की टिकिट कब की रिजर्व करा चुके शरदभाई को कहाँ पता था कि अब वे अपने गुरूदेव एवं गुरूवर्या श्री के दर्शन नहीं कर पायेंगे। यहाँ से फोन किया, न किया, अस्वस्थ होने पर भी बात कर पाये, न कर पाये, उन्होंने कभी न उपालंभ दिया, न कभी हल्की सी भी शिकायत की। किसी प्रकार की अपेक्षा रखे बिना उन्होंने सदैव चिट्ठी के चाकर बनकर आज्ञापालन में अपनी अंतिम सांस तक तत्परता दिखायी।

ऐसे वात्सल्य हृदय, श्रद्धानिष्ठ, सेवानिष्ठ शरदभाई के अंतिम मात्र 4 वर्षों की अवधि से जुड़े अनेक मधुर, भावविभोर करने वाले संस्मरण हैं, जो मीठे एवं जिनके जेहन में तरंगित होते ही मन असीम श्रद्धाभावों से उस श्रावक-रत्न के सम्मान और बहुमान में प्रणत हो जाता है।

आज परिवार रूप गुलशन को खुश्बू से भरने वाला फूल मुरझा गया। परिवार पर आनंद और खुशियों की बरसात करने वाला झरना सूख गया। परिवार को ठंडी छांव देने वाला छत्र उठ गया। निश्चित् ही परिवार की आशाओं पर तुषारापात हुआ है। परिवार ने जहाँ एक वात्सल्य पुरूष खोया है, वही संघ और शासन ने एक सेवाभावी, परम समर्पित श्रावक रत्न खोया है, जिसकी क्षति अपूरणीय है।

पूज्य गुरूदेव और पूजनीया बहिन म.सा. ने तो एक ऐसा हीरा खोया है जो उदारता, विनम्रता, आत्मीयता आदि में हजारों में एक था।

पू. बहिन म.सा. के साथ-साथ-मुझे भी उनका खूब प्रेम और वात्सल्य मिला है। उनकी मीठी स्मृतियां, भावभरी बातें मेरी स्मृतियों का अमिट खजाना है। उनके व्यक्तित्व की अनोखी और निराली बात तो यह थी कि वे सभी से इतने प्रेम पूर्ण अंदाज में मिलते थे कि जैसे सभी के अत्यंत निकट के स्नेहीजन हों।

'शरदभाई न रहे', यह वाक्य अति पीड़ाकरी है, परन्तु संसार का यही कटुसत्य भी है, जिसे नकारा नहीं जा सकता। उनकी यह विदायी भौतिक धरातल से अवश्य हुई है, परन्तु मानसिक रूप से उनकी अमिट स्मृतियाँ सदैव मन-मानस को सुगंधित करती रहेंगी।

परमात्मा एवं जिनशासन देव से प्रार्थना है कि स्वर्गस्थ आत्मा क्रमशः गुणों का विकास करती हुई सिद्धत्व की ज्योति का वरण करे।

17
तत्त्वावबोध

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

चतुर्भंगी का चमत्कार

१३४. वय और ज्ञान

1. वय अधिक, ज्ञान कम- मासतुष मुनि
2. वय अधिक, ज्ञान अधिक-गौतम गणधर
3. वय कम, ज्ञान अधिक-वज्रस्वामी, मणिधारी जिनचन्द्रसूरि,
4. वय कम, ज्ञान कम-मनक मुनि

१३५. सान्निध्य-शिष्य

1. साथ रहकर भी शिष्य नहीं बन पाया-गोशालक
2. साथ रहा, शिष्य भी बना-गौतम आदि गणधर
3. साथ नहीं रहा, शिष्य भी नहीं बना-कालसौकरिक कसाई
4. साथ नहीं रहा, पर शिष्य बना-आर्द्रकुमार

१३६. अरिहंत-आशातना-क्षमापना

1. मैंने अरिहंत की आशातना की पर क्षमा नहीं मांगी-जमाली
2. मैंने अरिहंत की आशातना की, क्षमा भी मांगी-गोशालक
3. मैंने अरिहंत की आशातना नहीं की, क्षमा भी नहीं मांगी-सुधर्मा स्वामी
4. मैंने अरिहंत की आशातना नहीं की, पर क्षमा मांगी-गौतम स्वामी

१३७. मुनि-आशातना-क्षमापना

1. मैंने मुनि भगवंत की आशातना नहीं की पर क्षमा मांगी-मृगावती
2. मैंने मुनि भगवंत की आशातना की और क्षमा मांगी-सीता, दमयन्ती ने पूर्व भवों में
3. मैंने मुनि की आशातना नहीं की, क्षमा भी नहीं मांगी-परमात्मा महावीर
4. मैंने मुनि की आशातना की पर क्षमा नहीं मांगी-गोशालक

१३८. श्रावक-आशातना-क्षमापना

1. मैंने श्रावक की आशातना की, क्षमा भी मांगी-गौतम स्वामी
2. मैंने श्रावक की आशातना नहीं की पर क्षमा मांगी-चन्दनबाला
3. मैंने श्रावक की आशातना नहीं की, न क्षमा मांगी-सुधर्मा स्वामी
4. मैंने श्रावक की आशातना की पर क्षमा नहीं मांगी-रेवती (महाशतक की पत्नी)

१३९. केवलज्ञानी-आशातना-क्षमापना

1. मैंने केवलज्ञानी की आशातना की, क्षमा मांगी-चन्दनबाला, चण्डरुद्राचार्य
2. मैंने केवलज्ञानी की आशातना की पर क्षमा नहीं मांगी-जमाली
3. मैंने केवलज्ञानी की आशातना नहीं की पर क्षमा मांगी-गौतम स्वामी
4. मैंने केवलज्ञानी की आशातना नहीं की और क्षमा भी नहीं मांगी-जम्बूस्वामी

हार्दिक शुभकामनाओं सहित -
राहुल ए. संघवी - 9408395557, 8735039456
• तमन्ना प्रेजेन्ट्स
• राहुल इवेण्ट
अंजनशलाका, प्रतिष्ठा, दीक्षा, नव्वाणुं, चातुर्मास, संगीत संध्या, गजल, गरबा, मैजिक शो, ड्रामा आदि हर प्रकार के आयोजन में पूर्ण सेवाऐं प्रदान करने के अनुभवी
106, सांई कृपा सोसायटी, अमित नगर के पास, कारेली बाग, बड़ोदरा (गुजरात)

पंचांग

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

MAY 2015

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
31 ज्येष्ठ सुदि 13					1 वैशाख सुदि 13	2 वैशाख सुदि 13
3 वैशाख सुदि 14	4 वैशाख सुदि 15	5 ज्येष्ठ वदि 1	6 ज्येष्ठ वदि 2	7 ज्येष्ठ वदि 3	8 ज्येष्ठ वदि 4	9 ज्येष्ठ वदि 5
10 ज्येष्ठ वदि 6/7	11 ज्येष्ठ वदि 8	12 ज्येष्ठ वदि 9	13 ज्येष्ठ वदि 10	14 ज्येष्ठ वदि 11	15 ज्येष्ठ वदि 12	16 ज्येष्ठ वदि 13
17 ज्येष्ठ वदि 14	18 ज्येष्ठ वदि 30	19 ज्येष्ठ सुदि 1	20 ज्येष्ठ सुदि 2/3	21 ज्येष्ठ सुदि 4	22 ज्येष्ठ सुदि 5	23 ज्येष्ठ सुदि 5
24 ज्येष्ठ सुदि 6	25 ज्येष्ठ सुदि 7	26 ज्येष्ठ सुदि 8	27 ज्येष्ठ सुदि 9	28 ज्येष्ठ सुदि 10	29 ज्येष्ठ सुदि 11	30 ज्येष्ठ सुदि 12

पर्व दिवस

10.5.15-श्री सिद्धाचल वर्षगांठ
11.5.15-आ. जिनमहोदयसागरसूरि स्व. मलकापुर
17.5.14-पाक्षिक प्रतिक्रमण
19-05-2015-रोहिणी आराधना

गुडुर में पदार्पण

पूजनीया पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 8 विहार करते हुए ता. 25 मार्च 2015 को गुडुर पधारे। जहाँ उनका भव्य प्रवेश सामैया आयोजित किया गया। यह ज्ञातव्य है कि पूज्याश्री का 25 वर्षों के पश्चात् गुडुर पधारना हुआ है।

25 वर्ष प्रवेश यहाँ के श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिन मंदिर की प्रतिष्ठा आपकी प्रेरणा व निश्रा में ही संपन्न हुई थी। यहाँ पूज्याश्री की निश्रा में नवपद ओली की आराधना करवाई जा रही है। ओलीजी करवाने का संपूर्ण लाभ बिलाडा निवासी श्री रतनचंदजी प्रकाशचंदजी चौपडा परिवार ने लिया है। जबकि नौ दिनों की साधर्मिक भक्ति का लाभ श्री संपतराजजी चौपडा परिवार ने लिया है। यहाँ पूज्याश्री की निश्रा में बालकों का नौ दिवसीय धार्मिक शिक्षण शिविर एवं महिलाओं का शिविर आयोजित किया जा रहा है। ओलीजी में अष्टाह्निका महोत्सव का आयोजन भी किया जा रहा है।

समाचार दर्शन

तिरुनेलवेली में प्रतिष्ठा संपन्न

राजस्थान में उम्मेदाबाद-गोल निवासी श्रीमती मोवनदेवी छगनराजजी भंसाली के सुपुत्र श्री जयन्तिलालजी भंसाली परिवार द्वारा निर्मित तीन मंजिले भवन के ऊपरी खण्ड में श्री विशाल देवकुलिका में श्री नवपद पट्ट, दादा गुरुदेव श्री जिनकुशलसूरि एवं श्री नाकोडा भैरव की प्रतिष्ठा ता. 7 मार्च 2015 को पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. पू. विश्वरत्नाश्रीजी म. पू. रश्मिरेखाश्रीजी म. पू. चारूलताश्रीजी म. पू. चारित्रप्रियाश्रीजी म. ठाणा 5 एवं पूजनीया साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. पू. विश्वज्योतिश्रीजी म. पू. जिनज्योतिश्रीजी म. ठाणा 3 के पावन सानिध्य में उल्लास भरे वातावरण में संपन्न हुई।

कन्याकुमारी की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा संपन्न करवाकर नागरकोइल होते हुए ता. 7 मार्च को सुबह पूज्यवरों का नगर प्रवेश करवाया गया। तत्पश्चात् शुभ मुहूर्त में भवन का उद्घाटन हुआ।

प्रतिष्ठा से पूर्व अठारह अभिषेक करवाये गये। प्रतिष्ठा के बाद श्री नवकार महामंत्र महापूजन पढाया गया। विधि विधान हेतु श्री हेमन्तभाई पधारे थे।

इस अवसर पर प्रवचन फरमाते हुए पूज्य गुरुदेवश्री ने कहा- नवपद जिन धर्म का सार है। नवपद के द्वारा ही मोक्ष पाया जा सकता है। आज तक जिन्होंने भी मोक्ष पाया, उसमें नवपद ही निमित्त है। उन्होंने श्रीपाल का उदाहरण सुनाते हुए कहा- नवपद ने ही श्रीपाल को कोढ मुक्त किया था। व्यवहार की अपेक्षा से शारीरिक व्याधि का समापन हुआ तो निश्चय की अपेक्षा से मिथ्यात्व रूप कोढ से मुक्ति मिली। नवपद की साधना से ही उसने सभी प्रकार की ऊँचाईयाँ प्राप्त की थी।

पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. एवं विश्वज्योतिश्रीजी म. ने अपने प्रवचन द्वारा परमात्म भक्ति की व्याख्या की। श्री जयन्तिलालजी भंसाली ने सभी का स्वागत किया। श्री संघ द्वारा उनका बहुमान किया गया।

मदुराई में गृह मंदिर की प्रतिष्ठा संपन्न

राजस्थान में गोल-उम्मेदाबाद निवासी श्री चंदनमलजी पारसमलजी बंदा मुथा के निवास स्थान में तीसरी मंजिल पर बने जिन मंदिर के हॉल में परमात्मा विमलनाथ की पूजनीय पंच धातु प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई। संगमरमर की देवकुलिका में परिकर सहित परिकर की प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री विरक्तप्रभसागरजी म.सा. एवं पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं पूजनीया साध्वी श्री विराग-विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा 3 के पावन सानिध्य में संपन्न हुई।

आगोलाई प्रतिष्ठा प्रथम वर्षगांठ का आयोजन

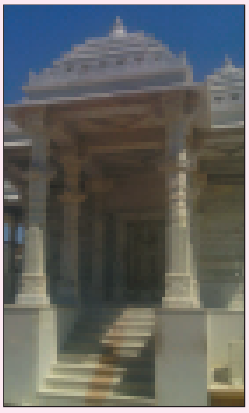

जोधपुर जिले के आगोलाई गांव में श्री वासुपूज्य मंदिर की प्रथम वर्षगांठ वैशाख वदि 1 ता. 5 अप्रेल 2015 को अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ मनाई जायेगी। यह आयोजन पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनिराज श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. पूज्य युवा मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. की पावन निश्रा में होगा। पूज्यश्री ब्रह्मसर से विहार कर आगोलाई पधारेंगे।

यह ज्ञातव्य है कि इस अतिप्राचीन जिन मंदिर का जीर्णोद्धार पूज्य मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से ही हुआ था। इसकी प्रतिष्ठा गत वर्ष पूज्य उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की पावन निश्रा में संपन्न हुई थी। वर्षगांठ के इस अवसर पर अठारह अभिषेक, सतरह भेदी पूजा आदि विधि विधान का आयोजन किया जायेगा।

साधु साध्वी समाचार

पूज्य आचार्य श्री जिनकैलाशसागर सूरिजी म. शल्य चिकित्सा हेतु अहमदाबाद पधारे थे। अब उनका स्वास्थ्य स्वस्थ है। वे जोधपुर में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक मुनि श्री मनोज्ञसागरजी म. पूज्य नयज्ञसागरजी म. ब्रह्मसर से विहार कर सेतरावा होते हुए ता. 29 मार्च को बालेसर पधारे। दो दिवसीय स्थिरता के पश्चात् ता. 1 अप्रेल को आगोलाई पधारेंगे। जहाँ उनकी निश्रा में महावीर जन्म कल्याणक मनाया जायेगा। साथ ही उनकी प्रेरणा से जीर्णोद्धार हुए श्री वासुपूज्य जिन मंदिर की प्रथम वर्षगांठ पर ध्वजा चढाई जावेगी। अठारह अभिषेक का आयोजन होगा।

पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. बाडमेर से विहार कर सांचोर, राधनपुर होते हुए कच्छ भुज पधारे हैं। वहाँ से विहार कर भद्रेश्वर तीर्थ, गांधीधाम होते हुए शंखेश्वर पधारेंगे। जहाँ उनकी निश्रा में तीन दीक्षाऐं संपन्न होगी। बाडमेर निवासी मुमुक्षु सुश्री मीना छाजेड एवं मुमुक्षु श्रीमती गीता बोथरा की भागवती दीक्षा 28 मई 2015 को तथा पाली निवासी मुमुक्षु भाविका लोढा की 7 जून 2015 को होगी।

पूज्य मुनि श्री कुशलमुनिजी म. आदि ठाणा 4 कोटा पधारे हैं। जहाँ उनकी निश्रा में नवपद ओली की आराधना करवाई जायेगी।

पूज्य अध्यात्म योगी मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा की निश्रा में सदर बाजार रायपुर में नवपद ओली की आराधना होगी। 6 अप्रेल से 19 अप्रेल तक मन एवं आध्यात्मिक व्यवहार प्रबंधन पर शिविर का आयोजन सदर बाजार रायपुर में होगा। उसके पश्चात् अक्षय तृतीया पर कैवल्यधाम तीर्थ पर उनका पदार्पण होगा।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. पू. समयप्रभसागरजी म. पू. श्रेयांसप्रभसागरजी म. ठाणा 3 तिरपातूर से विहार कर वेल्लूर पधारे, जहाँ उनकी निश्रा में नवपद ओली करवाई जा रही है। वहाँ से विहार कर चेन्नई पधारेंगे।

पूज्य मुनि श्री रिषभसागरजी म. आदि ठाणा की निश्रा में अहिवारा में नवपद ओली की आराधना करवायी जायेगी।

पूज्य पार्श्वमणि तीर्थ प्रेरिका साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 8 विजयवाडा, गुंटुर आदि क्षेत्रों में विहार करते हुए गुडुर-आंध्र प्रदेश पधारे हैं। नवपद ओली की आराधना उनकी पावन निश्रा में वहाँ पर कराई जायेगी। ओलीजी के पश्चात् धर्मनाथ मंदिर प्रतिष्ठा एवं दीक्षा समारोह हेतु चेन्नई की ओर विहार करेंगे।

पू. महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. सुमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 4 सेलम, तिरूपातूर होते हुए अप्रेल के दूसरे सप्ताह में चेन्नई पधारेंगे।

पू. प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा ने कैवल्यधाम से विहार कर भिलाई, दुर्ग होते हुए ता. 28 मार्च को राजनांदगांव पधारे। महावीर जन्म कल्याणक की संपन्नता के पश्चात् विहार

कर भद्रावती पधारेंगे, जहाँ उनकी पावन निश्रा में वर्षीतप पारणा कार्यक्रम होगा।

वहाँ से अमरावती, मलकापुर, जलगांव होते हुए जून के अंतिम सप्ताह में इन्दौर पधारेंगे। उनका आगामी चातुर्मास रतलाम में होगा। जबकि उनकी शिष्याओं के चातुर्मास चन्द्रपुर, नरसिंहपुर और इन्दौर में होने की संभावना है।

पू. प्रवर्तिनी श्री सज्जनश्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा जयपुर बिराज रहे हैं। कुछ दिनों की स्थिरता के पश्चात् अजमेर, ब्यावर, जोधपुर होते हुए नाकोडाजी पधारेंगे। पू. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा जयपुर पधार गये हैं।

पू. महत्तरा श्री चंपाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा गदग बिराज रहे हैं। पथरी का ऑपरेशन शाता पूर्वक हुआ है। ओलीजी के पश्चात् हुबली की ओर विहार करेंगे। वहाँ उनकी पावन निश्रा में वर्षीतप के तपस्वियों के पारणे होंगे। पूज्य साध्वी श्री मनोरमाश्रीजी म. एवं पूज्य साध्वी श्री श्रेयनंदिताश्रीजी म. के वर्षीतप की आराधना चल रही है। उनका पारणा हुबली नगर में श्री आदिनाथ मंदिर एवं दादावाडी में संपन्न होगा।

पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य वर्धमान तपाराधिका साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 जयपुर से विहार कर अजमेर होते हुए ब्यावर पधारे हैं। नवपद ओली की आराधना ब्यावर में उनकी पावन निश्रा में संपन्न होगी। ओलीजी के पश्चात् फलोदी की ओर विहार करेंगे।

पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. आदि ठाणा कैवल्यधाम बिराज रहे हैं।

पूज्य बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ने कैवल्यधाम से 15 मार्च को विहार किया है। वे राजनांदगाँव, गोंदिया होते हुए बालाघाट पधारे हैं। जहाँ उनकी निश्रा में मुमुक्षु जयादेवी सेठिया एवं मुमुक्षु संयम सेठिया का श्री संघ की ओर से अभिनंदन किया जायेगा। वहाँ से विहार कर बारासिवनी, सिवनी होते अक्षय तृतीया पर पुनः बालाघाट पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में वर्षीतप तपस्वियों के पारणे होंगे।

पू. प्रवर्तिनी श्री निपुणाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. आदि ठाणा कैवल्यधाम से विहार कर महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव हेतु रायपुर पधारेंगे। वहाँ 3 अप्रेल से विवेकानंद नगर रायपुर में ग्रीष्मकालीन संस्कार शिविर का आयोजन होगा। ता. 17 अप्रेल को रिषभनगर दुर्ग में ध्वजारोहण संपन्न करवायेंगे। अक्षय तृतीया पर कैवल्यधाम पधारेंगे। 28 अप्रेल को सदर बाजार रायपुर में ध्वजा चढाई जायेगी। वहाँ से विहार कर कवर्धा पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में 14 मई से 25 मई तक महाकौशल शिविर संपन्न होगा।

पू. महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री शुभंकराश्रीजी म. आदि ठाणा जयपुर मोतीडुंगरी दादावाडी में नवपद ओली हेतु बिराजमान है। वहाँ से आगरा होते हुए शिवपुरी चातुर्मास हेतु विहार करेंगे।

पू. महत्तरा श्री चंपा जितेन्द्रश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा मदुराई से विहार कर ता. 25 मार्च को तिरूच्चिरापल्ली पधारे हैं। वहाँ से विहार कर थंजावुर, कुंभकोणम्, मायावरम्, चिदम्बरम्, कडलूर, पांडिचेरी, टिण्डीवनम होते हुए चेन्नई धर्मनाथ मंदिर समदांगी बाजार, साहुकार पेठ पधारेंगे।

पू. साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा अहमदाबाद बिराज रहे हैं। वे वहाँ से शंखेश्वर पधारेंगे, जहाँ दीक्षा समारोह का आयोजन मई व जून में होगा।

पूज्य बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूज्य साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा धमतरी पधारे हैं। वहाँ उनकी निश्रा में नवपदजी ओली आराधना होगी। तत्पश्चात् विहार कर कोण्डागांव होते हुए अपनी जन्मभूमि नारायणपुर पधारेंगे।

पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा हगरीबोम्मनहल्ली नवपद ओली आराधना करवाने हेतु पधारे हैं।

पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री प्रियलताश्रीजी म. आदि ठाणा कोट्टूर में बिराज रहे हैं। नवपद ओली की संपन्नता के पश्चात् चित्रदुर्गा, दावणगेरे होते हुए सिंधनूर की ओर विहार करेंगे।

पू. खान्देश शिरोमणि श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री विरागज्योतिश्रीजी म. विश्वज्योतिश्रीजी म. आदि ठाणा 3 तिरूच्चिरापल्ली से पेरम्बलूर, पनरूटी, तिरूवन्नामल्ले, टिण्डीवनम् होते हुए 12 अप्रेल को पूज्य उपाध्यायश्री आदि के साथ प्रवेश करेंगे।

पू. महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा 5 बाडमेर में श्री जिनकान्तिसागरसूरि आराधना भवन में नवपद ओली की आराधना हेतु बिराजमान हैं। वहाँ से ओलीजी के पश्चात् कुशल वाटिका पधारेंगे। वहाँ से विहार कर नाकोडाजी, जहाज मंदिर आदि तीर्थों की यात्रा करते हुए पुनः बाडमेर पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में अक्षय तृतीया के पारणे होंगे।

पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी आदि ठाणा 3 बैंगलोर से विहार कर अनंतपुर, बल्लारी, हम्पी, कोप्पल, गदग होते हुए अप्रेल के प्रथम सप्ताह में हुबली पधारेंगे। वहाँ से मुंबई की ओर विहार करेंगे।

पू. महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. आदि ठाणा 3 पालीताना श्री जिन हरि विहार में बिराजमान है। वहाँ से अक्षय तृतीया के बाद में विहार कर चातुर्मास हेतु मांडवी की ओर विहार करेंगे।

पूज्य बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या पूज्य साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा नवपद ओली आराधना करवाने हेतु दुर्ग नगर में पधारे हैं। ओलीजी के पश्चात् कैवल्यधाम पधारेंगे।

पूज्य साध्वी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा गदग से विहार कर नवपद ओली आराधना को निश्रा प्रदान करने हेतु हॉस्पेट पधारे हैं।

पू. साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. दीपमालाश्रीजी म. जोधपुर से विहार कर ओस्तरां ध्वजा समारोह में पधारे थे। अपनी निश्रा प्रदान कर विहार कर वे जोधपुर पधारे हैं। जहाँ बाडमेर भवन में आपकी निश्रा में नवपदजी ओली आराधना संपन्न होगी।

पू. प्रवर्तिनी श्री विचक्षणश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री हर्षयशाश्रीजी म. आदि ठाणा कैवल्यधाम से विहार कर परमात्मा महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव में निश्रा प्रदान करने हेतु चरौदा पधारेंगे। वहाँ से देवकर पधारेंगे, जहाँ उनकी निश्रा में वर्षगांठ पर ध्वजा चढायी जायेगी।

पू. साध्वी श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 4 गांधीधाम में नवपद ओलीजी हेतु बिराजमान है। वहाँ से विहार कच्छ पंचतीर्थी व आसपास के क्षेत्रों में विहार करेंगे।

पू. प्रवर्तिनी श्री निपुणाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री सुदर्शिताश्रीजी म. आदि ठाणा 2 दल्लीराजहरा में नवपद ओली

करवायेंगे। वहाँ सप्त दिवसीय संस्कार शिविर का आयोजन होगा। कुसुमकसा में जीवराशि क्षमापना एवं बालोद में पंच दिवसीय संस्कार का आयोजन होगा।

पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्या पूज्य साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी आदि ठाणा 3 तिरपातूर से वेल्लुर होते हुए चेन्नई पधारेंगे।

भव्य अभिनंदन एवं जुलूस का आयोजन

चैत्र सुदी 11, दिनांक 30 मार्य को बालाघाट नगरी में प.पू. बहिन म.सा. साध्वी डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 की निश्रा में दीक्षार्थी श्रीमति जयादेवी एवं सुपुत्र संयम सेठिया का भव्य अभिनंदन समारोह संपन्न हुआ। अभिनंदन से पूर्व प्रात: 9 बजे जिनकुशल सूरि दादावाडी के भव्य वरघोडा प्रारंभ हुआ जो पार्श्वनाथ भवन में आकर अभिनंदन समारोह में बदल गया । सामूहिक गुरूवंदना के पश्चात् पू. बहिन म.सा. के मंगलाचरण से कार्यक्रम का प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम को श्री कमलेश बाफना, मुमुक्षु रानी खंचाची, ज्ञानचंदजी बाफना, पार्श्व महिला मंडल, सौ. नीता लुनिया ने संशोधित किया । बालाघाट ट्रस्ट द्वारा श्रीमति जयादेवी एवं संयम सेठिया का तिलक, माला, श्रीफल एवं रजत सिक्के के द्वारा बहुमान किया गया । इसी बहुमान के क्रम में गोंदिया, राजनाँदगाँव, सिवनी, लालबर्रा, बारा सिवनी आदि संघों द्वारा भी दीक्षार्थीद्वय का बहुमान किया गया। रायपुर से पधारे श्री तिलोकचंदजी बरडिया ने स्वर्ण अंगुठियों द्वारा दोनों दीक्षार्थियों का अभिनंदन किया । रायपुर श्री संघ के निवेदन पर दोनों दीक्षार्थियों ने रायपुर पधारने की स्वीकृति प्रदान की । अभिनंदन का प्रत्युत्तर देते हुए जयादेवी ने कहा-हमारा सौभाग्य है कि हमें जिनशासन और जिनवाणी श्रवण का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ । इसी वाणी से हमें यह संबोध मिला कि सुख-शांति और समाधि का एक मात्र स्थान संयम ही है । मुझे संतोष के साथ परम प्रसन्नता है कि मेरी भावना के मेरे पुत्र ने स्वीकार करते हुए संयम को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया । श्रावकत्व की सार्थकता संयम में ही है । मेरा रोम-2 संयम के अमृत का पान करता रहे, ऐसा आप सभी आशीर्वाद दें ।

मुमुक्षु संयम ने कहा-पतंग छोटी होती है आकाश विशाल होता है । पर वह छोटी सी पतंग यदि कुशल और सक्षम हाथों में पहुँच जाती है तो विशाल आकाश की उड़ान भर लेती है । मैं छोटा हूँ । संयम अगणित परीषहों का स्थल है पर मैं सुरक्षित रहूँगा । क्योंकि मुझे थामनेवाले बहुत कुशल और सक्षम है । मेरे गुरूदेव पूज्य उपध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के प्रति समर्पण मेरे जीवन को सुरक्षित रखेगा ।संयम कि शब्दों में जैसे वैराग्य का अमृत छलक रहा था । छोटी उम्र में भी शब्दों का गांभीर्य अनुमोदनीय था ।पूजनीया बहिन म.सा. ने कहा-संयम का अर्थ खोना नहीं अपितु सम्पूर्ण संसार को अपना बनाना है । हृदय को शुष्क नहीं अपितु इतना भीगा बनाना है कि समस्त जीवराशि आपकी मैत्री और करूणा की भागीदार बने । संयम का अर्थ अपनी वृत्तियों एवं प्रवृत्तियों को बदलना है । जया बहिन ने अपना सर्वस्व जिनशासन को समर्पित करने का जो साहस किया है, वह अनुपम है । आपका समर्पण जिनशासन की विशिष्ट कृति बने, यही मंगलभावना है । कार्यक्रम का सफल संचालन अजय लुनिया ने किया ।

श्री वेल्लूर नगरे

नवपद ओली की आराधना के उपलक्ष में हार्दिक

शुभकामना- अभिनंदन

पावन निश्रा
पू. मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म. सा.

सानिध्यता
पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्री जी म. सा.

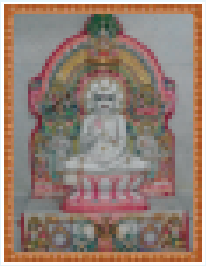

गुरू गौतम स्वामी

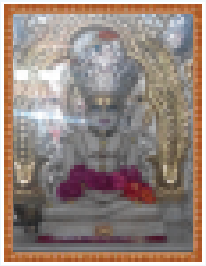

श्री संभवनाथ भगवान

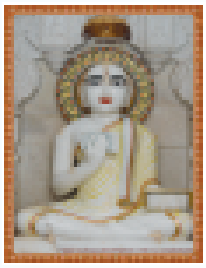

दादा गुरूदेव

पू. उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी
म.सा.

साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म.सा.

शुभाकांक्षी

श्वेताम्बर जैन श्री संघ- वेल्लूर

B.S.S. KOIL STREET,
Vellore- 632004 (Tamilnadu)

वैल्लूर में वीर जन्मोत्सव का आनंद

पू. गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. सा. पू. मुनि श्री समयप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. आदि ठाणा-3 एवं पू. महत्तरा श्री मनोहरश्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री तरूणप्रभा श्रीजी म. आदि ठाणा-4 एवं पू. धवलयशस्वी साध्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म. की शिष्या पू. साध्वी श्री मयूरप्रिया श्रीजी म. आदि ठाणा-3 की पावन निश्रा में परमात्मा महावीर जन्म कल्याणक चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, 2 अप्रेल 2015 को अत्यन्त श्रद्धा से सम्पन्न हुआ।

संभवनाथ जिन मंदिर से वरघोडे का प्रारंभ हुआ। वरघोडे में संघ का उत्साह नृत्य के द्वारा अभिव्यक्त हो रहा था। शहर के मुख्य मार्गों से होता हुआ जन्मोत्सव का जूलुस संघ उपाश्रय में पहुँचा जहाँ परमात्मा महावीर का गुणानुवाद सम्पन्न हुआ।

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. सा. ने अपने प्रभावशाली में जन-जन को परमात्मा महावीर को विश्व शांति का उज्जवल स्तंभ बताते हुए कहा-परमात्मा महावीर का जीवन सागरोपम-पल्योपम प्रमाण भले ही लम्बा न था परन्तु 72 वर्ष छोटी उम्र में भी उन्होंने जीवन को सार्थकता का जलता दीप और खिलता पुष्प बनाया।

परमात्मा महावीर के तीन सिद्धान्त हमारे जीवन का कर्म बनने चाहिये- आचार में अहिंसा, विचार में अनेकान्तवाद और व्यवहार में अपरिग्रह! उन्होंने एकता का संदेश सुनाते हुए कहा- हमने बट-बट कर खोया है पर अब एक हो जाये तो जैन धर्म विश्व का धर्म बन सकता है। तिनके तिनके इकट्ठे होकर झाडू बन जाते है जिनसे कचरा निकाला जाता है पर वही झाडू जब बिखर जाता है तब तिनके स्वयं कचरा बन जाते हैं।

पच्चीस सदियों के बाद में भी हम याद कर रहे हैं क्योंकि त्यागी-तप का जीवन जीया। वे राजा बनते तो 100 वर्ष याद किये जाते परन्तु संन्यासी बनकर 2500 वर्ष बाद भी पूरे विश्व में पूजे जा रहे हैं।

साध्वी श्री सुनित्रा श्रीजी म. ने अपने आप को वश

में करने का जीवन बताया। साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म. ने अपने उद्‌बोधन में कहा-परमात्मा महावीर महान है उसी प्रकार जैसे मंत्रों में महामंत्र एवं पर्वतों में सुमेरू पर्वत।

छोटे-छोटे बालक- बालिकाओं ने अपने व्यक्तव्य से लोगों के मन को मोह लिया। श्रीनवकार मित्र मण्डल ने सुन्दर गीतिका प्रस्तुत की।

पमात्मा महावीर के जीवन चरित्र पर परीक्षा ली गयी। शाम को प्रभु-भक्ति का सुन्दर कार्यक्रम हुआ। मुनिश्री के मीठे-मीठे भजनों से अद्‌भुत वातावरण बना। स्वामिवात्सल्य का लाभ श्री अशोककुमारजी जुगराजजीछत्रगोता परिवार ने लिया। दोपहर में परमात्मा महावीर स्वामी की पूजा पढ़ाई गई।

वेल्लूर में अविस्मरणीय माहौल

पू. गुरूदेव उपाध्याय प्रवर श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. के शिष्य पू. मुनिप्रवर श्री मनितप्रभसागरजी म.सा. पू. मुनिश्री समयप्रभसागरजी म. पू. मुनि श्री श्रेयांस प्रभसागरजी म. आदि ठाणा 3 एवं पू. चंपाकली साध्वी श्री विमलप्रभा श्रीजी म.सा. की शिष्या पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म. पू तत्त्वज्ञलताश्रीजी म. पू. संयमलताश्रीजी म. आदि ठाणा की निश्रा में नवपद की ओली का अनूठा माहौल बना हुआ है।

वेल्लूर संघ ने तेनम्पट्ट प्रतिष्ठा के अवसर पर मुनिवर्य से ओली में निश्रा प्रदान करने का भाव भीना निवेदन किया। तदुपरान्त संघ पूज्य गुरूदेव श्री की निश्रा में मदुराई पहुँचे और वहाँ से आज्ञा प्राप्त की।

नवपद की आराधना 27 मार्च से शुरू हुई। प्रतिदिन एक-एक पद पर सारगर्भित व्याख्या चल रही है। मुनिश्री की प्रभावशाली प्रवचन शैली एवं रसपूर्ण व्याख्या के कारण श्रोताओं ने अत्यन्त रूचि का भाव बना हुआ है। एक तरह से वातावरण चातुर्मास जैसा बन गया है। समय पर प्रवचन का प्रारंभ और पूर्णता होने से अनुशासन और समय का प्रबंधन सीखने को मिल रहा है।

लगभग 50 तपस्वी नवपद की ओली की तपाराधना कर रहे हैं जो अपने आपमें एक इतिहास है।

रविवार को प्रभु भक्ति का सुन्दर वातावरण बना। लगभग एक घटे तक मुनिवर्य अपने मधुर कण्ठ से प्रभु भक्ति की पावन गंगा बहाते रहे। उसमें भी लगभग 100 श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही।

दो प्रश्नोत्तर पत्र वितरित किये। प्रथम प्रश्न पत्र में तत्त्वज्ञान दिया गया। परीक्षा में प्रथम तीन स्थान में जूली, दीपक और पिंकी ने प्राप्त किये एवं 2 अप्रेल को परमात्मा जन्म कल्याणक पर महावीर प्रभु जन्म पर विशेष प्रश्नोत्तर पत्र वितरीत करके उस पर परीक्षा ली गयी। ने विजेताओं का संघ द्वारा बहुमान किया गया।

चेन्नई से पधारे मुमुक्षु जयाबेन सेठिया का संघ द्वारा अभिनंदन किया गया।

तत्त्व परिक्षा

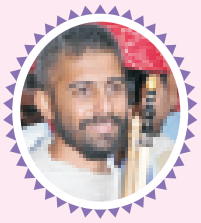

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

जहाज मंदिर पहेली 108

प्रस्तुत वर्गाकार बॉक्स में 21 महासतियों के नाम छिपे हुए हैं,

उन्हें खोजों तथा रिक्त स्थान में लिखों। उदाहरण के लिये दमयन्ती दिया गया है। शेष 20 में से 16 उत्तर सही होने जरूरी हैं।

रा	ल	य	म	अं	ज	ना	ण	भा	कौ	र	दा
द	जी	अ	क	घ	ट	प	म	कुं	श	न	द्रौ
री	सी	म	ठ	प्र	भा	व	ती	म्म	ल्या	का	प
द	ता	ख	ती	ब	नी	यं	व	मृ	वि	म्स	दी
सुं	ड	आ	चं	ठ	म	क्र	गा	ल्व	का	दा	या
णा	ऋ	फ	यी	द	धा	भ्र	मृ	ल्ल	भ्र	ग	सा
य	षि	रू	दा	इ	न	वा	ट्र	सु	क्ल	द	ग
म	द	न	रे	खा	शि	बा	ऊ	झ	ल	दें	र
ल	त्ता	ह्मी	व	था	क्ति	जी	ला	क्त	स	सा	न
ना	ब्रा	शा	फ	म	ल	या	सुं	द	री	ग	सुं
ल	स	त	ट्ट	ही	नु	आ	बा	प्र	भ	द	र
चे	भ्र	हु	प	द्मा	व	ती	श	ह	री	रि	ख

1. दमयन्ती

2. .....

3. .....

4. .....

5. .....

6. .....

7. .....

8. .....

9. .....

10. .....

11. .....

12. .....

13. .....

14. .....

15. .....

16. .....

17. .....

जहाज मन्दिर पहेली
झेरॉक्स करके ही भरें व
इस पत्ते पर भेजे

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म.सा.
द्वारा : सोहनलाल एम. लुणिया
तेजदीप स्टील, 74 भण्डारी स्ट्रीट, पहला कुंभारवाडा लेन,
मुम्बई-400004 (महा.) मो. : 98693 48764

- नियम -

1. इस जहाज मंदिर पहेली का उत्तर 20 मई तक पहुँचना जरुरी है ।
2. विजेताओं के नाम व सही हल जून में प्रकाशित किये जायेंगे ।
3. प्रथम विजेताओं को 200 रू. का और 100-100 रु. के छह प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किये जायेगें।
4. सातों विजेताओं का चयन लॉटरी पद्धति से किया जायेगा।
5. प्रेषक अपना नाम, पता साफ-साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।
6. उत्तर जहाज मंदिर में छपे फार्म में ही भरकर भेजे। फोटो स्टेट कॉपी स्वीकार नहीं की जायेगी।
7. प्रेषक पहेली का उत्तर जहाज मंदिर पत्रिका के कार्यालय पर भारतीय डाक से ही पोस्ट करें।
8. उत्तर स्वच्छ-सुंदर अक्षरों में लिखें।
9. एक प्रश्न के दो उत्तर लिखें जाने पर एक सही होने पर भी गलत ही माना जायेगा।

:- पुरस्कार प्रायोजक :-
शा. सुगनचंदजी
राजेशकुमारजी बरडिया
(छबड़ा)
ब्रह्मसर हाल चैन्नई

प्रेषक

नाम .....

पता .....

.....

पोस्ट ..... पिन [ ][ ][ ][ ][ ][ ] जिला .....

राज्य ..... फोन नम्बर [ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ][ ]

जहाज मंदिर पहेली - 106 का सही उत्तर

1. उपवन	2. उपचार	3. उपाय	4. उपहास
5. उपहार	6. उपाश्रय/उपासरा	7. उपयोग/उपांग	8. उपभोगान्तराय
9. उपकरण	10. उपनेत्र/उपनयन	11. उपरत	12. उपकार
13. उपधान	14. उपदेश	15. उपमा/उपाधि	16. उपमिति भव प्रपंचा
17. उपघात	18. उपभेद	19. उपन्यास	20. उपजाति
21. उपकेशगच्छ	22. उपधि	23. उपाधि	24. उपनाम
25. उपमान	26. उपाध्यक्ष	27. उपसर्ग	28. उपद्रव
29. उपवास	30. उपरियाला	31. उपसर्ग	

पुरस्कार विजेता

प्रथम पुरस्कार- कुमारी शिल्पा मुणोत-जयपुर

छह प्रेरणा पुरस्कार-त्रिशला बेंगानी-भाईंदर, सीमा जैन-जयपुर, नेहा बाफना-नंदुरबार, नमिता जैन-उदयपुर, जसराज कोचर-अक्कलकुवा, निहालचंद जैन-तिरूपात्तुर

इनके उत्तर पत्र त्रुटि रहित थे- साध्वी विशालप्रभाश्रीजी-पालीताणा, साध्वी दिव्यदर्शनाश्रीजी-जयपुर, ममता बाफना-नंदुरबार, मनोहरी देवी बाफना-नंदुरबार, किरण बैद मुथा-रायपुर, मेघा कोचर-अक्कलकुवा, सुशील जैन-अक्कलकुवा अनिल रामपुरिया, संगीता रामपुरिया-मालपुरा, चेतना बच्छावत-अजमेर, निर्मल धारीवाल-कोट्टुर, सुचित्रा भंसाली-नोएडा, डोलीबेन बाफना-कोट्टुर, राज भण्डारी-बूंदी, नीता भण्डारी-भोपाल, नीरज जैन-उदयपुर, मनोहरलाल झाबख-कोटा, शुभी गोलछा-सरला गोलछा-रिद्धि गोलछा- लालबर्रा, सीमा छाजेड-उज्जैन, भीमसिंह छाजेड-बूंदी, हर्षिता राखेचा-त्रिची, निर्मला जैन-उदयपुर, दिनेश कोचर- अक्कलकुवा, भंवरलाल गुलेच्छा-अक्कलकुवा, प्रियंका संकलेचा- अक्कलकुवा, अंजना सोलंकी-तिरूपुर, एकता गुलेच्छा-तिरूपात्तुर, कुशल संकलेचा-अक्कलकुवा, भंवरलाल संकलेचा-अक्कलकुवा, भरत संकलेचा-रायपुर, शंकुतला कांकरिया-हैदराबाद, अमन भंडारी-ब्यावर, विनीता बच्छावत-फलोदी, सविता जैन-मुम्बई, शोभा कोटडिया-त्रिची, सुशीला भण्डारी-कोटा, मांगीलाल बोहरा-तलोदा, उम्मेदराज धारीवाल-कोट्टूर, कल्पना रामपुरिया-मालपुरा, अजित रामपुरिया-मालपुरा, कविता झाबक-बडौदा, संगीता गोलछा-कोण्डागॉव, संगीता बुरड-ब्यावर, रमेश बच्छावत-फलोदी, मधु जैन-ऊटी, जयपुर से-दीपांजलि संकलेचा, पिस्ता गोलछा, चंद्रकान्ता खवाड, डा. सुनीता जैन, स्वरूपचंद जैन, नेहा जैन, प्रमिला मेहता, स्नेहलता चौरडिया, चंद्रप्रकाश सिंघी, वीणा जैन, पुष्पलता नाहटा, मनीला पारख, अनिल रामपुरिया, निर्मला सिसोदिया

जटाशंकर

उपाध्याय
श्री मणिप्रभसागरजी म.सा.

जटाशंकर चतुर आदमी था। बोली ऐसी थी कि भले से भले आदमी को अपने जाल में फँसा देता था। वह दो प्रकार के बादाम लेकर व्यापार कर रहा था। एक खुली चौकी पर कपड़ा बिछा कर उसमें बादाम के दो ढेर लगाकर लोगों को खरीदने के लिये आह्वान कर रहा था।

घटाशंकर का वहाँ आना हुआ। पूछा- बादाम के भाव क्या!

जटाशंकर ने गहरी नज़रों से उसे देखा और कहा- मेरे पास दो क्वालिटी के बादाम हैं। यह बी ग्रेड का बादाम है, इसका भाव एक हजार रूपये किलो है। दूसरा ए ग्रेड का है, इसका भाव 20 हजार रूपये किलो है।

बीस हजार रूपये! सुना तो घटाशंकर हक्का-बक्का रह गया।

कहा उसने- ऐसी क्या विशेषता है इसमें!

जटाशंकर बोला- 20 हजार रूपये वाला बादाम खाते ही दिमाग कम्प्यूटर से भी तेज दौड़ता है। लो! देखो- 10 बादाम बी ग्रेड के खाओ! फिर मैं सवाल करता हूँ, जवाब देना।

यों कहकर उसके हाथ में 10 बादाम पकड़ा दिये।

बादाम खाने के बाद घटाशंकर बोला- पूछो, क्या सवाल है?

जटाशंकर ने पूछा- बताओ, एक किलो चावल में चावल के दाने कितने!

घटाशंकर माथा खुजाने लगा। चावल तो कभी गिने ही नहीं। गिनना मुमकिन भी नहीं।

जटाशंकर ने कहा- लो अब ए ग्रेड के 10 बादाम खाओ, फिर मैं सवाल पूछता हूँ।

10 बादाम खाने के बाद पूछा- बताओ, पांच दर्जन केले में केले कितने!

घटाशंकर तुरंत बोला- 60!

जटाशंकर ने कहा- देखा! ए ग्रेड बादाम का कमाल! खाते ही दिमाग कैसे तेज चलने लगा, तुरंत उत्तर बता दिया। जबकि बी ग्रेड खाने के बाद जो सवाल पूछा, उसका तुम उत्तर ही नहीं दे पाये।

घटाशंकर को सचमुच लगा कि ए ग्रेड का बादाम खाते ही मेरा दिमाग क्या तेज हुआ है! उसने कहा- भैया! ए ग्रेड के बादाम जल्दी से एक किलो पैक कर दो।

घटाशंकर नहीं यह समझ पाया कि यह कमाल बादाम का नहीं, प्रश्न का ही था। चावल कौन गिन पायेगा! और केले गिनने में क्या समस्या है!

ऐसे ही यह संसार भी जटाशंकर की भांति है, जो हमें छलता है... जो यथार्थ नहीं दिखाता। हम वैसा नहीं समझ पाते, जैसा होता है; बल्कि हम वैसा समझते हैं, जैसा हमें समझाया जाता है... और इस कारण हम घटाशंकर की भांति मूर्ख बन जाते हैं।

जो व्यक्ति संसार के स्वरूप को सम्यक् रूप से जान लेता है, वह जीवन में कभी छला नहीं जाता। वह अपने को अर्थात् अपनी आत्मा को सुरक्षित कर लेता है।

तेनम्पट्ट प्रतिष्ठा महोत्सव की झलकियाँ

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal registration No. RJ/SRO/9625/2015-2017 Date of Posting 7th

श्री तेनम्पट्ट नगरे पार्श्व कुशल तीर्थ धाम मध्ये

2000 वर्ष प्राचीन श्री पार्श्वनाथ परमात्मा, दादा श्री जिनकुशलसूरि

एवं पद्मावती देवी की
भव्य-भावना से परिपूर्ण

अंजनशलाका प्रतिष्ठा की
हार्दिक शुभकामना

गौतमस्वामी

परमात्मा पार्श्वनाथ

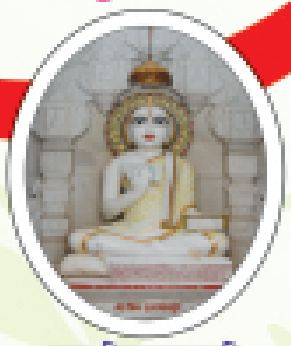
दादा जिनकुशलसूरि

सुखसागरजी

आ. श्री जिन कान्तिसागरसूरिजी म.सा.

मुनि मनितप्रभ सागरजी

उपा. मणिप्रभसागरजी म.

साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी

आयोजक- निवेदक-संयोजक

श्री पार्श्व कुशल तीर्थ धाम ट्रस्ट

तेनम्पट्ट (जिला-वेल्लूर) तमिलनाडु

सम्पर्क- 094874 52733, 098400 52494, 094430 06831

निवेदन : तमिलनाडु प्रदेश के 2000 वर्ष प्राचीन परमात्मा के दर्शन करने पधारें।

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, बालोतरा - 344042, जिला - बाड़मेर (राजस्थान)
फोन : 02979-256187 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09660460451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com
www.jahajmandir.org

प्रकाशन : सर्वेन्द्र कोहरा, जोधपुर-98290 22428